कर्मवीर

रेल इंजन कारखाना, जमालपुर

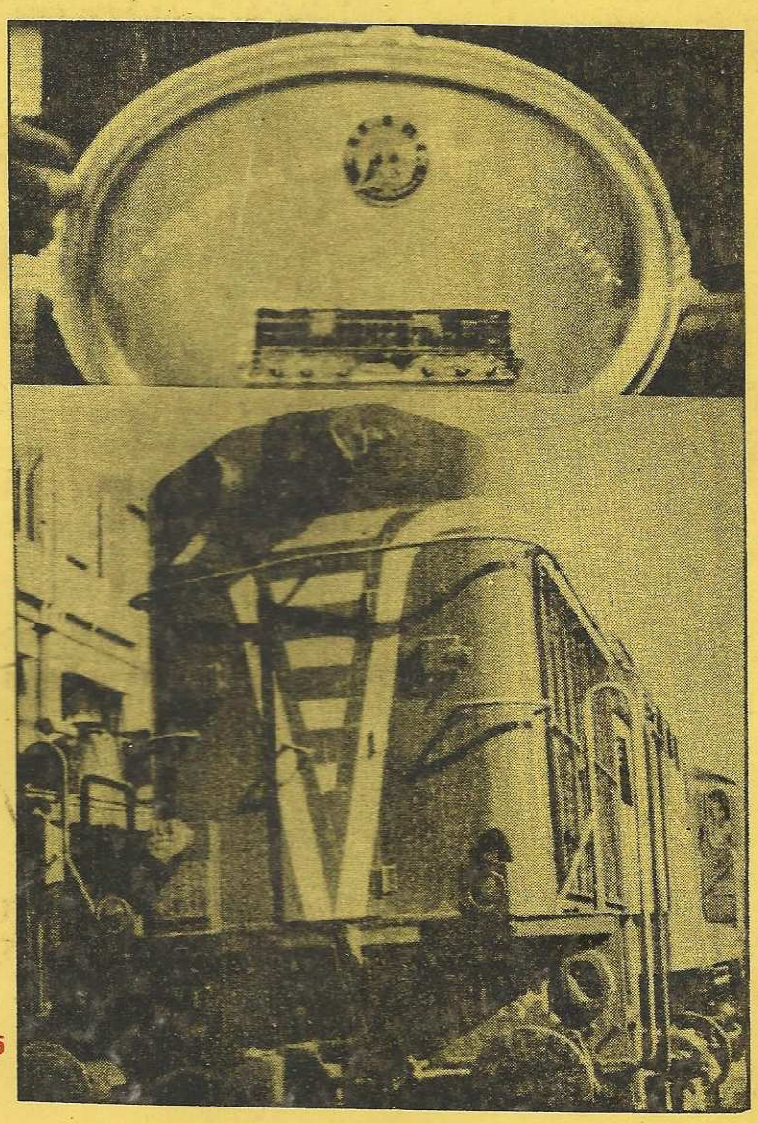

कारखाना की
134 वीं वर्षगांठ
8 फरवरी, 1996
के उपलक्ष्य पर

कारखाना
स्थापना दिवस
अंक

वर्ष : 8

अंक : 14

हिन्दी ने सन्तरी को आई. ए. एस. बनाया

मध्यप्रदेश के एक कलक्टर के सन्तरी गार्ड, जो पाँच-छह वर्षों से अस्थायी नौकरी करने वाला है और 26 वर्षीय है, श्री रामायण साहु ने आई ए एस. परीक्षा हिन्दी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली। उसने इतिहास और समाजशास्त्र विषय को वैकल्पिक विषय के रूप में लेकर परीक्षा उत्तीर्ण की है। वह निरक्षर किसान माता-पिता का लड़का है। इस प्रकार हिन्दी माध्यम से समाज के पिछड़े वर्गों की सन्तानें भी उच्चाधिकारी बन रहे हैं।

[दैनिक राष्ट्रीय सहारा, 4 जुलाई, 94]

जरा सोचिए

हिन्दी के प्रबल समर्थक और विद्वान श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की एक लघुकथा के अनुसार— एक साहुकार की बैठक में उसकी मित्र मण्डली बैठी थी। साहुकार ने अन्दर से नौकर को आवाज देकर बुलाया और कहा कि, "वह बत्ती बुझा दे। नौकर बाहर आकर बड़े जोर से हँसने लगा। साथियों के पूछने पर उसने कहा कि, अन्दर कई मसटण्डे बैठे थे जो इतने अपाहिज थे कि बत्ती बुझाने के साधारण से काम के लिए मुझे बुलाया।

जरा सोचिए ! स्वयं हिन्दी जानते हुए भी साधारण से हिन्दी पत्रों को भी अनुवाद के लिए हिन्दी अधिकारी के पास भेजना अथवा साधारण से हिन्दी पत्रों के प्रारूप माँगना क्या उपरोक्त जैसा ही नहीं है ?

—प्रस्तुति
जगन्नाथ
संयोजक, राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
एक्स. वाई. 68, सरोजिनी नगर
नई दिल्ली-110023

महाप्रबन्धक
Ganeral Manager

पूर्व रेलवे
Eastern Railway
17, नेताजी सुभाष रोड
17, Netaji Subhas Road
कलकत्ता
Calcutta | 700001

दिनांक 9.1.1996

शुभकामना संदेश

यह जानकर मुझे बड़ी खुशी है कि जमालपुर कारखाने की हिन्दी पत्रिका 'कर्मवीर' के अगले अंक का प्रकाशन शीघ्र ही सम्पन्न होने जा रहा है। पत्रिका-प्रकाशन रेल अधिकारियों-कर्मचारियों की लेखन-प्रतिभा के विकास का उत्तम साधन है। साथ ही इससे राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है। आशा है अधिक से अधिक अधिकारी-कर्मचारी इस पत्रिका-प्रकाशन का लाभ उठायेंगे और इससे राजभाषा प्रयोग-प्रसार को काफी बल मिलेगा।

पत्रिका की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

ए. पी. मुरुगेशन
महाप्रबन्धक

डॉ0 महेश चंद्र गुप्त,
निदेशक, राजभाषा

भारत संरकार
रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF RAILWAYS
(RAILWAY BORD)

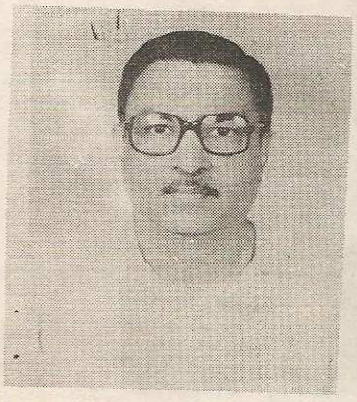

सं0 हिंदी- 95/रे0 रा0 भा0/2

नई दिल्ली, दिनांक : 10-1-96

शुभकामना संदेश

"कर्मवीर पत्रिका" रेलों से प्रकाशित अनेक पत्रिकाओं में एक अनूठी पत्रिका है, इसके विभिन्न अंकों में इतनी उपयोगी सूचनाएं, लेख आदि होते हैं कि प्रत्येक अंक को भावी संदर्भ के लिए संभालकर रखना आवश्यक प्रतीत होता है।

सामग्री बहुविध और प्रयोजन मूलक होती है। 13वाँ अंक इसका पक्का प्रमाण है।

चौदहवाँ अंक भी इसी तरह बहुप्रयोजनीय होगा, ऐसा पूरा विश्वास है। चौदहवाँ अंक भी पत्रिका के प्रकाशन के उद्देश्य में और हिंदी के प्रति लगाव में सफल हो, यह कामना है।

(महेश चंद्र गुप्त)

मुख्य राजभाषा अधिकारी
Mukhya Rajbhasa Adhikari

पूर्व रेलवे
Eastern Railway
17 नेताजी सुभाष रोड
17 Netaji Subhas Road
कलकत्ता
Calcutta | 700001

शुभकामना-संदेश

जमालपुर कारखाना के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'कर्मवीर' के प्रकाशन के अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएँ। यह पत्रिका जमालपुर कारखाने के अधिकारियों के समर्पित प्रयास तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार के प्रति लगन का प्रतीक है। मेरा विश्वास है कि पत्रिका के माध्यम से रेल परिवार के सदस्यों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति का पूरा अवसर प्राप्त होगा तथा इसका उच्च स्तर स्वयं में एक कीर्तिमान होगा। मुझे आशा है कि जमालपुर कारखाने के अधिकारी और कर्मचारी भविष्य में भी राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में इसी प्रकार प्रयत्नशील रहेंगे।

पत्रिका की सफलता के लिए एक बार पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(रंजन तिवारी)
मुख्य रांजभाषा अधिकारी
एवं
वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी
(वित्त एवं बजट)

अरुण कुमार तिवारी
मुख्य कारखाना प्रबंधक
ARUN K. TIWARI
Chief Works Manager

पूर्व रेलवे
रेल इंजन कारखाना
जमालपुर- 811214
Eastern Railway
Locomotive Works
Jamalpur-811214

शुभकामना संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि राजभाषा विभाग, रेल इंजन कारखाना, पूर्व रेलवे, जमालपुर, कारखाना की 134 वीं वर्षगांठ 8 फरवरी, 1996 के अवसर पर हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका "कर्मवीर" अंक-14 का प्रकाशन कर रहा है।

राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में ही नहीं, बल्कि कर्मचारियों के बीच हिन्दी में काम करने की भावना पैदा करने में भी इस पत्रिका ने अहम् भूमिका निभाई है। आशा है इस अंक के लेखों एवं अन्य प्रकाशित सामग्रियों से रेल कर्मचारी अधिक से अधिक लाभ उठा सकेंगे।

पत्रिका के सम्पादक मंडल एवं इससे जुड़े रचनाकारों को मेरा धन्यवाद।

(अरुण कुमार तिवारी)

राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध
हिन्दी-पत्रिका – "कर्मवीर" अर्द्ध वार्षिक

वर्ष - 8 ; अंक - 14. दिनांक - 8 फरवरी 1996 कारखाना स्थापना दिवस अंक

संरक्षक

• अरूण कुमार तिवारी
मुख्य कारखाना प्रबंधक
पू॰ रे॰ जमालपुर

संचालन समिति

• परमानन्द सिंह
उप-मुख्य राजभाषा अधिकारी
उप-मुख्य यांत्रिक अभियंता
(म॰ एवं सं)

• योगेश कुमार श्रीवास्तव
उप-मुख्य लेखा अधिकारी
पू॰ रे॰ जमालपुर

• हिरेन्द्र नाथ चटर्जी
सहायक कल्याण अधिकारी
पू॰ रे॰ जमालपुर

पता :
राजभाषा विभाग
रेल इंजन कारखाना, पूर्व रेलवे
जमालपुर, मुंगेर, बिहार - 811214

प्रधान सम्पादक :

• अनिमेष कुमार सिन्हा
कारखाना प्रबंधक (डीजल)
पू॰ रे॰ जमालपुर

सम्पादक :

• देवनारायण साह
राजभाषा अधिकारी

सह-सम्पादक

• मृत्युंजय कुमार झा, रा॰ सहा॰
• उपेन्द्र सिंह, रा॰ सहा॰
• राज किशोर मंडल, रा॰ सहा॰
• पृथ्वीराज मंडल, रा॰ सहा॰
• भोला प्रसाद भगत, कार्या॰ अधी॰

छायाचित्र सहयोग

• निमाई सिन्हा, रेखाचित्र कार्यालय

रेखाचित्र सहयोग

• नरेश पासवान, रेखाचित्र कार्यालय

निःशुल्क वितरण

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं
रेल प्रशासन या सम्पादक मंडल इनके लिए जिम्मेवार नहीं हैं।

'अपनी बात'

प्रिय पाठकगण !

भारतीय रेल परिवार विश्व के अनेक छोटे-मोटे देशों से भी बड़ा है। सोलह लाख कर्मचारी एवं उनके परिवारजनों को भी गिने तो यह संख्या आधा करोड़ से ज्यादा ही होगी, कम नहीं। 140 सालों से भी ज्यादा वर्षों से यह परिवार राष्ट्र की सेवा में रात-दिन लगा हुआ है, इसी गौरवमयी परम्परा से जुड़ी हुई है आपकी यह "कर्मवीर" पत्रिका। कर्मवीर ने अत्यल्प समय में जो प्रतिष्ठा अर्जित की है उसे और आगे बढ़ाने एवं इस महती परम्परा को कायम रखने का गुरुतर दायित्व जब अचानक व मुश्किल महीना भर पहले सौंपा गया तो मुश्किल से मुश्किल कार्य भी बतौर चुनौतीकर दिखाने की जमालपुर कारखाना की सनातन परम्परा ही एक मात्र संबल था। आशा है, सबों के रचनात्मक सहयोग से निकली इस पत्रिका का यह अंक अपनी अपेक्षाओं पर खरी उतरेगी।

पत्रिका को रुचिकर बनाने के लिए इसका कलेवर काफी हद तक बदला गया है। तकरीबन हर क्षेत्र से किसी न किसी रचना का समावेश किया गया है। महिला रचनाकारों की बढ़ती हुई संख्या काफी सुखद संकेत देती है, समाज में उनकी बराबरी की भागीदारी सुनिश्चित करने में। एक वर्ग पहेली का भी समावेश पहली बार किया है। हमारी कोशिश यही रही कि रेल-कर्मियों एवं उनके परिवार जमालपुर के लिए यह सम्पूर्ण पत्रिका बन सके। अधिकांशतः रेलकर्मियों एवं उनके परिवार-जनों द्वारा लिखित रचनाएं हमारी अंदर छुपी हुई लेखनं प्रतिभा का ही तो द्योतक है।

यों तो समाज में कुछ न कुछ होता ही रहता है, पर आधुनिक समाज की भागम-भाग से कुछ लम्हों के लिए अलग रहकर हर कोई खुद के अन्दर झांकना चाहता है-पहचानना चाहता है : कोई एक चेहरा जो उस जैसा हो उसे ही देखना चाहता है। साहित्य- रूपी आइना की जरूरत तभी तो पड़ती है। छोटे-छोटे आइने हैं हमारे परिवेश का प्रतिबिम्ब दिखाने को। कुछ अच्छा लगता है, कुछ बुरा, पर जो सामने आता है वह सच नहीं तो और क्या है ? यह बात अलग है कि सत्य निरपेक्ष नहीं होता है। इसीलिए सब का सच कहने की कोशिश भी नहीं की गई है, नाही ऐसा दावा किया गया है। अपना-अपना सच है उनमें से कुछ शायद आपका भी हो।

ज्ञान पिपासा मिटाने का ज्ञान का सागर देने का तो हम दावा नहीं करते हैं, पर कुछ ज्ञान सरिताएं देने की कोशिश जरूर की है हमने। कहाँ तक आपकी प्यास बुझाती है, अवगत कराइयेगा।

मूल हिंदी में साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखी गई रचना आपको बरबस यह कहने को मजबूर कर दे "इतनी अच्छी ! ...हमारी हिन्दी !! तो लगेगा हमारा यह प्रयास सफल हुआ। और भाषा से सापेक्षिक मूल्यांकन की जरूरत नहीं है (हिन्दी इतनी समृद्ध है) किसी शिशु को कोई कब कहता है कि मैं माँ हूँ या पिता हूँ या आसमान में चाँद है, तारे हैं। वह तो खुद व खुद माँ कह चिपकता है, पिता कह गोद में चढ़ जाता है, चाँद को मामा बना लेता है और तारे कहकर किलकारियां मारता है। अपने आस-पास इन्हीं शब्दों को बार-बार सुनते-सुनते शिशु का यह कहना स्वाभाविक ही तो है।

आशा है, हममें से हर कोई अपने से कनीय साथियों और कनीय भ्राताओं और बहनों के लिए ऐसा ही करेगा।

हमारे संपादक एवं राजभाषा अधिकारी श्री देवनारायण साह काफी अर्सों से अस्वस्थ हैं और कैंसर शोध-संस्थान, वाराणसी में चिकित्सा करा रहे हैं, "कर्मवीर" परिवार एवं आप सुधी पाठकों की ओर से उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं। बातें खत्म तो हुई नहीं, पर अपनी बात यहीं पर छोड़ रहा हूँ। यूँ भी वह दिन कभी नहीं आना चाहिए जब कोई यह कह दे "आज तो चूक ही गई बात" क्योंकि कहने को तो, बहुत कुछ है।

अगले अंक में भी जारी रहेगी बात।

प्रधान सम्पादक

अगले पन्नों में

1	**जमालपुर का स्वर्णिम अतीत और वर्तमान**	8 – 10

- जमालपुर सवा सौ साल पहले
- गुणवत्ता शील्ड
- अखबारों से

2	**अध्यात्म एवं विधि**	11 – 16

- सच्ची प्रार्थना (महात्मा गांधी)
- उपनिषद् -अथाह सागर ज्ञान का
- हिन्दू विधि के स्रोत

3	**उपलब्धियाँ**	17 – 19

- राजभाषा विभाग
- पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन, जमालपुर

4	**कुछ तकनीकी बातें**	20 – 36

- डीजल मल्टिपुल यूनिट
- क्या है कम्प्यूटर
- माइक्रो प्रोसेसर नियंत्रित ध्वनि सूचना प्रणाली
- राष्ट्रीय हित में लोको का अनुरक्षण - संगोष्ठी

5	**व्यष्टि और समष्टि**	37 – 39

- जमालपुर में स्कॉउट रैली - 1996
- जन- चेतना

6	**हास्य / व्यंग्य**	40 – 41

- मूरखानन्द की चिट्ठी

7	**कहानियाँ**	42 – 48

- भूख
- कील
- बल्गा

8	**कविताएँ**	49 – 56

- चार कविताएँ
- कारखाना
- युग की मांग
- रेल
- तख्तियाँ
- आदिरूप
- शून्य
- बीती रातें
- प्यारी हिंदी
- भूखा बच्चा
- बुझा दीप का धुआँ
- शहीद
- लोग
- एक अच्छी कविता
- एक प्रश्न
- दोहा
- गजल

9	**विविध**	57 – 64

- आँकड़ों के चश्में में जमालपुर
- वर्ग पहेली

AROUND THE WORLD IN EIGHTY DAYS

by

JULES VERNE

जमालपुर : सवा सौ साल पहले

बनारस, बिहार के राजाओं का प्राचीन लौह दुर्ग, या अपने गुलाबजल कारखानों के लिए प्रसिद्ध - गाजीपुर

या लॉर्ड कार्नवालिस का मकबरा, गंगा के पूर्वी किनारे पर गगन-चूमता हुआ, किलाबन्द शहर बक्सर तथा पटना एक विशाल उत्पाद एवं व्यापार केंद्र जहाँ भारत का प्रमुख अफीम बाजार है या

मुंगेर- किसी भी यूरोपीयन शहर से ज्यादा यूरोपीयन, क्योंकि यह मैनचेस्टर या बरमिंघम जितना ब्रिटिश लगता है, जिसका कारण है– इसकी लौह ढलाई घर, टूल कारखाने और गगनचुम्बी चिमनियों से निकलते हुए आसमान की तरफ ऊँचा उठता हुआ काले धुओं का बादल।

रात्रि होने पर ट्रेन पूरी गति से बाघों, भालुओं और भेड़ियों के दहाड़ों के बीच से निकलती रही, अलबत्ता ये दहाड़ने वाले जंगली जानवर इंजन की दहाड़ से भाग गये–

सात बजे सुबह में ट्रेन कलकत्ता पहुँची और दोपहर में पैकेट ने हांगकांग के लिए प्रस्थान किया और इस प्रकार फिलियस फॉग को पाँच घंटे का समय मिल गया।

उनके ग्रंथ के अनुसार उसे कलकत्ता पच्चीस अक्टूबर को पहुँचना था और वह पक्का उसी दिन पहुँ ..। न एक दिन आगे न एक दिन पीछे। लंदन और बम्बई के बीच में बचाये गये दो दिन इस प्रकार भारत भ्रमण में खो गये। लेकिन यह नहीं समझना चाहिए कि फिलियस फॉग को इसका दुःख था।

इतिश्री अध्याय-14

प्रसिद्ध लेखक, जूले बर्न की पुस्तक-एराउण्ड दि वर्ल्ड इन एटी डेज से साभार उद्धृत। विश्व भ्रमण के क्रम में क्रमशः भारत यात्रा, बिहार एवं मुंगेर का वृत्तान्त यहाँ दिया गया है। कलकत्ता के रास्ते में पड़ने वाला मुंगेर वस्तुतः जमालपुर शहर है।

□ सुशान्त कुमार घोष

गुणवत्ता शील्ड

12 जनवरी, 1996 को अनुसंधान के लिए भारतीय रेल की शीर्षस्थ संस्था, अनुसंधान, अभिकल्प एवं मानक संगठन, लखनऊ में यांत्रिक विभाग के भारतीय रेल के सर्वोच्च पदाधिकारी, सदस्य (यांत्रिक) द्वारा जमालपुर रेल कारखाना को गुणवत्ता शील्ड दिये जाने के साथ ही इस कारखाने के स्वर्णिम इतिहास में एक सुनहरा पन्ना और जुड़ गया। आर. डी. एस. ओ. के माध्यम से रेलवे बोर्ड (रेल मंत्रालय) द्वारा कराए गए गुणवत्ता अंकेक्षण, सर्वेक्षण में इस कारखाना का डीजल पी. ओ. एच. शॉप पूरे भारतीय रेल के तमाम ऐसे कारखानों में द्वितीय रहा।

अखिल भारतीय स्तर पर यह स्थान प्राप्त करना एक अनूठी उपलब्धि है जिसका गौरव हमें पहली बार मिला। अगर हम इस बात पर गौर करें कि डीजल इंजन के पी. ओ. एच. के लिए सबसे बाद में जिन डीजल पी.ओ.एच. शॉप की स्थापना की गई, जमालपुर (डीजल पी. ओ. एच. शॉप) उनमें से एक है। सबसे बाद में दौड़ में शामिल होकर भी सबसे आगे निकल जाना एक अनूठी उपलब्धि नहीं तो और क्या है ?

प्रथम स्थान पर रहे गोल्डेन रॉक शॉप, त्रिचनापल्ली में डीजल विद्युत इंजन मरम्मत का कार्य जहाँ 6वें दशक में शुरू हुई वहाँ जमालपुर में इसकी शुरुआत 8वें दशक में हुई। अन्य कारखाने यथा परेल, खड़गपुर, लखनऊ इत्यादि में डीजल इंजन मरम्मत का कार्य जमालपुर से 10–15 साल पहले शुरू हो चुका था। 1983 में डीजल विद्युत इंजन के मरम्मत का बागडोर सम्भालने के बाद मात्र 13 सालों में अपने से पूर्व स्थापित कारखानों से आगे निकलकर अखिल भारतीय स्तर पर यह स्थान प्राप्त करना जमालपुर कारखाना के 'कर्मवीरों' की कर्मवीरता का द्योतक है।

उक्त समारोह में रेलवे बोर्ड के सदस्य (यांत्रिक) श्री मसीहुज्माँ ने पूर्व रेलवे को यह गुणवत्ता शील्ड प्रदान किया। इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर पूर्व रेलवे की ओर से श्री ए. एस. माथुर (मुख्य यांत्रिक इंजीनियर), श्री जी.एन.अस्थाना (मुख्य चलशक्ति इंजीनियर डी) एवं श्री ए. के. मंडल, उपमुख्य यांत्रिक इंजीनियर (डीजल) उपस्थित थे। इतनी कम समय में गुणवत्ता का इतना उच्च स्तर प्राप्त कर लेने से काफी लोगों को आश्चर्य हुआ। जमालपुर के कर्मवीरों के लिए तो यह एक पड़ाव मात्र है, खुद को पहचान कर और आगे बढ़ने की।

यह शील्ड दिये जाने के पहले आर. डी. एस. ओ., लखनऊ की क्वालिटी ऑडिट टीम ने कई बार जमालपुर डीजल पी. ओ. एच. शॉप का निरीक्षण किया। इस टीम का नेतृत्व श्री ज्योति कुमार, संयुक्त निदेशक कर रहे थे। प्रारम्भिक अंकेक्षण रिपोर्ट में जो खामियाँ मिली, उन्हें तुरन्त दूर किया गया। अन्तिम निरीक्षण के लिए आर. डी. एस. ओ. के अलावा रेलवे बोर्ड (रेल मंत्रालय) के प्रतिनिधि के तौर पर श्री अजय कुमार, संयुक्त निदेशक, रेलवे बोर्ड ने अंकेक्षण रिपोर्ट के अनुपालन का अवलोकिया।

भारतीय रेल के तमाम रॉलिंग स्टॉक तथा रेल इंजन की विश्वसनीयता बढ़ाने हेतु सर्वोच्च गुणात्मक स्तर से कार्यपालन जरूरी है। गुणवत्ता को बढ़ाने से रेल इंजनों की विश्वसनीयता बढ़ेगी। इसी बात को ध्यान में रखते हुए रेलवे बोर्ड (रेल मंत्रालय) ने यह निर्णय लिया कि गुणात्मक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की आवश्यकता है एवं गुणवत्ता की सापेक्षिक मूल्यांकन से विभिन्न डीजल पी.ओ.एच. शॉपों में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा भावना के साथ गुणकारी कार्यों में महत्त्वपूर्ण प्रगति होगी। इस हेतु आर डी. एस. ओ. लखनऊ के माध्यम से ऐसा क्वालिटी ऑडिट के कार्यक्रम की शुरुआत की गई और 'कर्मवीरों' की इस कर्मभूमि में अपना अनूठा छाप छोड़ दिया सबों को आश्चर्यचकित करने के लिए, पर खुद और और आगे बढ़ने के लिए ··· ··· ··· !!!

अखबारों से

मानव सेवा के संकल्प के साथ पू रे. स्काउट एवं गाइड रैली सम्पन्न

(निज संवाददाता)

मुंगेर 14 जनवरी। पूर्व रेलवे भारत स्काउट्स की तैंतीसवीं तीन दिवसीय स्टेट रैली तेरह जनवरी को जिले के जे. एस ए. ग्राउण्ड (जमालपुर) में निःस्वार्थ मानव सेवा के संकल्प और राष्ट्र के अनुशासित नागरिक बनने की शपथ के साथ भव्य सांस्कृतिक समारोह के बीच समाप्त हो गई।

पूर्व रेलवे के महाप्रबन्धक (कलकत्ता) ए. पी. मुरुगेशन, जो पूर्व रेलवे भारत स्काउट्स और गाइड्स के संरक्षक भी हैं, ने 13 जनवरी को समापन समारोह में रैली और कैम्पूरी में मौजूद थे।

समापन समारोह में स्काउट और गाइडों विभिन्न राज्यों तथा बिहार, पंजाब और बंगाल की मनोरम सांस्कृतिक झांकियाँ प्रस्तुत की।

विगत 11 जनवरी को रैली एवं कैम्पूरी का उद्घाटन जमालपुर रेल कारखाना के मुख्य कार्य प्रबंधक अरुण कुमार तिवारी ने शांति दूत 'कबूतर' को उड़ाकर किया। रैली के प्रतीक के रूप में 33 बैलून भी आकाश में सड़ाये गये।

रैली के दूसरे दिन राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर शांति यात्रा का आयोजन जमालपुर शहर में स्काउट और गाइड द्वारा किया गया। शांति यात्रा का नेतृत्व रैली मार्शल वी. पी. मुरुगेशन ने की।

.....

जमालपुर रेल कारखाने में परिवर्तन का दौर जारी

(कार्यालय प्रतिनिधि)

पटना 13 अगस्त। राज्य के मुंगेर जिले में पहाड़ों और जंगलों से घिरा एक छोटा-सा शहर है जमालपुर। यहाँ पूर्व रेलवे लोको इंजीनियरिंग एवं

इंजीनियरिंग कारखाना स्थापित है। यह इधर के दिनों में कई उल्लेखनीय उपलब्धियाँ भी हासिल हुई हैं।

जमालपुर रेल कारखाने में फिलवक्त बॉक्स बैगन का पुनर्निर्माण और पी.ओ.एच का काम होता है। प्रति माह यहाँ औसतन 50 बॉक्स वैगन का भी योगदान है। प्रतिवर्ष यहाँ 8 टावर कार बनाये जाते हैं और रेल विद्युतीकरण संस्था को दिये जाते हैं। लगभग 60 लाख की लागत से बने इस उपकरण को विद्युतीकृत मार्गों पर रखरखाव एवं नये रेलमार्गों के विद्युतीकरण में व्यवहार किया जाता है। इस वर्ष से टावर कार के निर्माण लक्ष्य को क्षमता वाले क्रेन का निर्माण.....

.....

('आज' से साभार)

डीजल इंजिन कारखाना के लिए 9.7 करोड़

मुंगेर 14 जनवरी (नि. सं.)। पूर्व रेलवे के महाप्रबन्धक ए. पी. मुरुवेशन ने 13 जनवरी को जे.एस.ए. मैदान में पत्रकारों के साथ एक भेंट में घोषणा की कि रेलवे बोर्ड ने जमालपुर स्थित डीजल रेल इंजिन कारखाना के आधुनिकीकरण के लिए 9.7 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस राशि से डीजल शेड को विकसित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पूर्व रेलवे के डीजल इंजिनों का पीरियोडिक-ओवरहालिंग कार्य पूरी तरह जमालपुर कारखाना में ही होगा। उन्होंने बताया कि डीजल इंजिन के पीरियोडिक ओवरहालिंग से रेलवे को 3.3 करोड़ का लाभ होगा। साथ ही ट्रैक्सन जेनरेटर की रिबाईण्डिंग का कार्य शीघ्र ही जमालपुर में शुरू हो जाएगा। वर्त्तमान में यह कार्य पटियाला रेलवे वर्कशॉप में किया जा रहा है।

जमालपुर रेल कारखाना में निर्मित होनेवाले 140 टन क्षमता वाले क्रेन की चर्चा करते हुए महाप्रबन्धक श्री मुरुगेशन ने कहा कि यह कारखाना निजी क्षेत्र की शीघ्र ही चार 140 टन क्षमता वाले क्रेन की आपूर्त्ति करेगा और इससे रेलवे को 34 करोड़ का लाभ होगा।

सच्ची प्रर्थना

□ महात्मा गाँधी

मनुष्य का निश्चित हेतु यह है कि वह पुरानी आदतों को जीते, अपने भीतर की बुराइयों पर विजय प्राप्त करे। अगर धर्म हमें यह विजय प्राप्त करना नहीं सिखाता तो कुछ नहीं सिखाता। कायरता शायद सबसे बड़ा दुर्गुण है, जिससे हम पीड़ित हैं, और शायद सबसे बड़ी हिंसा भी है। वह रक्तपात से और ऐसी ही दूसरी चीजों से, जिन्हें आमतौर से हिंसा का नाम दिया जाता है, अवश्य ही कहीं बड़ी हिंसा है। कारण, वह ईश्वर में श्रद्धा न होने और उसके गुणों का ज्ञान न होने से पैदा होती है। मैं स्वयं अपना प्रमाण देकर कह सकता हूँ कि मनुष्य के पास कायरता और दूसरी तमाम बुरी आदतों पर काबू पाने के लिए सबसे प्रबल अस्त्र बेशक हार्दिक प्रार्थना ही है। अपने भीतर ईश्वर के होने में सजीव श्रद्धा रहे बिना प्रार्थना हो ही नहीं सकती।

हमें अपना चुनाव कर लेना है कि हम बुराई की ताकतों के साथ दोस्ती करें या भलाई की ताकतों के साथ। ईश्वर की प्रार्थना करना और कुछ नहीं, ईश्वर और मनुष्य के बीच वह पवित्र मैत्री है, जिससे मनुष्य शैतान के पंजे से छुटकारा पा जाता है। परन्तु, हार्दिक प्रार्थना महज शब्दों का उच्चारण नहीं है, वह तो भीतरी लगन है जो मनुष्य के प्रत्येक शब्द, प्रत्येक कार्य और प्रत्येक विचार में प्रकट होती है। जब कोई बुरा विचार उस पर सफलतापूर्वक आक्रमण करे तब वह जान ले कि उसने केवल मौलिक प्रार्थना की है। सच्ची प्रार्थना के पहले प्रयत्न में हमेशा सफलता नहीं मिल जाती। हमें अपने ही विरुद्ध लड़ना पड़ता है, प्रयत्न करना पड़ता है। हमें प्रार्थना की क्षमता का अनुभव करना हो तो हमें अपने में अनन्त धैर्य पैदा करना होगा। अंधकार होगा, निराशा होगी और इससे भी बुरी-बुरी चीजें होंगी, परन्तु हमें इन सबसे युद्ध करने और कायरता के वशीभूत न होने लायक सारुह रखना पड़ेगा। प्रार्थना परायण मनुष्य के लिए पीछे हटने जैसी कोई चीज नहीं है।

अगर हमारे भीतर प्रार्थनापूर्ण हृदय है, तो हम ईश्वर को प्रलोभन न दें, उनके साथ कोई शर्त्त न रखें। हमें अपने को शून्यवत् बना लेना चाहिए। जबतक हम अपने को शून्यवत् नहीं बना लेते तब तक हम अपने भीतर की बुराई को नहीं जीत सकते। जब कोई मनुष्य अपने को ईश्वर में खो देता है, तब वह अपने को सब प्राणियों की सेवा में संलग्न पाता है। ईश्वर अभिमानियों या सौदा करने वालों की प्रार्थना कभी नहीं सुनता। अगर तुम उनकी सहायता चाहते हो तो उनके पास अपने सब ऊपरी आवरणों को उतार कर असली रूप में जाओ। तुम देखोगे कि तुम्हारी हर प्रार्थना सुनी जा रही है।

मैं कह सकता हूँ कि कई प्रसंगों में, वकालत में, संस्थाएँ चलाने में, राजनीति में ईश्वर ने मुझे बचाया है। मैंने यह अनुभव किया है कि जब हम सारी आशाओं को छोड़ बैठ जाते हैं तो कहीं-न-कहीं से मदद आ पहुँचती है। स्तुति, प्रार्थना, उपासना वहम नहीं है। प्रार्थना ने मेरे जीवन की रक्षा की है। उसके बिना मैं कभी का पागल हो जाता। मैं आपको बता दूँ कि जिस अर्थ में सत्य मेरे जीवन का अंग रहा है, उस अर्थ में प्रार्थना नहीं रही है। वह तो केवल आवश्यकता-वश आई, क्योंकि मैं ऐसी स्थिति में पड़ गया जब प्रार्थना के बिना सुखी नहीं हो सकता था। और ईश्वर में मेरी श्रद्धा जितनी बढ़ती गई उतनी ही प्रार्थना की लगन अदम्य होती गई। उसके बिना जीवन निस्तेज और सूना प्रतीत होता था।

शुरू में मेरा ईश्वर और प्रार्थना में विश्वास नहीं था और जीवन में बहुत काल तक मुझे ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मुझे किसी चीज की कमी है। लेकिन, एक समय ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे शरीर के लिए अन्न अनिवार्य है, वैसे ही आत्मा के लिए प्रार्थना अनिवार्य है। असल में शरीर के लिए अन्न इतना जरूरी नहीं है, जितनी आत्मा के लिए प्रार्थना, क्योंकि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए निराहार रहना अक्सर जरूरी

होता है, परन्तु प्रार्थना का उपवास तो हो ही नहीं सकता।

राजनीतिक क्षितिज पर निराशा छाई रहने पर भी मैंने कभी अपनी शान्ति नहीं खोई। मैं कहता हूँ वह शान्ति प्रार्थना से आती है। मैं विद्वान आदमी नहीं हूँ, परन्तु मैं प्रार्थना-परायण मनुष्य होने का नम्रता-पूर्वक दावा करता हूँ। मुझे इसकी परवाह नहीं कि प्रार्थना का स्वरूप क्या हो। इस बारे में हर एक को अपना रास्ता खुद बनाना चाहिए। परन्तु कुछ सुनिश्चित मार्ग है और प्राचीन गुरुओं के चलाये हुए इन मार्गों पर चलना सुरक्षित है।

(महात्मा गाँधी की आत्मकथा से साभार उद्धृत)

उपनिषद्

अथाह सागर ज्ञान का

उपनिषद : हमारे दर्शन स्रोत उपनिषदों को बहुधा 'वेदान्त' यानी वैदिक ज्ञान की चरम परिणति के रूप में मान्यता दी जाती है। यों तो मानक उपनिषदों की संख्या 108 हैं, जिनमें से लगभग 10 उपनिषदें प्रधान हैं और इन्हीं पर शंकर ने भाष्य किया है। इनका सृजनकाल 1000 ई0 पू0 से लेकर 300 ई0 पू0 माना गया है। सबसे पुरानी उपनिषदें वे हैं जो गद्य में हैं और सम्प्रदायवाद से रहित हैं, यथा-ऐतरेय, कौषीतकि, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, केन, बृहदारण्यक। इसके उपरांत कुछ छन्दोबद्ध उपनिषदें हैं, यथा– ईश, कठ, मुण्डक ।

उपनिषदों का महत्त्व इस हद तक आँका गया है कि – "हिन्दू विचारधारा का एक भी ऐसा महत्त्वपूर्ण अंग नहीं है जिसमें नास्तिक-नामधारी बौद्धमत भी आता है, जिसका मूल उपनिषदों में न मिलता हो" (ब्लूमफील्ड : 'द रिलीजन ऑफ द वेद')। उपनिषद् यानी 'उप-नि-सद्' अर्थात् समीप बैठना। यह ज्ञान प्राप्ति हेतु (गुरु शिष्य की) शाश्वत भारतीय परम्परा का द्योतक है। आदि शंकर के अनुसार "ब्रह्मज्ञान का नाम ही उपनिषद् है"।

आज के सन्दर्भ में उपनिषदों में जो सबसे अहम् बात है जाति शब्द का जिक्र तक नहीं होना । जाति व्यवस्था जो हमारी सामजिक व्यवस्था का सबसे बड़ा रोग है, उसकी कोई मान्यता उपनिषदों में नहीं है। तारीफ की बात यह है कि सारे उपनिषदों में तमाम जाति– सूचक शब्दों में अगर किसी भी शब्द का जिक्र है तो वह है ब्राह्मण, लेकिन ब्राह्मण शब्द का प्रयोग भी जाति– सूचक अर्थ में कहीं नहीं है। सारे उपनिषदों में ब्राह्मण शब्द का प्रयोग- ज्ञान के ग्राहीता के रूप में किया गया है। यानी जिस किसी व्यक्ति ने भी स्वयं को ज्ञान प्राप्ति करने के लिए तैयार कर लिया है, वही ब्राह्मण है। कितना अजीब लगा आपको यह जानकर कि जिस जाति व्यवस्था से समाज त्रस्त है, वह मात्र उपनिषद् के ज्ञान सार मात्र से ही खारिज हो जाती है ।

तमाम उपनिषद् — सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, ब्रह्मा से ज्ञान की प्राप्ति और ब्रह्मा-रूपी सत्य का ज्ञान द्वारा अपनी आत्मा. – अपना अन्तः की खोज पर केन्द्रित है। इस संदर्भ में निम्नलिखित श्लोक ध्यातव्य है ।

ॐ आत्मा वा इदमेकं एवाग्र आसीत ।
नान्यत् किंचन मिषत् ।
स ईक्षत लोकान्तु सृजा इति ।
(ऐतरेय उपनिषद्)

अर्थात् ॐ। शुरू में केवल यह आत्मा ही थी और कुछ भी नहीं था। उसने सोचा मुझे लोक (विश्व) सृजन करना चाहिए। यह विचार कर उसकी क्रिया निम्न रही ।

स इमाँल्लोकान सृजता अम्मो मरीची-र्मरमापोऽ दोऽम्मः परेष दिबं धौ : ।

प्रतिष्ठाऽन्तरिक्षं मरीचयः पृथिवी मरो या अधस्तात्ता आपः॥ (ऐतरेय उपनिषद्)

अर्थात् उसने इन लोकों का सृजन किया-अम्भः, मारीचि, मर, अपः, अर्थात् जो स्वर्ग से परे है, वह अम्भ है, स्वर्ग जिसका आधार स्तंभ है। आकाश मारीच है और पृथ्वी मर है, जो विश्व नीचे है, वे अपः हैं ।

मुंडकः उपनिषद् में ज्ञान के बारे में कई अहम् बातें कही गयी हैं।

ॐ ब्रह्मा देवानां प्रथमःसंबभूव
विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता ।
स ब्रह्मा विद्यां सर्वविद्या प्रतिष्ठा -
मथर्वाय ज्येष्ठ पुत्राय प्राह ॥

ॐ ब्रह्मा विश्व के सृजनकर्त्ता एवं रक्षक, देवताओं में खुद को सबंभूव (स्वतंत्र रूप से अवतरित) करने वाले, सर्वप्रथम थे। उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र अर्थव को वह ब्रह्म विद्या दी जो सारी विद्याओं के स्रोत हैं।

इस उपनिषद् में सर्वव्यापी सत्य को समझने के लिए एक बहुत अच्छा श्लोक है, जिसे बहुधा तटस्थ दर्शन का सार भी कहा जाता है ।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्य -
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

दो पंछी जो एक दूसरे से हमेशा जुड़े हैं और एक ही नाम के हैं एक ही पेड़ से चिपके हैं। एक विभिन्न स्वाद के फलों को खाता है और दूसरा बिना खाये चुपचाप देखता रहता है। यहाँ वृक्ष का उद्धहरण मनुष्य के रूप में किया गया है जिस प्रकार पीपल के पेड़ की जड़ें ऊपर जाती हैं और टहनियाँ नीचे आती हैं। जड़ें सांसारिक कारणों से ऊपर बढ़ती हैं।

शरीर में वास करते देवत्व और आत्मा दो पंछी जैसे चिपके रहते हैं । आत्मा जो इन 'चीजों' की ज्ञाता है, फलों को खाती है और फल के स्वाद अनुसार दुखी होती है और सुखी होती है, परन्तु दूसरा पंछी जो देवता है और स्वभावतः सतत, शुद्ध, बुद्धिमान, स्वतंत्र और सर्वव्यापी है, इस माया से परे हैं । केवल दर्शक भाँति बस मौजूद रहकर आनन्द का अमर साक्षी रहता है । कर्त्ता और कर्म दोनों को वह निर्देशित करता है ।

इसी प्रकार हमारा राष्ट्रीय चिह्न अशोक स्तम्भ पर लिखा हुआ चिर परिचित श्लोक भी मुण्डकोपनिषद् से ही है ।

सत्यमेव जयते नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः ।

येनाऽऽक मन्तयृष्यो ह्याप्तकामा
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ॥

सत्य ही जीतता है, असत्य नहीं । सत्य द्वारा देवयान- रूपी मार्ग प्रशस्त होता है, केवल जिस पर आरूढ़ होकर इच्छाओं से मुक्त-ऋषि परम सत्य (मोक्ष) की प्राप्ति कर सकते हैं ।

इसी प्रकार प्रश्नोपनिषद् में विश्व के सबसे प्राचीन एवं चिरंतन प्रश्न का वर्णन है ।

अथ कबन्धी कात्यायन उपेत्य पप्रच्छ ।
भगवान कुंतो ह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्त इति ।

पश्चात् कात्य का वंशज काबन्धी ने पूछा– भगवान, कहाँ से सारे चीजों का जन्म हुआ है । इस प्रश्न का जवाब निम्न श्लोक में दिया गया है ।

तस्मै स होवाय प्रजाकामों प्रजापतिः स तपोऽतत्यत स तपस्तप्त्वा ।

मिथुनमुत्यादयते रयिं च प्राणं- चेत्येतौ में बहुधा प्रजाः करिष्यत इति ।

जैसे सर्व ज्ञात है सर्वप्राणियों के स्वामी (प्रजापति) प्रजाकाम के इच्छुक होकर ऐसा तब किया जब विगत जीवन से संग्रहीत ज्ञान और वेदों द्वारा प्रलक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति में उनका तप पूर्ण हो गया और भोजन एवं प्राण– रूपी युग्म का सृजन किया । रयिं (चन्द्र) एवं प्राणग्नि यानी सूर्य । इससे उन्होंने सोचा ये दो सूर्य एवं चन्द्र सब प्रकार के प्राणी मेरे लिए सृजन करेंगे ।

इस प्रकार ब्रह्माण्ड (सर्वव्यापी अंडा) का सृजन करके निषेचन हेतु उन्होंने सूर्य और चन्द्र का सृजन किया जो संसार के पहले युग्म थे । यही दर्शन इस श्लोक में और स्पष्ट होता है ।

आदित्यों ह वै प्राणो रयिरेव चन्द्रमा रचिर्वा एतत् ।
सर्व यन्मूर्तम् चार्मूतं च तस्मान्मूतिरेव रविः ।

अर्थात् आदित्य (सूर्य) ही प्राण है– खाने वाला और रयिं (भोजन) ही चन्द्रमा है । जो खाने वाला है और जो भोजन है, वस्तुतः दोनों एक ही है ।

सूर्य के पथ का वर्णन के दौरान वैदिक काल में खगोल विज्ञान के ज्ञान का भी बहुत सटीक प्रमाण मिलता है ।

अथादित्य उदयन्यत्प्राची दिशं प्रविशति
तेन प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु संनिधत्ते ।
यदक्षिणां यत्प्रतीचीम् युदुदीचीं यद्धों
यदूर्ध्वम् यदन्तरा दिशो यत् सर्व प्रकाश्यति ॥
तेन सर्वान प्राणान् रश्मिषु संनिधत्ते ॥

अर्थात् (यह तथ्य) सूर्य उदय होते वक्त पूरब दिशा में प्रवेश करता है और इस दिशा में सारे किरणों द्वारा प्राणियों को संनिद्ध कर लेता है, तत्पश्चात् यह दक्षिण से प्रवेश करता है फिर पश्चिम में फिर उत्तर में फिर अदह फिर च्हवम् (ब्रह्माण्ड का सबसे निचला बिन्दु एवं सबसे बिन्दु क्रमशः) तत्पश्चात् यह अंतर दिशा में प्रवेश करता है, सबको प्रकाशित करके सत् की रश्मि को सनिंद्ध कर लेता है ।

इस श्लोक से प्राणाग्नि यानी सूर्य के सर्वव्यापी होने की बात तो कही ही गयी है, लेकिन इससे यह भी जानकारी मिलती है कि वैदिक काल में ज्योतिष शास्त्र का अच्छा ज्ञान था । पूर्व के उपरांत दक्षिण में सूर्य के प्रवेश की बात कही गयी है, वह कर्क रेखा के उत्तर में रहने वालों के लिए एक सर्वमान्य खगौलिक एवं भौगोलिक तथ्य है । हजारों वर्ष पूर्व इस खगौलिक तथ्य का ज्ञान हमारी सभ्यता के ज्ञान के चत्मोत्कर्ष को इंगित करता है ।

एक और बात है जो हमलोगों के उत्साहवर्द्धन का सतत स्रोत है । वह पूर्व दिशा से गिनती शुरू होगा । सर्वव्यापी प्राण यानी सूर्य पूरब से ही अपना सफर शुरू करता है, वही पूरब जहाँ हम रहते हैं । जहाँ हमारा देश भारत है जो ज्ञान का उद्गम स्रोत है ।

सच ही है, हर मानव यही तो कहता है मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश का ओर ले चलो और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो

असतो माँ सदगमय
तमसो माँ ज्योतिर्गमय
मृत्यो माँ अमृतं गमय

(वृहदारण्यक उपनिषद्)

☐ **अनिमेष कुमार सिन्हा**
कारखाना प्रबंधक (डीजल)
पूर्व रेलवे, जमालपुर

हिन्दू विधि के स्रोत

1. संक्षिप्त परिचय —

पारम्परिक मान्यतानुसार हिन्दू विधि का उद्गम सीधे भगवान से माना जाता है। कभी-कभी इसे धर्म से अलग करना मुश्किल प्रतीत होता है।अभी तक के ज्ञात वैद्यिक स्रोतों में इसके ज्ञात स्रोत सबसे पुराने हैं ।

कुछ लोग हिन्दू विधि को हिन्दू दर्शन का एक अंग मात्र समझते हैं।

स्रोत —

(क) प्राचीन स्रोत
(ख) नवीन स्रोत

2. प्राचीन स्रोत —

श्रुति

स्मृति

भाष्य एवं निबंध

रीति-रिवाज

2.1 श्रुति — श्रुति शब्द श्रु धातु से बना है और वैसे ग्रन्थों को अभिप्रेरित है जिन्हें भगवान से सीधे सुनकर लिखा गया है। इन ग्रंथों में विधि ज्ञान कम और दर्शन ज्यादा है।

श्रुति के मुख्य भेद निम्नलिखित है —

वेद

वेदांग

वेदांत

वेदों की कुल संख्या चार है, ऋग्देव, यर्जुवेद, सामवेद, अथर्ववेद । इनमें तीन वेद परस्पर समान हैं। इनमें से ऋग्वेद सबसे पुराना ग्रंथ माना जाता है (ऋच स्तूतै धातु) से ऋक पद बना है अर्थात् जो गुण और गुणी के ज्ञान का वर्णन करता है वह ऋक् है।

यजुः शब्द यज-धातु से बना है।इसके देव पूजा, संगतिकरण और दान अर्थ है। सामवेद सा + अम = साम से बना है, सा द्युलोक है और अमः यह भूलोक है; सा-विद्या और अम कर्म का नाम है। अतः दोनों का समन्वय साम अर्थात् उपासना है।

अथर्ववेद ज्ञान कंठ है अर्थ + अर्वाड़ से बना है।

वेदांग इन्हें वैदिक काल में लिखा गया और ये वेद के अनुबंध है।इनकी कुल संख्या छः है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, ज्योतिष और निरिक्त ।

उपनिषद् इनकी कुल संख्या 108 है और इन्हें हिन्दू दर्शन का उत्कर्ष माना जाता है। कुछ विशिष्ट उपनिषद् है ऐतरेय उनिषद् प्रश्न उपनिषद इत्यादि।

2.2 स्मृति —

स्मृति शब्द जो स्मृती यानी याद रह गया इंगित करता है। इसका काल श्रुति के बाद का है।

मुख्यतः पारम्परिक हिन्दू विधि का जन्म इन्हीं स्मृतियों से हुआ है। और ये ही इसके आधार स्तम्भ हैं । जो लोग वेद को ही हिन्दू धर्म का आधार मानते हैं, उनकी नजर में स्मृति की मान्यता (औथेन्टी-सीटी) श्रुति से कम हैं।

स्मृति को मुख्य दो भागों में बाँटा गया है— कथा के रूप में लिखा गया, इन्हें धर्म-सूत्र भी कहा जाता है। धर्म-सूत्र के विशिष्ट लेखक हैं। गौतम, वशिष्ठ विष्णु परासर इत्यादि । काव्य के रूप में लिख गया । इन्हें धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। इसके विशिष्ट लेखक हैं मनु, याज्ञवल्क्य नारद, कात्यायन इत्यादि। ये धर्म सूत्रों के उत्तर काल के हैं।

स्मृति में सबसे ज्यादा मान्यता मनु- स्मृति की है और इसका प्रभाव हिन्दू धर्म पर सर्वाधिक है। याज्ञवल्क्य स्मृति का भी अति महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह मनुस्मृति से ज्यादा प्रगतिशील है।

2.3 भाष्य एवं निबंध —

स्मृतियों का एक रूप मतलब न निकलने के कारण एवं किंचित अपूर्णता एवं आम लोगों के नहीं समझ पा सकने के कारण स्मृति पर भाष्य एवं निबंध लिखा गया।

भाष्य — किसी एक ही स्मृति पर (यथा, धर्मशास्त्र या धर्म सूत्र) पर लिखा गया ग्रंथ को भाष्य कहा जाता है। यथानंद पंडित द्वारा लिखा गया वैजयन्ती जो विष्णु धर्म शास्त्र पर लिखा गया।

निबंध — 12वीं शताब्दी से विभिन्न स्मृतियों पर एक साथ ग्रंथ लिखने का प्रचलन चल पड़ा जिन्हें निबंध कहा जाता है।

प्रमुख भाष्य है —

दाय भाग — जिमोत वाहन

मिताक्षर — विज्ञानेश्वर

उत्तर भारत में मुख्यतः मिताक्षर शाखा की प्रधानता है, और बंगाल को छोड़कर पूरे भारत में हिन्दू विधि पर इसका सर्वाधिक प्रभाव है।

बंगाल में मुख्यतः दाय भाग शाखा की मान्यता है।

4.0 नवीन स्रोत इसके प्रमुख उपभग हैं।

— न्यायिक निर्णय

— कानूनी अधिनियम

— सभ्यता एवं सद्विवेक

यहाँ पर मुख्यतः विधि अधिनियम की संक्षिप्त विवेचना की जायेगी ।ऐसे बीस से भी ज्यादा अधिनियम है, जिनमें प्रमुख इस प्रकार है —

1. हिन्दू विवाह अधिनियम- 1955
2. हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम- 1956
3. हिन्दू अवस्थ्ता एवं संरक्षकता अधिनियम- 1956
4. हिन्दू दत्तक एवं पालन अधिनियम- 1956

इन अधिनियमों के अनुसार हिन्दू विधि का काफी विस्तृत दायरा है। इस अधिनियम द्वारा मुख्यतः महिलाओं को पुरुषों के समान वैवाहिक एवं स्म्पति के मामले में अधिकार देने की सफल एवं सार्थक परिकल्पना हुई हैं।

साथ ही कल्याणकारी राज्य की धारणा को परिलक्षित करते हुए समाज की गति के साथ-साथ कानून की गति को बनाए रखने की भी कोशिश की गयी हैं ।

यथा हिन्दू विवाह अधिनियम में —

— न्यायिक पृथक्करण की व्यवस्था (धारा-10)

— आपसी सहमति से तलाक की 'व्यवस्था (धारा-13वीं)'' उसी प्रकार **उत्तराधिकार अधिनियम** में कई कल्याणकारी प्रावधान है।

— अधिनियम में अन्तरनिहित मसलों पर परम्पराओं की जगह कानूनी अधिनियम की धाराओं को तरजीह देना

— गर्भस्य शिशू के उत्तराधिकार की मान्यता (धारा- 20)

— अकेली महिलाओं के घर में रहने की अधिकार की मान्यता (धारा- 23)

उसी प्रकार **हिन्दू दत्तक अधिनियम** द्वारा अकेली महिलाओं को भी दत्तक पुत्र और पुत्री गोद लेने का अधिकार दिया गया जो की एक क्रांतिकारी कदम था और पारम्परिक हिन्दू विधि में इसे मान्यता नहीं थी (धारा -8)

इस अधिनियमों को ध्यान से पढ़ने से अपने ढेर सारे अधिकार का पता चलते हैं जिन्हें लोग जानते तक नहीं है। इस प्रकार बहुत सारे ऐसी निषेधों का भी पता चलता है जो अप्राकृतिक तो नहीं लगते हैं परन्तु जिन्हें करने से हमें कानून रोकता है ।

इतने छोटे में पूरे हिन्दू विधि की विस्तृत विवेचना तो असंभव है, लेकिन हिन्दू विधि की प्रगति के अनजाने पहलुओं से आपको परिचित कराने की एक छोटी कोशिश की गई है। विस्तृत जानकारी के लिए ऊपरी वर्णित ग्रंथ सहायक सिद्ध होंगे।

□ **ज्योति सिन्हा**
कारखाना मार्ग,
जमालपुर, मुंगेर

येन—केन प्रकारेण सस्य कस्यपि देहिनः।
संतोष जनये अश्रस्तदे वेश्वर पूजरम्॥

जिस किसी प्रकार से जिस किसी प्राणी को विद्वान संतोष दे सके — वास्तव में यही ईश्वर की पूजा है।

राजभाषा विभाग : रेल इंजन कारखाना, जमालपुर

वर्ष 1995 96 की उपलब्धियाँ

1. विशिष्टता जो रेल इंजन कारखाना की परम्परा बन चुकी है, उसी विरासत को कायम रखते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रयोग एवं प्रसार में भी यह कारखाना भारतीय रेलों में अग्रणी रहा है। हाथ कंगन को आरसी क्या, वर्ष 1995 की कुछ गौरवशाली उपलब्धियाँ यों रहीं।

2. **अखिल भारतीय रेलों में हिन्दी के सर्वाधिक कार्यों के लिए राजभाषा शील्ड :—**
दिनांक 23 अगस्त, 1995 को जमालपुर कारखाना को उक्त राजभाषा शील्ड रेलमंत्री के द्वारा प्रदान किया गया। साथ ही 1994 के लिए पूरे भारतवर्ष में मॉडल रेल कार्यालय घोषित किया गया।

3. **प्रेमचन्द पुरस्कार :—**
भारतीय रेल में सर्वश्रेष्ठ कथा पुस्तक लेखन पर रेल मंत्रालय द्वारा प्रदत्त दिनांक 23 अगस्त, 1995 को वर्ष 994 के लिए यह पुरस्कार जमालपुर कारखाना के रेलकर्मी श्री रमेश प्रसाद, कारखाना लेखा अधिकारी (सेवानिवृत) को प्रदान किया गया।

   अखिल भारतीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर दिये जाने वाले पुरस्कारों की प्राप्ति ने जमालपुर कारखाना के स्वर्णिम इतिहास में कुछ पन्ने और जोड़ दिये।

4. **हिन्दी भाषी क्षेत्र में पूर्व रेलवे के कार्यालयों में प्रथम स्थान :—**
दिनांक 21 नवम्बर, 1994 को उसके गत वित्तीय वर्ष में हिन्दी के उल्लेखनीय कार्य के लिए महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे ने यह पुरस्कार दिया।

5. पूर्व रेलवे स्तर पर आयोजित रेलवे सप्ताह 1995 के अवसर पर जब हिन्दी संगठन के किसी एक अधिकारी को पुरस्कृत करने की बात उठी तो जमालपुर की प्रगति को देखकर महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे ने जमालपुर के राजभाषा अधिकारी श्री देवनारायण साह को चुना और इन्हें 'प्रशस्ति-पत्र' सहित आठ सौ रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया और इस तरह मान्यवर महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे ने जमालपुर की गौरव गरिमा में वृद्धि कर दी है।

6. 18. वीं अखिल भारतीय रेल राजभाषा सप्ताह समारोह के अवसर पर सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड ने दिनांक 23 अगस्त, 1995 को जमालपुर के दो कर्मचारियों को व्यक्तिगत नकद पुरस्कार भी प्रदान किया।

   (क) श्री भोला प्रसाद भगत, कार्यालय अधीक्षक-2, भंडार विभाग : 600/-

   (ख) श्री अरुण कुमार अमन, लिपिक, कार्मिक शाखा : 600/-

7. **अधिकारियों के लिए हिन्दी डिक्टेशन कार्यशाला के आयोजन में प्रथम :—**
रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार हिन्दी के व्यापक प्रसार के लिए अधिकारियों को हिन्दी में डिक्टेशन का प्रशिक्षण दिया जाना है। पूर्व रेलवे के तमाम मंडल एवं कारखाना से पहले ऐसी कार्यशाला का पहले-पहल आयोजन जमालपुर कारखाना ने किया।

8. राजभाषा-सम्बन्धी कुछ ऐसे आनुसांगिक कार्य हैं, जिनका प्रभाव परोक्ष, किन्तु प्रभावकारी ढंग से हिन्दी के प्रयोग-प्रसार पर पड़ता है। जमालपुर में विगत सात वर्षों से हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन ऐसे कार्यक्रमों का एक उदाहरण है।

   हिन्दी प्रोत्साहन योजना, जमालपुर कारखाने में 1-4-89 से लागू की गयी है, जिसके तहत प्रत्येक

वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर यांत्रिक विभाग के तीस और भंडार विभाग के दस सफल कर्मचारियों को नकद तथा पुस्तक पुरस्कार प्रदान किया जाता रहा है। इस वर्ष भी हिन्दी दिवस 14 सितम्बर '95 को क्रमशः 29 और 10 कर्मचारियों को इस योजना के तहत पुरस्कृत किया गया।

9. जमालपुर कारखाना के लिए यह सौभाग्य की बात है कि यहाँ के वर्त्तमान मुख्य कारखाना प्रबन्धक, श्री अरुण कुमार तिवारी और उपमुराधि श्री परमानन्द सिंह दोनों हिन्दी के प्रयोग-प्रसार में काफी दिलचस्पी ले रहे हैं। इनके कुशल मार्गदर्शन में जमालपुर ने वार्षिक कार्यक्रम के कई लक्ष्यों की प्राप्ति कर ली है।

मिसाल के तौर पर :—

(क) सभी स्टेनोग्राफरों को हिन्दी आशुलिपि का प्रशिक्षण दे दिया गया है।

(ख) सभी टाइपिस्टों को हिन्दी टाइपिंग में प्रशिक्षण कर दिया गया है।

(ग) अबतक इक्यावन हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई जा चुकी हैं, जिसके तहत 791 लिपिक वर्गीय कर्मचारियों को टिप्पण एवं प्रारूप-लेखन का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

(घ) हिन्दी प्रशिक्षण के लिए अब केवल 99 गैर हिन्दीभाषी कर्मचारी शेष रह गए हैं।

(ङ) नवम्बर '95 से अधिकारियों के लिए "हिन्दी डिक्टेशन कार्यशाला का आयोजन भी हो रहा है जो पूर्व रेलवे स्तर पर एक उदाहरण है।

(च) स्थापना दिवस, रेलवे सप्ताह, तुलसी जयंती समारोह आदि अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आजोजित हुए हैं और हिन्दी काव्य-पाठ सम्पन्न हुआ है।

इस प्रकार सांस्कृतिक, साहित्यिक, हिन्दी प्रतियोगिता एवं गोष्ठी आदि क्षेत्रों में जमालपुर कारखाना की गतिविधियाँ सदा उल्लेखनीय रही हैं। आशा है, यह परम्परा आगे भी कायम रहेगी।

जय हिन्दी : जय भारत

मृत्युंजय कुमार झा
राजभाषा सहायक
पूर्व रेलवे, जमालपुर

रोने का अपना मजा होता है (ओविड़)
अनुभव मूर्खों को सिखाता है (लातिनी कहावत)
धनवान के बहुत से दोस्त हैं (लातिनी कहावत)
महान् आत्माएँ चुप-चाप दुःख सहती हैं (शिलर)
अफवाहों से तेजगति किसी की नहीं होती (लिवी)
जिन्हें भगवान ज्यादा प्यार करता है उन्हें जल्द बुला लेता है (मिनिंडर)

पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन, जमालपुर

एक रिपोर्ट

पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन जमालपुर एक स्वैच्छिक एवं स्वयंसेवी संस्था है जो समाज सेवा, जन–कल्याण, महिलाओं के समेकित विकास एवं आम स्वास्थ्य कल्याण जैसी बहुमुखी कल्याणकारी गतिविधियों में अहर्निश सेवा वाली भावना के साथ जुड़ा हुआ है । यह अखिल भारतीय स्तर पर भारतीय रेल महिला कल्याण समिति से संबंधित है । स्थानीय स्तर पर इससे कुल चार महिलायें समिति सम्बद्ध हैं । यथा, ईस्ट कॉलोनी महिला समिति, रामपुर कॉलोनी महिला समिति, दौलतपुर कॉलोनी महिला समिति एवं गेट-६ लोको कॉलोनी महिला समिति । इन महिला समितियों में इस संगठन के सौजन्य से कई प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जाते हैं, जिनमें प्रमुख सिलाई, कढ़ाई प्रशिक्षण कार्यक्रम है । इस हेतु अनुभवी प्रशिक्षिका की नियुक्ति भी संगठन की ओर से की गई हैं । विभिन्न यूनिफोर्म इत्यादि की सिलाई का कार्य यहाँ किया जाता है । अन्य प्रमुख गतिविधि है हस्तशिल्प प्रशिक्षण । इन कार्यों से संगठन एवं समिति के सदस्यों को वैकल्पिक आय का एक स्रोत मिलता है एवं स्वावलम्बन के लिए जरूरी आत्मविश्वास । इस संगठन की गतिविधियों की व्यापकता अपार है एवं विभिन्न कल्याणकारी गतिविधियाँ करने में और राष्ट्रीय विपदाओं यथा बाढ़, भूकम्प इत्यादि में प्रोत्साहित यह संगठन हर संभव मदद करने में हमेशा आगे रहा है ।

कल्याणकारी गतिविधियाँ

महिला कल्याण संगठन, पूर्व रेलवे, जमालपुर द्वारा ईस्ट कॉलोनी महिला समिति में दिनांक 15-08-94 से एक शिशु विद्यालय का शुभारंभ किया गया है जिसमें गरीब परिवार के बच्चों को मान्टेशरी - । एवं ॥ स्तर तक निःशुल्क शिक्षा दी जाती है । इसके लिए शिक्षिकाओं को वेतन आदि के साथ-साथ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर भी यह संगठन खर्च करता है । गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस एवं अन्य समारोह के अवसर पर कर्मचारियों को विशेष पुरस्कार भी इसी संगठन के द्वारा दिया जाता है ।

अन्य संगठनों को अनुदान

विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं एवं कल्याणकारी संगठनों को संगठन के द्वारा समय-समय पर विशेष अनुदान प्रदान किये जाते हैं ताकि समाज का चतुर्दिक विकास हो सके । वर्ष 95-96 में ऐसी जिन संस्थाओं को विशेष अनुदान दिया गया, उनमें मुख्य हैं —

मदर टेरेसा मिशनरी ऑफ चेरिटी, मुंगेर शाखा, चक्षुदान यहाँ अनाथ एवं बीमार बच्चों की देख - ख की जाती है ।

निर्मल हृदय, मिशनरी ऑफ चैरिटी, जमालपुर यहाँ अनाथ एवं बीमार बच्चों के अलावा भूली-भटकी महिलाओं की देख–रेख एवं सेवा शुश्रूषा की जाती है ।

चक्षुदान यज्ञ समिति

जमालपुर क्रीड़ा संगठन

संत जोसफ मध्य विद्यालय में आयोजित बुलबुल कैम्प

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए पूर्व रेलवे केन्द्रीय संस्थान, जमालपुर को विशेष अनुदान दिया गया ।

विशिष्ट क्रिया– कलाप

पल्स पोलियो, टीकाकरण अभियान कार्यक्रम एवं 33वीं स्कॉउट एवं गाइड राज्य रैली एवं कैम्पूरी 996 के अवसर पर इस संगठन ने अपने विशिष्ट क्रिया-कलापों को सफल एवं प्रशंसनीय अंजाम देकर एक नया इतिहास कायम किया है, पर यह समय अपनी उपलब्धियों पर संतुष्ट होने का नहीं है, अपितु समाज– कल्याण एवं सेवा की अनुकरणीय मिसाल को कायम करना है ।

तमसो मा ज्योतिर्गमय ।

□ **नीता तिवारी,**
अध्यक्षा,
महिला कल्याण संगठन,
पूर्व रेलवे, जमालपुर ।

डीजल मल्टीपुल यूनिट (डी० एम० यू०)

डी0 एम0 यू0 ट्रेन पूर्व रेलवे की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। जिस क्षेत्र में विद्युत् ट्रेन नहीं चलती है, वहाँ लोकल ट्रेन के लिए डी0 एम0 यू0 का उपयोग किया जा रहा है। इस ट्रेन से यात्रियों को बहुत बड़ी सुविधा प्राप्त हुई। इस ट्रेन से सबसे महत्व पूर्ण सुविधा यह मिली कि इससे समय की बहुत बचत होती है, क्योंकि इसकी गति बहुत अधिक रहती है तथा गाड़ी में ब्रेक छोड़ने में बहुत कम समय लगता है। वैक्यूम ब्रेक नहीं रहने के कारण इस ट्रेन को यात्री अपनी इच्छानुसार होज पाइप काटकर हर जगह नहीं रोक सकते हैं।

डी0 एम0 यू0 ट्रेन को लिलुआ कारखाना में लिलुआ तथा जमालपुर कारखाने के कर्मचारियों के द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किया गया है। जमालपुर कारखाने के कर्मचारी का इसके दोनों तरफ लगे ड्राइविंग कोच को बनाने में महत्त्वपूर्ण हाथ है। ड्राइविंग कोच के सभी विद्युत तथा यांत्रिक उपकरण जमालपुर कारखाने के कर्मचारियों द्वारा ही लगाया जाता है। इसमें अत्यावश्यक नियंत्रक उपकरण शामिल हैं। प्रथम डी0 एम0 यू0 बनाने में इस कारखाने के कारीगरों ने अपनी योग्यता का पूर्ण कौशल दूसरे कारखाने में भी जाकर दिखाया जिससे पूर्व रेलवे तथा आर0 डी0 एस0 ओ0 / लखनऊ के उच्च अधिकारियों को भी यहाँ के कारीगरों का दाद देना पड़ा, क्योंकि पूरे भारतीय रेल में यह प्रथम डी0 एम0 यू0 निर्माण था। उस समय हमारे पास एक रेखा चित्र के अलावा कोई भी ड्राइंग उपलब्ध नहीं था। परन्तु अपनी सूझ-बूझ से जमालपुर कारखाने के कर्मचारियों ने इस प्रथम डी0 एम0 यू0 ट्रेन को पूर्व रेलवे को समर्पित किया। जिसका उद्घाटन तत्कालीन रेलवे मंत्री श्री जार्ज फर्नांडिस ने पटना में किया। इस प्रथम डी0 एम0 यू0 ट्रेन ने 1990 में बनने के बाद करीब 35 डी0 एम0 यू0 ट्रेन और बनी जिसे यहाँ के कारीगरों ने लिलुआ जाकर समय-समय पर बनाया। इस ट्रेन में बहुत से ऐसे उपकरण हैं जो कि जमालपुर कारखाना में ही निर्मित करके डी0 एम0 यू0 में लगाया गया जिसमें मास्टर कन्ट्रोलर, एयर ब्रेक तथा विद्युत् कन्ट्रोलस्टैण्ड महत्त्वपूर्ण हैं।

मास्टर कन्ट्रोलर जो भारतीय हैवी इलेक्ट्रिक लिमिटेड, भोपाल के द्वारा पूरे भारतीय रेलवे को डीजल इंजन के लिए दिया जाता है। परन्तु जैसे-जैसे डी0 एम0 यू0 की जरूरत ज्यादा होने लगी मास्टर कन्ट्रोलर हमें भारतीय हैवी इलेक्ट्रिक लिमिटेड से मिलना संभव नहीं हो सका। जमालपुर कारखाना ने इस चुनौती को भी स्वीकार किया और फरवरी 1993 में अपना पहला मास्टर कन्ट्रोलर बनाकर सबको चकित कर दिया। इसमें लगने वाले पार्ट्स को खुद जमालपुर कारखाने में ढ़लाई तथा मशीनिंग किया गया तथा कुछ सामान को बाहर से खरीद कर पूर्णरूप से जोड़ा गया। जो मास्टर कन्ट्रोलर हम भारतीय हैवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड तथा डी0 एल0 डब्ल्यू0 से मंगाते थे, वह खुद बनाकर डी0 एम0 यू0 के साथ-साथ दूसरे रेलवे को भी डीजल विद्युत लोको के लिए देना शुरू किया। ऐयर ब्रेक तथा विद्युत् कन्ट्रोल स्टैण्ड को भी हमने जमालपुर कारखाना में बनाया।

डी0 एम0 यू0 ट्रेन की मुख्य तकनीकी जानकारी

1. यह गाड़ी पूरी तरह ब्रेक प्रणाली पर आधारित है जिसके कारण ट्रेन में ब्रेक लगाने तथा छोड़ने में बहुत कम समय लगता है और ट्रेन की गति भी अधिक किया जा सकता है, क्योंकि ब्रेकिंग दूरी कम हो जाती है।

2. इस ट्रेन में एक डब्लू0 डी0 एम0 2 लोको बीच में तथा दोनो तरफ 5-5 पैसेंजर कोच लगा रहा है जिसके दोनों किनारे वाले एक-एक ड्राइविंग कोच होते है। इन ड्राइविंग कोच द्वारा ड्राइवर गाड़ी का संचालन करता है।

3. ट्रेन के प्रत्येक कोच एक दूसरे से मल्टीपुल तार नियंत्रण हेतु तथा ब्रेक पाइप द्वारा (ब्रेक हेतु) जुड़ा रहता हैं।

4. ड्राइवर कोच में एक – एक यांत्रिकी तथा विद्युत कन्ट्रोल स्टैन्ड से ट्रेन में ब्रेक लगाया जाता है तथा विद्युत कन्ट्रोल स्टैन्ड से गाड़ी की गति को निर्धारित किया जाता हैं।

5. प्रत्येक ड्राइवर कोच में संरक्षा के लिए आपात् ब्रेक, पाद स्वीच, पायलट वाल्व तथा प्रत्येक कोच में आपात चेन लगा रहता है जिसे यात्री द्वारा खींचे जाने पर ड्राइवर को संकेत मिल जाता है जिससे ड्राइवर गाड़ी को रोक सकता है।

6. दोनों तरफ से डी0 एम0 यू0 को बिना इंजन बदले चलाया जा सकता है। अतः आखिरी स्टेशन से उल्टी दिशा में बिना इंजन बदले या बिना शंटिंग किए हुए उल्टी दिशा में चलाया जा सकता हैं।

पूर्व रेलवे को देखकर दूसरे रेलवे ने जमालपुर तथा लिलुआ में आकर इस ट्रेन के बारे में जानकारी हासिल की और अपने-अपने रेलवे में इसका निर्माण किया। इस तरह जमालपुर कारखाना का डी0 एम0 यू0 ट्रेन के निर्माण में महत्त्वपूर्ण हाथ रहा। डी0 एम0 यू0 ट्रेन हमारे लिए महत्त्वपूर्ण लोकल ट्रेन है जो यात्री को भारी सुविधा प्रदान करती है तथा समय की बचत करती हैं। यदि यात्रियों का सहयोग मिलता रहा तो डी0 एम0 यू0 ट्रेन भी भारतीय रेलों में एक महत्त्वपूर्ण ट्रेन में गिना जा सकता हैं।

□ **गोपाल सिन्हा**
उपकार्यशाला अधीक्षक
पू. रे. जमालपुर

[जमालपुर रेल इंजन कारखाना में हाल में कमीशन किया गया डी. एम. यू. का ड्राइविंग कैब]

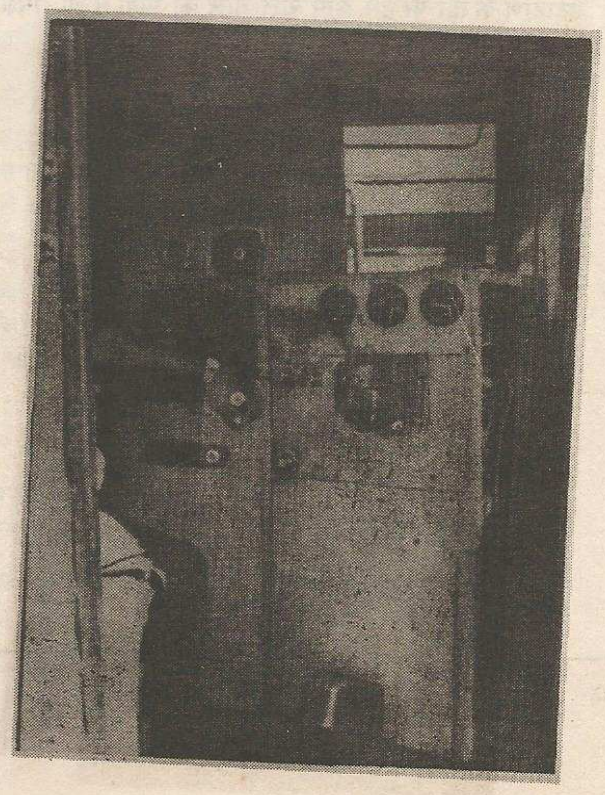

[डी. एम. यू. के लिए जमालपुर में विकसित एवं निर्मित स्वदेशी मास्टर कन्ट्रोलर एवं एयर ब्रेक स्टैंड (ट्रेन का नियंत्रण इन्हीं से होता है ।)]

क्या है यह कम्प्यूटर

संक्षिप्त इतिहास-कम्प्यूटर सामान्य प्रयोग में पाँचवें दशक से प्रयुक्त हो रहा है। यों तो सबसे पहला कम्प्यूटर चार्ल्स बैबेज द्वारा बनाया हुआ माना जाता है जो कि इससे काफी पहले बना था, परन्तु सामान्य प्रयोग में इसकी शुरूआत बाद में हुई। पहले के कम्प्यूटर काफी बड़े थे एवं अत्यन्त ही महंगे थे। पाँचवें दशक का विशाल कम्प्यूटर जो कि बड़े कमरे में बमुश्किल से समा पाता था, और लाखों रुपये जिसकी कीमत होती थी उससे ज्यादा तेज काम आजकल के इतने छोटे से कम्प्यूटर से किया जा सकता है जो कि एक छोटे ब्रीफ, केश में आ सकती है। ऐसा क्रान्तिकारी परिवर्तन सातवें दशक में माइक्रो प्रोसेसर के उद्भव के बाद हो पाया।

संरचना परिचय

कम्प्यूटर अपनी मेमोरी (याददाश्त) में डाले गये प्रोग्राम के मुताबिक काम करता है। आप लोगों में से काफी लोगों ने वर्डस्टार, डिवेस सी, कोबोल इत्यादि नाम सुने होंगे जिन्हें कम्प्यूटर लैंगवेज या कम्प्यूटर भाषा कहा जाता है। कम्प्यूटर की अधिकांश किताबें अंग्रेजी में देख कर एवं ऊपर वर्णित कम्प्यूटर भाषाओं को अंग्रेजी में लिखा देखकर यह शंका होना स्वाभाविक है कि कम्प्यूटर अंग्रेजी ही समझता है। परन्तु यह एक भ्रम है। कम्प्यूटर विश्व की कोई भी भाषा नहीं समझता है। कम्प्यूटर केवल एक भाषा जानता है और वह है "अंकों की भाषा"। अंकों में भी कम्प्यूटर केवल 0 और 1 अंक को ही पहचान पाता है। कितनी अद्भुत बात है केवल दो अंक 0 और 1 के ही माध्यम से कम्प्यूटर अरबों अंकों की गिनती कर लेता है, और अनेक काम कर सकता है।

इसे कम्प्यूटर के विद्वान बाइनेरी लॉजिक कहते हैं। इसी बाइनेरी लॉजिक या द्विधारी तर्क का पहला आधार स्थान अंक है बाइनेरी अंक गणित या द्विधारी अंक गणित। मोटे तौर पर कम्प्यूटर के द्विधारी भाषा के प्रमुख अंग हैं।

द्विधारी अंक

द्विधारी वर्ण

द्विधारी अंक गणित

द्विधारी तर्क

द्विधारी पता

उदाहरण के तौर पर हम आम बोल-चाल की भाषा में जो समझते हैं उन्हें कम्प्यूटर निम्नलिखित तालिका के अनुसार समझता है।

तालिका.....

अंक	कम्प्यूटर की भाषा	वर्ण	कम्प्यूटर की भाषा
0.	011 0000	A	100 0001
1.	001 10001	B	100 0010
2.	001 10010	C	100 0011
3.	011 0011	D	100 0100
4.	011 0100	E	100 0101
5.	011 0101	F	100 0110
6.	011 0110	G	100 1011
7.	011 0111	H	110 1001
8.	011 1000	I	100 1011
9.	011 1001	J	100 1010
10.	011 1010	K	100 1111

अंकगणित	कम्प्यूटर की भाषा	
+ (जोड़)	010	1011
− (घटाव)	010	1101
x (गुणा)	010	1010
÷ (भाग)	010	1111

तर्क	कम्प्यूटर की भाषा	
> (कम है)	011	1100
> (ज्यादा है)	011	1110
= (बराबर है)	011	1101

तालिका 1 को ध्यान से देखने पर आप पायेंगे कि कुल अंकों 0 और 1 की संख्या सात है । यथा 011 0000 इसे 7 बिट कोड भी कह सकते हैं असल में यह शुरूआती सर्वमान्य कोड है, जिसे आस्की कोड भी कहते हैं इस कोड के माध्यम से 2 x 2.....सात बार कि (2 x 2 x 2) x (2 x 2 x 2 x 2) = 8 x 16 = 128 संकेतों को निरूपित किया जा सकता है । बाद में, कुछ और संकेतों मुख्यतः चित्र या ग्राफ हेतु जोड़कर इसे 7 की जगह 8- बिट कोड बनाया गया । अभी तक मैंने यह नहीं बताया है कि यह बिट है क्या ।

आठ बिट कूट में 0011 0000 में हर 1 या 0 एक बिट है । अर्थात् हर द्विधारी अंक एक बिट है ।

ऐसे अन्य शब्द है-निबल, बाइट, वर्ड । इनका रैखिक निरूपण निम्न है

बाइट-आठ बिट का समूह

0011 0000

बिट

निबल-चार बिट का समूह

शुरूआत कम्प्यूटर आठ अंकों या बिट का ही प्रयोग करते थे, परन्तु बाद के कम्प्यूटर 16 या 32 बिट का प्रयोग करने लगे हैं, जिसमें 16/8 = 2, या 32/8 = 4 बाइट का वर्ड का प्रयोग होता है ।

अर्थात् वर्ड बिट का वैसा समूह है जिसका प्रयोग कम्प्यूटर अपने कार्यों के लिए एक समय में करता है ।

कम्प्यूटर भाषा के विभिन्न स्तर

तालिका 1 में दिखाये गए संकेतों या कूटों के अलावा भी कम्प्यूटर 0 और 1 से बने विभिन्न कूटों का प्रयोग करता है जो हर कम्प्यूटर निर्माता के लिए अलग अलग होता है । 0 और 1 से बनी इस भाषा को मशीन भाषा कही जाती । है । इस भाषा को समझना बहुत ही मुश्किल है । इस कारण दूसरी पीढ़ी की भाषा का उदय हुआ जिसे असेम्बली भाषा कही जाती है । मर्श न भाषा को छोटे-छोटे शब्दों में एवं 0 और 1 की जगह सोलह अंकों का प्रयोग इसमें किया जाता है ।

सामान्य लोगों के लिए यह भी मुश्किल है, पर इससे जबर्दस्त फायदा हुआ कि अब हर कम्प्यूटर के लिए अलग-अलग प्रोग्राम लिखने की जरूरत नहीं रही, क्योंकि असेम्बलर प्रोग्राम जो कि अलग-अलग कम्प्यूटर के लिए अलग-अलग आते है की मदद से एक असम्बली भाषा प्रोग्राम को भिन्न-भिन्न मशीन भाषा प्रोग्राम में बदला जा सकता है । आम आदमी न मशीन भाषा का प्रयोग करता न असेम्बली भाषा ।

तीसरी पीढ़ी आई- उच्च स्तरीय भाषा का

(-कॉमन लेवल लैंग्वेज) यथा कॉबोल (COBOL) फोरट्रान (FORTRAN) सी (C) इत्यादि का इन्हें उच्चस्तरीय इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ये कम्प्यूटर की अपनी भाषा की स्तर से ऊँचे हैं । ये सामान्य अंग्रेजी से मिलती-जुलती भाषा का प्रयोग करते हैं ।

इन भाषाओं के उद्भव के बाद कम्प्यूटर की लोकप्रियता काफी बढ़ी । फिर भी इन्हें प्रयोग करने के लिए विशिष्ट ज्ञान हासिल करना आवश्यक था ।

चौथी पीढ़ी आई- अनुवादिक या इन्टरप्रेटिव भाषा की यथा वर्ड स्टार, डि- बेस लोट्स इत्यादि । एक द्विभाषिया की तरह द्विभाषिया या आनुवादिक प्रोग्राम आपकी भाषा को कम्प्यूटर की भाषा में बदलने के लिए हमेशा मौजूद रहता है । इनका प्रयोग भी व्यक्ति अत्यन्त ही अल्प समय में समझ सकता है । इनका आपसी संबंध यूँ समझा जा सकता है ।

इन्टरप्रेटिव भाषा
उच्च स्तरीय भाषा
असेम्बली भाषा
मशीन भाषा
कम्प्यूटर

कम्प्यूटर की बनावट

ऊपर के चित्र में जो कम्प्यूटर दिखाया गया है उसके भीतर के प्रमुख कल-पुर्जों को निम्न प्रकार से दिखाया जा सकता है-

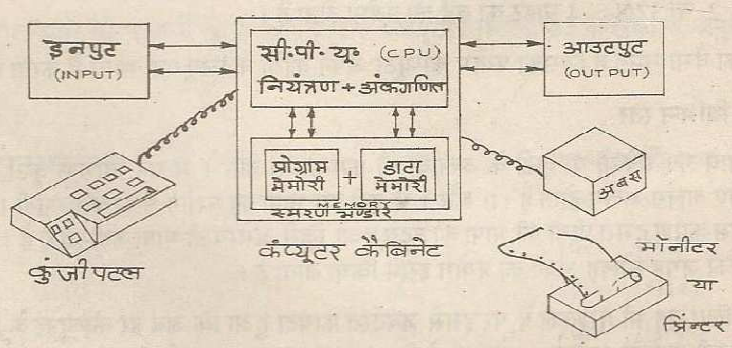

कम्प्यूटर का हृदय सी0 पी0 यू0 (सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट) होता है यानी केन्द्रीय संचालन इकाई ।

कम्प्यूटर के सारे कार्यकलाप यथा,

- आपसे वार्ता करना एवं आपसे संदेश लेना ।
- इन संदेशों पर वांछित कार्रवाई के अनुरूप परिष्कृत करना ।
- परिष्कृत निष्कर्ष को आपको वापस बताना ।

का नियंत्रण यह सी0 पी0 यू0 करता है ।

कम्प्यूटर की गुणवत्ता सी0 पी0 यू0 के आधार पर ही मापी जाती है । आज कल के बहुप्रचलित पी0 सी0 (पर्सनल कम्प्यूटर) का मौलिक नाम उनके सी0 पी0 यू0 को ही निरूपित करता है । इनका संक्षिप्त क्रमिक विकास इस प्रकार है:-

(i) पी0 सी0 8086

(ii) पी0 सी0 80286

(iii) पी0 सी0 80486

(iv) पी0 सी0 पेंटियम

जो कम उत्पादन अमेरिका की एक बहुत बड़ी कंपनी आई बी एम (इंटर नेशनल बिजनेस मशीन) की हैं और इनके सी0 पी0 यू0 में आई0 सी0 चिप (इन्टीग्रेटेड सर्किट) प्रयुक्त होता है, उसे अमेरिका की ही एक अन्य कम्पनी इनटेल बनाती है । मसलन पी सी 486 में जो आई0 सी0 चिप प्रयुक्त होता है, उसका नाम इनटेल 80486 है, पी0सी0 की सी पी यू में प्रयुक्त होने वाली आई सी के नाम के आधार पर ही कम्प्यूटर का नामकरण होता है । सी0 पी0 यू0 की महत्ता का अन्दाज इसी से लगाया जा सकता है ।

सी0 पी0 यू0 में एक घड़ी होती है जिसकी आवृति पर कम्प्यूटर के कार्य करने की गति निर्भर होती है । जहाँ पहले 8 मेगाहर्ट्स (प्रति सेकण्ड में 80 लाख आर धड़कना) की घड़ी प्रयुक्त होती थी वहाँ अब 150-200 मेगाहर्ट्स तक की आवृति वाली घड़ियों का प्रयोग किया जाता है ।

स्मरण भंडार (मेमोरी)

ये दो प्रकार के होते हैं—

(i) रौम (ROM) और

(ii) रैम या आर डब्लू एम (RAM या RWM)

रौम वैसी मेमोरी को कहा जाता है जिनमें रखे हुए अनुदेशों या प्रोग्राम को केवल पढ़ा जा सकता है, परन्तु उन्हें बदला नहीं जा सकता । इनकी जरूरत इसलिए पड़ती है, क्योंकि हर कम्प्यूटर को जब ऑन किया जाता है तब रौम में रखे हुए प्रोग्राम को पढ़कर कम्प्यूटर आगे के अनुदेशों को ग्रहण करने के लिए तैयार होता है । हर कम्प्यूटर निर्माता, कम्प्यूटर की जरूरतों के अनुसार रौम में लिखे प्रोग्राम देता है । यह अलग बात है कि हम और आप इसके अस्तित्व तक से अपरिचित रहते हैं ।

रैम – रौम के विपरीत कम्प्यूटर इन्हें पढ़ भी सकता है और इन पर लिख भी सकता है । कम्प्यूटर के लिए यह एक तरह का स्लेट मैजिक बोर्ड है जिसपर कम्प्यूटर अपनी सारी गणना करता है । इनका निरूपण के या एम में किया जाता है । के 1000 बाइट के लिए प्रयुक्त होता है और एम 10,00000 बाइट के लिए प्रयुक्त होता है । जहाँ पहले 640 के बी वाले पी सी प्रयुक्त होते थे वहीं अब 8 एम बी वाले पी सी का प्रयोग आम बात है यानी पहले की तुलना 15 गुणा से भी ज्यादा जगह ।

रौम या रैम की मदद से कम्प्यूटर जो कार्य करता है, स्थायी रूप से संचित भंडार में रखा जाता है । जिन आंकड़ों या डेटा या डाटा पर कम्प्यूटर काम करता है वह भी संचित भंडार में रहता है । वस्तुतः हम टाइपराइटर जैसे की बोर्ड से जो कुछ भी सूचना प्रेषित करते

हैं वे सारी सूचनाएँ संचित भंडार में ही रहता है। की बोर्ड के माध्यम से हम रैम में कुछ भी नहीं भेज सकते। यूँ समझिए कम्प्यूटर मास्टर है, रैम ब्लैक बोर्ड है और संचित भंडार एक पुस्तक है। पुस्तक में दी गई जानकारियों एवं सूचनाओं को मास्टर (कम्प्यूटर) ब्लैक बोर्ड पर थोड़ी देर के लिए लिखकर एवं ब्लैक बोर्ड पर ही कुछ जोड़ तोड़ कर कुछ आगे-पीछे कर किसी नतीजे पर पहुँचता है अंतिम परिणाम पुनः कागज पर लिखकर संचित कर लेता है। कागज का यह आखिरी टुकड़ा पुस्तक संचित भंडार का एक अंग जाता है। जिस प्रकार पुस्तक की पृष्ठ संख्या सीमित होती है उसी प्रकार संचित भंडार की भी परिसीमा होती है और इस सीमा से जानकारियां होने पर पुरानी सूचनाओं को निकालना आवश्यक हो जाता है।

इसका रैखिक निरूपण इस प्रकार है—

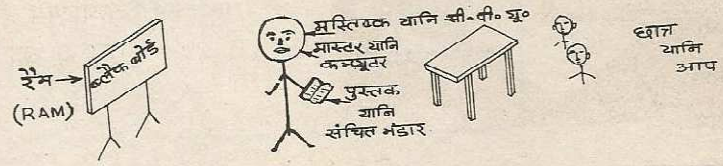

संचित भंडार (स्टोरेज मेमोरी) दो तरह के होते हैं:-

- एच0 डी0 डी0 (हार्ड डिस्क ड्राइव) और
- एफ0 डी0 डी0 (फ्लॉपी ड्राइव)

बड़े कम्प्यूटर में एफ0 डी0 डी0 की जगह मैगनेटिक टेप का भी प्रयोग होता है। एच0 डी0 डी0 नाम इसलिए पड़ा, क्योंकि भौतिक रूप से कम्प्यूटर के भीतर ही रहता है और इसे हटाना अत्यन्त ही कठिन यानी हार्ड है। जहाँ पहले 20 एम0 बी0 वाले डी0 डी0 प्रयुक्त होते थे वहीं अब 500 एम0 बी0 या 1000 एम0 बी0 (1जीबी) के हार्ड डिस्क का प्रयोग होता है। 500 एम से ज्यादा क्षमता वाली हार्ड डिस्क में संरचनात्मक अंतर होता है।

एफ0 डी0 डी0 (फ्लॉपी डिस्क ड्राइव) नाम इसलिए पड़ा, क्योंकि शुरू में इसमें प्रयुक्त होने वाले डिस्क लचीले (यानी फ्लॉपी) होते थे। ये चोकौर आकार के $5\frac{1}{4}$ इंच या $3\frac{1}{2}$ इंच के साइज में आते हैं एवं इनकी भंडारण क्षमता 360 के बी से लेकर 1.44 एम बी होती है। एच0 डी0 डी0 के विपरीत इन्हें कम्प्यूटर से बाहर रखा जाता है।

इनपुट या अन्त गामी उपस्कर

कम्प्यूटर को पहली सूचनाएँ संदेश इन्हीं के माध्यम से दिया जाता है सामान्य प्रयोग में आने वाले इनपुट स्रोत इस प्रकार

- टाइपराइटर जैसा की बोर्ड
- डिस्क में टेप किया हुआ प्रोग्राम
- दूसरा कम्प्यूटर (एक विशेष उपकरण) मोडेम द्वारा टेलीफोन लाइनों से संप्रेषित।
- आवाज

सामान्य प्रयोग में ज्यादातर टाइपराइटर जैसा की बोर्ड (कुंजी पटल) ही प्रयुक्त होता है । आजकल बहुधा 101 कुंजियों वाले कुंजी पटलों का प्रयोग किया जाता है जिसे आप लोगों में से कई लोगों ने देखा होगा ।

आउटपुट या बहिर्गामी उपस्कर-

कम्प्यूटर ने हमारे लिए जो कुछ भी किया उसका पता इन्हीं के माध्यम से चलता है । मास्टर वाली उदाहरण में सारी गणना के बाद मास्टर जिस तरह परिणाम को बोलकर सुनाता है वह एक तरह से आउटपुट है । सामान्य प्रयोग में निम्नलिखित आउटपुट या बहिर्गामी उपस्कर प्रयुक्त होते हैं-

- वी डी यू

- प्रिंटर या मॉनीटर

- फ्लॉपी डिस्क या हार्ड डिस्क

कम्प्यूटर में जो हम टी वी जैसा स्क्रीन देखते हैं वह दर असल वी डी यू है । इस पर हमें अन्त परिणाम देखते रहते हैं । जरूरत पड़ने पर इन्हें स्थायी रूप से संचित करने के लिए प्रिंटर का प्रयोग होता है । अगर अन्त परिणाम कम्प्यूटर में ही संचित है और इस सूचना का प्रयोग हम दूसरे कम्प्यूटर पर या उसी कम्प्यूटर पर बाद में करना चाहते हैं तो फ्लॉपी डिस्क का प्रयोग करना पड़ता है ।

ऑपरेटिंग सिस्टम- या कार्यकारी प्रणाली

कम्प्यूटर और हमारे बीच एक बहुत ही जरूरी दुभाषिया है- ऑपरेटिंग सिस्टम ।

इसके बिना कम्प्यूटर एक अत्यन्त ही बुद्धिमान व्यक्ति की तरह है जो न बोल सकता है और न कह सकता है । तमाम कम्प्यूटर भाषा को कम्प्यूटर इसी ऑपरेटिंग सिस्टम के माध्यम से समझता है । कम्प्यूटर और ऑपरेटिंग सिस्टम के बीच संवाद वॉयोस ।के माध्यम से स्थापित होता है ।

(वॉयोस) रौम के रूप के कम्प्यूटर में स्थायी रूप से स्थापित रहता है । सामान्य प्रयोग में आने वाले लोकप्रिय ऑपरेटिंग सिस्टम है ।

- डॉस

- विन्डोज

- यूनिक्स इत्यादि

आपके लिए क्या है ?

हार्डवेयर या साफ्ट वेयर कम्प्यूटर की भीतरी बनावट एवं डिजाइन हार्डवेयर का विषय है । एक अच्छा हार्डवेयर वैज्ञानिक बनने के लिए कम्प्यूटर विज्ञान- जिसे इंजीनियरिंग कॉलेजों में चार वर्षीय पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है का औपचारिक ज्ञान एवं डिग्री, आवश्यक है । कहना नहीं होगा ऐसे हार्डवेयर वैज्ञानिकों की संख्या अत्यंत ही सीमित है एवं ऐसी औपचारिक डिग्री के बिना इस क्षेत्र में प्रवेश करना भी बहुत मुश्किल है ।

कम्प्यूटर की विभिन्न भाषाओं में जो प्रोग्राम लिखा जाता है उसे साफ्टवेयर कहते हैं । अखबारों में निकलने वाले विभिन्न कम्प्यूटर संस्थानों के ढेर सारे विज्ञापन ऐसे साफ्टवेयर पाठ्यक्रम के लिए ही होते हैं । ये सामान्यतः निम्नलिखित कम्प्यूटर भाषा या मानक साफ्टवेयर पैकेज में प्रशिक्षण देते हैं- शब्द आधारित साफ्टवेयर पैकेज

यथा वर्ड स्टार, वर्ड परफैक्ट, आइक्रो साफ्ट वर्ड

- इन पैकेजों के अन्त में जो संख्या लिखी होती है, वह उस पैकेज के विकास स्तर को बताता है यथा वर्ड स्टार 4

वर्ड स्टार 3 से 1 पीढ़ी आगे होता है, वर्ड स्टार 6 वर्ड स्टार 4 से दो पीढ़ी आगे होता है ।

- डाटा पर आधारित साफ्टवेयर डी बेस ,फ़ॉक्स प्रो इत्यादि

- तालिका कार्यों के लिए साफ्टवेयर पैकेज ।

यथा- लोट्स इत्यादि ।

- विभिन्न उच्च स्तरीय कम्प्यूटर भाषाओं में प्रशिक्षण

यथा सामान्य कार्यों के लिए कोबोल वैज्ञानिक कार्यों के लिए पास्कल (या फोरट्रान) या प्रारम्भिक कार्यों के लिए बेसिक

- बहुद्देशीय उच्चस्तरीय कम्प्यूटर भाषा यथा-सी या सी + + इत्यादि ।

सबसे आसान पाठ्यक्रम होता है सॉफ्टवेयर पैकेज पर आधारित भाषाओं को सीखना । इसे कम्प्यूटर उद्योग या उससे संबंधित नौकरी के लिए प्रारम्भिक सोपान भी कह सकते हैं । इन्हें जानकर डाटा एन्ट्री ऑपरेटर या कनिष्ठ प्रोग्रामर इत्यादि की नौकरी मिल सकती है । उच्चस्तरीय भाषाओं को जानने पर प्रोग्रामर या सिस्टम पर्यवेक्षक इत्यादि में जाया जा सकता है ।

बहरहाल,कम्प्यूटर इतनी तेजी से फैल रहा है कि इसका प्रारम्भिक व्यावहारिक ज्ञान सबके लिए जरूरी है । इसके लिए कुछ ज्यादा जानने की जरूरत नहीं है । बस कम्प्यूटर को हाथ लगाइए कौन जानता है,कौन-सा जिन्न हाजिर हो जाएगा । □

येन केन प्रकोरेण सस्य कस्यपि देहिनः ।
संतोष जनयेअश्रस्तदेवेश्वर पूजरम् ॥

जिस किसी प्रकार से जिस किसी प्राणी को विद्वान संतोष दे सके- वास्तव में यही ईश्वर की पूजा है ।

सर्वे यत्र विनेतारः सर्वे पंडित मानिनः ।
सर्वे महत्वानिच्छन्ति तद् वृन्दामवसीदति ॥

जहाँ सब नेता बनना चाहते हैं, सब अपने को पंडित समझते हैं, सब अपना-अपना महत्व चाहते हैं वहाँ का मनुष्य-समुदाय नष्ट हो जाता है ।

जलमन्यासयोगेन शैलानां कुरुते क्षयम ।
कर्कशानां मृदु स्पर्श किमभयानान्न सांध्यते ॥

अभ्यास के सहयोग से कोमल-स्पर्शी जल कठोर पर्वतों का क्षय कर देता है । अभ्य स से किस वस्तु की सिद्धि नहीं होती है ?

यो यमर्थ प्रार्थयते यदर्थ घटतेडपि च ।
अवश्यं तदवाप्नोति न चेच्छ्रान्तो निवर्तते ॥

जो सिर्फ लक्ष्य को चाहता है और जिसके लिए प्रयत्न करता है, उसको वह अवश्य पा लेता है, यदि श्रान्त होकर उसको छोड नहीं देता ।

माइक्रो प्रोसेसर नियंत्रित ध्वनि सूचना प्रणाली

"स्पेशल क्लास रेल प्रशिक्षु-91" बैच का प्रोजेक्ट रिपोर्ट

प्रोजेक्ट टीम के सदस्य हैं—श्री अखिलेश मिश्रा, श्री रुपेश कोहली, श्री धर्मेन्द्र सन्वाल, श्री अमित शरण एवं श्री अंशुमाली रस्तोगी

1. **परिचय**—कभी-न-कभी हमलोगों में से हर कोई म्यूजियम गया होगा। वहाँ एक स्वाभाविक जिज्ञासा होती है—जानने की, और-और जानने की—ज्ञान पिपासा भला कभी बुझती है ? जब भी नजर किसी मॉडल, किसी मूर्ति, किसी पेंटिंग या किसी भी प्रदर्शित चीज पर ठहरती है तो मात्र नजर ही ठहरती है, मन तो दौड़ता रहता है उन बातों को जानने के लिए जिनसे ये तमाम वस्तुएँ सजीव हो उठें।

कितना सुखद आश्चर्य होगा जब हम किसी मोनालिसा के पेंटिंग के आगे रुकें तो कान में एक मधुर आवाज गूँज उठे "यह पेंटिंग मोनालिसा की है, इसे माईकेल एंजिलो.....।" आज के इस वैज्ञानिक युग में कुछ असम्भव नहीं है। एक उपाय जो तुरन्त नजर आता है वह है टेप रिकॉर्डर का प्रयोग। लेकिन म्यूजियम में आनेवाले आप अकेले तो नहीं हैं, हजारों लोग आते हैं। एक ही टेप को हजार बार सुना जाय तो शायद हजार की गिनती के बाद आवाज की जगह निकलेगा—एक शोर। हमारे घरों में जो टेप रिकॉर्डर होता है, उनमें चुम्बकीय टेप होता है जिसका ज्यादा प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

एक आदर्श उपाय है कि तमाम जानकारियों को ध्वनि संकेतों के रूप में माइक्रो प्रोसेसर के स्मरण भंडार (मेमोरी) में डाल दिया जाय। इस प्रणाली में हर एक प्रदर्शित वस्तु के लिए एक नोड (मिलन बिन्दु) होगा जो एक कम्प्यूटर द्वारा नियन्त्रित होता है। इच्छित नोड को चुनने पर आप जिस चीज के सामने खड़े होंगे उसके बारे में जानकारियाँ आपको सुनने को मिलेगी। इस ध्येय को ध्यान में रखते हुए ऐसी प्रणाली विकसित करने के लिए यह प्रोजेक्ट लिया गया है।

2. **प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ**—

(i) यह अभिकल्प अत्यन्त ही अन्तःपरिपूर्ण (मोड्यूलर) है और भविष्य में और विकसित करने के लिए पर्याप्त प्रावधान है।

(ii) पूरी अभिकल्पना में कोई भी गतिशील कलपुर्जा नहीं है; अतः इसका रखरखाव अत्यन्त ही आसान है।

(iii) आवाज की गुणवत्ता समय के साथ खराब नहीं होती है।

(iv) कोई भी सामान्य उपयोगकर्त्ता इसे प्रयोग कर सकता है।

(v) वर्त्तमान अभिकल्पना में 12 नोड यानी 12 प्रदर्शित वस्तुओं के लिए इसके माध्यम से जानकारियाँ दी जा सकती है।

(vi) वर्त्तमान में एक समर्पित पीसी-एटी—386/486 कम्प्यूटर का उपयोग किया जाएगा। लेकिन भविष्य में अन्य समान्तर कार्यों के लिए इसी कम्प्यूटर का प्रयोग कर इस प्रणाली की कीमत घटाई जा सकती है।

(vii) विभिन्न प्रकार के मोटर को स्वीच ऑन करने का प्रावधान भी इसमें अन्तर्निहित है जिससे आवाज के अलावा मॉडल को चलाया भी जा सकता है या आस-पास के सम्बन्धित वस्तुओं को गतिमान किया जा सकता है और प्रकाशपुंज का भी प्रावधान हो सकता है।

(ii) **आर. एस.—485 इन्टर कनेक्शन बस**

यह अत्यन्त ही उच्च गतिवाला सीरियल बस है। बस, ढेर सारे तारों (केबुल) के समूह या समूह के समान कार्य करनेवाले प्रणाली को कहते हैं जो एक साथ ढेर सारे संकेतों का संचालन या संचारण कर सकता है। जैसे लोकल बसों के द्वारा ढेर सारे यात्री एक साथ विभिन्न जगह जा सकते हैं।

इस अत्याधुनिक बस द्वारा एक बहुयुग्मित केबुल के द्वारा 1 करोड़ बिट प्रति सेकेण्ड की अपार रफ्तार से संकेतों का संचालन हो सकता है। इसी के द्वारा मास्टर कन्ट्रोलर और विभिन्न नोड एक दूसरे से जुड़े रहेंगे।

(iii) **नोड—**

नोड का ब्लॉक रेखाचित्र

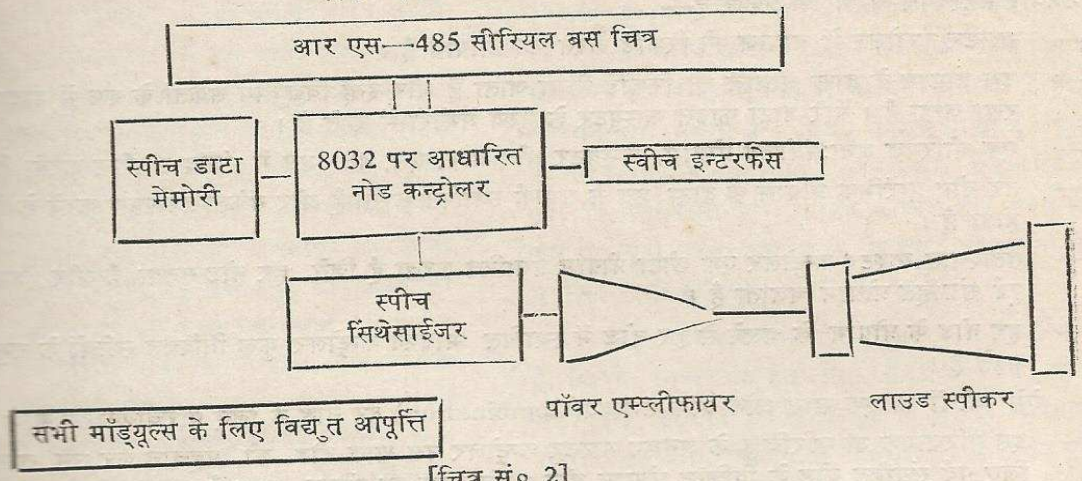

[चित्र सं० 2]

इन्हें प्रदर्शित किए जानेवाले वस्तुओं या मॉडलों के साथ लगाया जाएगा। प्रदर्शन की जरूरत के अनुरूप यथा ध्वनि संदेश की अवधि, प्रकाश की व्यवस्था इत्यादि के अनुसार इन्हें परिवर्तित किया जा सकता है। सामान्यतया एक नोड में निम्नलिखित उप-भाग होंगे।

हार्डवेयर—

(क) एकल बोर्ड कम्प्यूटर—यह सीमेंस 80 सी 535 माइक्रो कन्ट्रोलर होगा। यह उस नोड का स्थानीय नियन्त्रक होगा और केन्द्रीय मास्टर कन्ट्रोलर के साथ सामंजस्य आर. एस. 485 बस के द्वारा स्थापित करेगा। विभिन्न अन्य उपस्कर का प्रदर्शन यथा आवाज, ध्वनि, गति इत्यादि को भी नियन्त्रित करेगा।

(ख) आवाज डाटा बफर—चूँकि आवाज की गति कम्प्यूटर की तुलना में कम होती है, अतः कम्प्यूटर के ध्वनि संकेत जो डिजिटल विद्युतीय संकेतों के रूप में संचालित होते हैं, उन्हें जमा रखने के लिए एक बफर की जरूरत होती है, ठीक उसी प्रकार जैसे एक साल में हुए अत्यधिक अन्न के पैदावार को अगले साल प्रयोग करने के लिए भण्डार अनाज बफर रखती है। हर बफर में एक एम बी का गतिमान रैम (1 MBD RAM) का प्रावधान है जिससे दो मिनट तक के संदेश को बफर के रूप में हमेशा रखा जा सकता है।

(ग) ध्वनि संयोजक (Speech Synthesiser)—चूँकि कम्प्यूटर में ध्वनि संकेत, विद्युतीय संकेत के रूप में (Digital Storage) रहता है। अतः इन्हें वापस मानव ध्वनि के रूप में बदलने के लिए इसकी जरूरत है। एक लाउडस्पीकर और एम्प्लीफायर भी जरूरी है।

(घ) स्वीच इन्टरफेस (Switch Interface)—यह भी माइक्रो कन्ट्रोलर द्वारा चालित एक प्रोग्राम के माध्यम से हर नोड के लिए स्वीच का काम करेगा। विभिन्न प्रकार के स्वीच प्रयुक्त किए जा सकते हैं। यथा—

(ii) **आर. एस.—485 इन्टर कनेक्शन बस**

यह अत्यन्त ही उच्च गतिवाला सीरियल बस है। बस, ढेर सारे तारों (केबुल) के समूह या समूह के समान कार्य करनेवाले प्रणाली को कहते हैं जो एक साथ ढेर सारे संकेतों का संचालन या संचारण कर सकता है। जैसे सीकन बसों के द्वारा ढेर सारे यात्री एक साथ विभिन्न जगह जा सकते हैं।

इस अत्याधुनिक बस द्वारा एक बहुयुग्मित केबुल के द्वारा 1 करोड़ बिट प्रति सेकेण्ड की अपार रफ्तार से संदेशों का संचालन हो सकता है। इसी के द्वारा मास्टर कन्ट्रोलर और विभिन्न नोड एक दूसरे से जुड़े रहेंगे।

(iii) **नोड—**

नोड का ब्लॉक रेखाचित्र

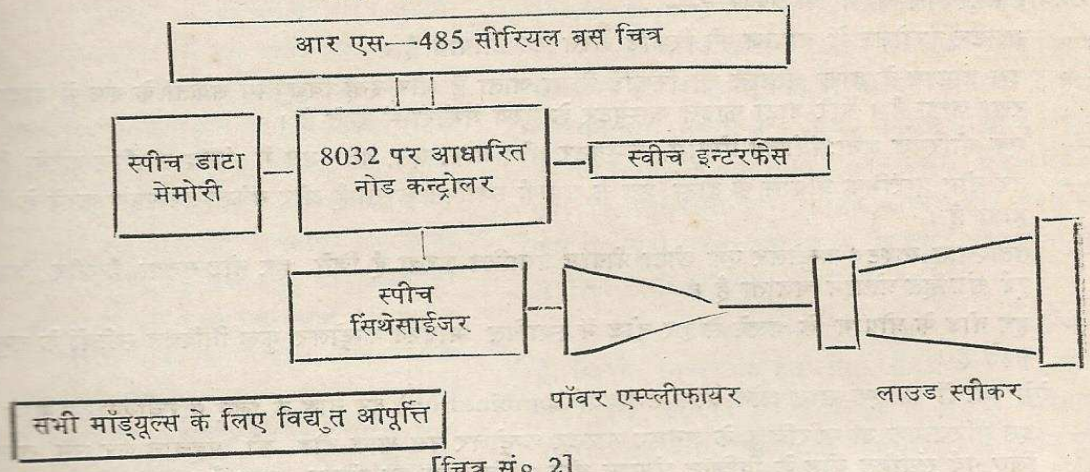

[चित्र सं० 2]

इन्हें प्रदर्शित किए जानेवाले वस्तुओं या मॉडलों के साथ लगाया जाएगा। प्रदर्शन की जरूरत के अनुरूप यथा ध्वनि संदेश की अवधि, प्रकाश की व्यवस्था इत्यादि के अनुसार इन्हें परिवर्तित किया जा सकता है। सामान्यतया एक नोड में निम्नलिखित उप-भाग होंगे।

हार्डवेयर—

(क) एकल बोर्ड कम्प्यूटर—यह सीमेंस 80 सी 535 माइक्रो कन्ट्रोलर होगा। यह उस नोड का स्थानीय नियन्त्रक होगा और केन्द्रीय मास्टर कन्ट्रोलर के साथ सामंजस्य आर. एस. 485 बस के द्वारा स्थापित करेगा। विभिन्न अन्य उपस्कर का प्रदर्शन यथा आवाज, ध्वनि, गति इत्यादि को भी नियन्त्रित करेगा।

(ख) आवाज डाटा बफर—चूँकि आवाज की गति कम्प्यूटर की तुलना में कम होती है, अतः कम्प्यूटर के ध्वनि संकेत जो डिजिटल विद्युतीय संकेतों के रूप में संचालित होते हैं, उन्हें जमा रखने के लिए एक बफर की जरूरत होती है, ठीक उसी प्रकार जैसे एक साल में हुए अत्यधिक अन्न के पैदावार को अगले साल प्रयोग करने के लिए सरकार अनाज बफर रखती है। हर बफर में एक एम बी का गतिमान रैम (1 MBD RAM) का प्रावधान है जिससे दो मिनट तक के संदेश को बफर के रूप में हमेशा रखा जा सकता है।

(ग) ध्वनि संयोजक (Speech Synthesiser)—चूँकि कम्प्यूटर में ध्वनि संकेत, विद्युतीय संकेत के रूप में (Digital Storage) रहता है। अतः इन्हें वापस मानव ध्वनि के रूप में बदलने के लिए इसकी जरूरत है। एक लाउडस्पीकर और एम्प्लीफायर भी जरूरी है।

(घ) स्वीच इन्टरफेस (Switch Interface)—यह भी माइक्रो कन्ट्रोलर द्वारा चालित एक प्रोग्राम के माध्यम से हर नोड के लिए स्वीच का काम करेगा। विभिन्न प्रकार के स्वीच प्रयुक्त किए जा सकते हैं। यथा—

घर में पाये जानेवाले कॉलबेल के स्वीच से लेकर इतना अत्याधुनिक स्वीच जो प्रकाश या इन्फ्रारेड तरंग द्वारा संचालित स्वीच; कि आप मॉडल के सामने खड़े भर हुए और यह बात कम्प्यूटर को पता चल गई और उसने आपको किसी पुराने तलवार के राजा का नाम..... बताना शुरू कर दिया।

सॉफ्टवेयर (Software)— हर माइक्रोप्रोसेसर को चलाने के लिए सॉफ्टवेयर यानी कम्प्यूटर प्रोग्राम की जरूरत पड़ती है। यह कम्प्यूटर की भाषा में मानव लिखित प्रोग्राम होता है। हर नोड के लिए अलग-अलग शुरूआती प्रोग्राम होगा जिसे इप्रॉम (EPROM) पर डाला जाएगा और इसके माध्यम से आर एस-485 बस से जोड़ना सम्भव हो पाएगा। एक बार जुड़ने के पश्चात् यह प्रोग्राम नोड को चलाने के लिए स्वचालित रूप से काम करेंगे।

5. कैसे कार्य करती है यह प्रणाली ?

क्रमवार महत्त्वपूर्ण चरण इस प्रकार हैं—

— मास्टर कन्ट्रोलर में आवाज को रिकॉर्ड करने का प्रोग्राम है।

— इस प्रोग्राम के द्वारा आवाज को रिकॉर्ड किया जाता है और इन्हें विद्युतीय संकेतों के रूप में डाटा फाइल में रखा जाता है। सारे डाटा फाइल कम्प्यूटर के मुख्य मेमोरी में रहते हैं।

— एक सीरियल अन्तःसंयोजन प्रोग्राम, कम्प्यूटर और आर. एस. 485 बस में संवाद स्थापित करता है।

— हर नोड प्रारंभिक प्रोग्राम के द्वारा बस से सम्पर्क स्थापित करता है और संकेतों को ग्रहण करने के लिए तैयार होता है।

— तत्पश्चात् मास्टर कन्ट्रोलर एक छोटा प्रोग्राम प्रसारित करता है जिसे हर नोड सुनता है और अपना-अपना पूर्व संग्रहित प्रोग्राम चलाता है।

— हर नोड के प्रोग्राम के चलने से हर नोड में स्थापित माइक्रो कन्ट्रोलर कुछ निश्चित स्वीचों के समुच्चय को पढ़ते हैं।

— ऐसे स्वीचों का एक खास ऑन/ऑफ समन्वय(Combination) हर नोड के लिए परिचायक का काम करता है।

— इस परिचायक या परिचिह्न के अनुरूप मास्टर कन्ट्रोलर उस खास नोड को पहचान कर उस खास नोड के लिए पूर्व संग्रहित नोड के विशिष्ट प्रोग्राम और ध्वनि डाटा का संचार करता है।

— अन्ततः हर नोड में प्रतिस्थापित उसका माइक्रो कन्ट्रोलर अपने प्रोग्राम को केन्द्रीय मास्टर कन्ट्रोलर के निर्देशों के अनुरूप चलाता है।

और आप मॉडल तथा ऐतिहासिक वाष्प इंजन की छुक-छुक सुन सकते हैं, पहियों के चलने की प्रतीकात्मक गति देख सकते हैं और सुन सकते हैं—"यह रेल इंजन रजवाड़ों के जमाने में छोटी लाइन पर..... ।"

इन सबके बाद केन्द्रीय मास्टर कन्ट्रोलर बस आर वीटर मोड (यानी पर्यवेक्षक) की भूमिका में आ जाता है और हर नोड पर नजर रखे रहता है। अगर संदेश 2 मिनट से लम्बा हो तो यह और ध्वनि डाटा उपलब्ध कराता है। किसी नोड के खराब हो जाने पर इसे तुरन्त पता चल जाता है और यह उपयोगकर्त्ता को इसके बारे में सूचित करता है एवं अगर कोई ऐसा उपाय हो जिससे यह खराबी दूर हो सके तो यह भी सूचित करता है।

बात किसी परियों की गाथा से उद्धृत लगती है, लेकिन यह हकीकत है। हमारा ग्रुप वर्त्तमान में इस पर कार्य कर रहा है। ऐसे एक प्रोटोटाइप का इर्मी (भारतीय रेल यांत्रिक एवं विद्युत् अभियन्त्रण संस्थान, जमालपुर) में विकास किया जा रहा है।

10 नोडों वाली ऐसी एक प्रणाली की कीमत तकरीबन 2.5 लाख रुपये होगी। ऐसी एक सम्भाव्य रिपोर्ट, ऐसी प्रणाली के लिए राष्ट्रीय रेल म्यूजियम, नई दिल्ली, को भी दी जा चुकी है ताकि इस पर आधारित व्यावहारिक प्रणाली का विकास किया जा सके। सबसे बड़ी बात यह है कि इसी रिपोर्ट के आधार पर राष्ट्रीय रेल म्यूजियम ने ध्वनि संदेश प्रणाली की स्थापना के लिए निविदाएँ आमंत्रित की है। इर्मी जमालपुर भी इस निविदा के लिए उन दो में से एक संस्थान हैं जिनके प्रस्ताव विचारार्थ लम्बित हैं।

राष्ट्रीय हित में लोको का अनुरक्षण

अखिल भारतीय पी० एस० यू० संगोष्ठी

□ अनिमेष कुमार सिन्हा

विगत 20 फरवरी' 95 को जमालपुर रेल कारखाना के स्वर्णिम इतिहास में एक और नया अध्याय जुड़ गया, जब विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों की एक "अखिल भारतीय संगोष्ठी" आयोजित की गई। अपनी तरह की पूरे भारतीय रेल में यह पहली संगोष्ठी थी, जिसे आयोजित करने का गौरव जमालपुर को मिला। जमालपुर रेल कारखाना पूरे पूर्वी भारत में इस माइने में अनूठा है कि विन्ध्याचल से लेकर पाराद्वीप तक फैले विस्तृत भूभाग के सार्वजनिक उपक्रम अपने डीजल इंजन के रख-रखाव एवं अनुरक्षण हेतु जमालपुर कारखाना ही आते हैं। वर्ष 94-95 में जमालपुर कारखाना को सार्वजनिक उपक्रमों के इंजनों के रख-रखाव से 4 करोड़ रुपये की आय हुई थी जो कि उपलब्ध जानकारी के अनुसार पूरे भारतीय रेल में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। इस वर्ष रेकॉर्ड 9 इंजनों की मरम्मत की गई थी। काम में बढ़ोतरी एवं सार्वजनिक उपक्रमों की बढ़ती अपेक्षाओं के कारण ऐसी संगोष्ठी की जरूरत महसूस की जा रही थी, जहाँ रेल और विभिन्न सार्वजनिक उपक्रम एकाट्ठे बैठकर बातचीत कर सकें और आपसी समस्याओं पर मनोनुकूल हल निकाल सकें और बेतहर समन्वय से काम कर सकें, क्योंकि डीजल इंजन एक बहुमूल्य निधि है और राष्ट्रीय सम्पत्ति है।

संगोष्ठी श्री अरुण कुमार तिवारी (मुख्य कारखाना प्रबन्धक) की अध्यक्षता में श्री सुभाष गोडबोले (निदेशक/इर्मी) के हाथों उद्घाटित हुई। बोकारो स्टील कारखाना, दुर्गापुर स्टील कारखाना, राष्ट्रीय ताप निगम फरक्का, आई० ओ० सी० हलदिया, हलदिया गोदी परिसर के वरिष्ठ पदाधिकारी इस संगोष्ठी में उपस्थित थे। साथ ही जमालपुर कारखाना एवं इर्मी के अफसरान ने भी संगोष्ठी में शिरकत की।

अतिथियों का स्वागत श्री अनिमेष कुमार सिन्हा (कार्य प्रबन्धक डीजल) ने किया।

उद्घाटन भाषण के दौरान मुख्य कारखाना प्रबन्धक ने निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बातें कहीं :—

(1) जमालपुर कारखाना ने डब्ल्यू० डी० एम० 2—डब्ल्यू० डी० एस० 6 एवं डब्ल्यू० डी० एस० 4—की मरम्मत में विशिष्टता हासिल की है और ऐसे किसी भी इंजन का चाहे वह कितनी भी टूटी अवस्था में हो, मरम्मत कर सकता है। विगत में बुरी तरह टूटे हुए इंजनों की मरम्मत की गयी, जिसमें बी० एस० एल० 41, 59, सिंगरोली-001 इत्यादि शामिल हैं। इनमें से कुछ ऐसे बुरी तरह टूटे हुए थे कि दूसरे कारखानों ने मरम्मत करने से इंकार कर दिया था।

(2) ज्यादातर समस्याएँ समन्वय से सम्बन्धित हैं, जिनके निराकरण हेतु ऐसी संगोष्ठियों की अति महत्त्वपूर्ण भूमिका है। परिवहन के क्षेत्र में भारतीय रेल ने अतुलनीय विशिष्टता हासिल की है और पूरे राष्ट्र में सर्वश्रेष्ठ तकनीकी क्षमता उनके पास है, जिसका फायदा सब उठा सकते हैं।

(3) डीजल इंजन के कलपूर्जों के उत्पादन के बारे में उन्होंने सबको अवगत कराया। साथ ही उन्होंने यह भी सूचित किया कि बढ़ते दामों के बावजूद बेहतर उत्पादकता के कारण पी० ओ० एच० की कीमत कम एवं स्थिर रखने में जमालपुर कारखाना कामयाब रहा है।

निदेशक, इर्मी ने प्रशिक्षण की जरूरतों पर प्रकाश डालते हुए निम्नलिखित मुख्य बातें कही :—प्रिवेंटिव अनुरक्षण का कोई विकल्प नहीं है। एक टाका वक्त का नौ टाका बेवक्त का। ब्रेक डाउन अनुरक्षण की जगह प्रिवेंटिव अनुरक्षण की सख्त जरूरत है। हरेक स्तर के लिए अलग तरह के प्रशिक्षण की जरूरत है। इर्मी, सार्वजनिक उपक्रमों के अफसर एवं पर्यवेक्षक को प्रशिक्षण दे सकता है।

40 वर्ष पुरानी तकनीक को आज के जमाने की आधुनिक तकनीक से सामंजस्य बिठाये रखना एवं

उससे कंधा से कंधा मिलाये चलना एक विलक्षण उपलब्धि है, जिसका गौरव रेल को है।

सार्वजनिक उपक्रमों के विभिन्न प्रतिनिधियों ने निम्नलिखित बातें कहीं :—

1. कुछ विशेष हालातों में जरूरी औपचारिकता में थोड़ी ढील जरूरी है।

2. रुट परमीट निर्गत होने में काफी विलम्ब होता है, कभी-कभी महीनों लग जाते हैं। जिनका निराकरण जरूरी है।

3. इंजन में विशेष परिवर्त्तन सार्वजनिक उपक्रमों की मांग पर किया जाना चाहिए।

कारखाना प्रबंधक (डीजल) ने उन्हें बेहतर सेवा उपलब्ध कराने के लिए जरूरी उपायों से अवगत कराया।

1. रुट परमीट निर्गत करने हेतु मुख्यालय स्तर पर वैयक्तिक समन्वय किया जाता है। इंजन नं० पहले से ही सूचित हो जाने पर रुट परमीट को समय पर उपलब्ध कराने की जिम्मेवारी उन्होंने ली, इसका सब ने स्वागत किया। द्रष्टव्य है कि संगोष्टी के बाद मुख्यालय स्तर पर उठाये गये कदमों के उपरान्त इन रुट परमीटों का निष्पादन दो दिनों के अन्दर होना सम्भव हो पाया।

2. पी० ओ० एच० के उपरान्त बेहतर रख-रखाव हेतु त्वरित अनुरक्षण दल का गठन किया गया है, जो दो-तीन दिनों के अन्दर ही पहुँच कर उनकी समस्याओं का निष्पादन कर सकते हैं।

3. पी० ओ० एच० के उपरान्त लोको को एस्कार्ट (escort) के साथ भेजा जाता है, ताकि लोको जल्द-से-जल्द भेजा जा सके और मार्ग में उत्पन्न तकनीकी समस्याओं को ठीक किया जा सके।

4. अन्य औपचारिकतायें जिनमें समय लगता है, जैसे—टी० एक्स० आर० रपट लोको का मुवमेंट इत्यादि। उनमें भी रेल हर सम्भव सहायता देगी।

5. उपमुख्य यांत्रिक इंजीनियर (समापन) श्री ए० के० मंडल ने अनुरक्षण के दौरान छुट जाने वाली छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने बताया कि ऐसी छोटी गलतियों के कारण इंजन को काफी क्षति पहुँचती है और लाखों रुपये का नुकसान होता है, यथा—क्रैंक शाफ्ट का विचलन, एस० पाइप का एलाइनमेंट, मुख्य बियरिंग का बदलना इत्यादि।

संगोष्ठी की समाप्ति पर श्री अनिमेष कुमार सिन्हा (कारखाना प्रबन्धक, डीजल) ने सार्वजनिक उपक्रमों के प्रतिनिधियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस संगोष्ठी के कारण पी० एच० यू० के इंजनों के आवधिक मरम्मत को एक नई रफ्तार मिली है, जिसके कारण नये वित्तीय वर्ष के प्रथम चार महीने में ही ऐसे चार पी० एस० यू० के इंजनों का पी० ओ० एच० एवं पाँचवे इंजन का वार्षिक अनुरक्षण किया जा चुका है। साथ ही 15 अगस्त तक डेढ़ करोड़ रुपये की प्राप्ति विभिन्न उपक्रमों से जमालपुर कारखाने को हुई है।

श्री अनिमेष कुमार सिन्हा
कारखान प्रबन्धक (डीजल)

पुलकामो हि मर्त्यः
मनुष्य स्वभाव से ही बहुत कामनाओं वाला होता है।

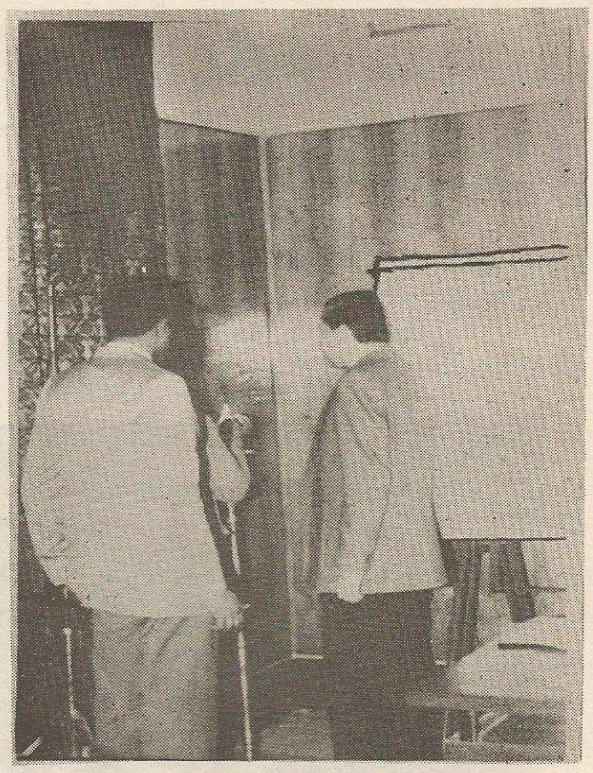

[संगोष्ठी का उद्घाटन दीप जलाकर करते हुए श्री सुभाष गोडबोले, निदेशक, इर्मी साथ में श्री अनिमेष कुमार सिन्हा, कार प्रंबधक (डी.)]

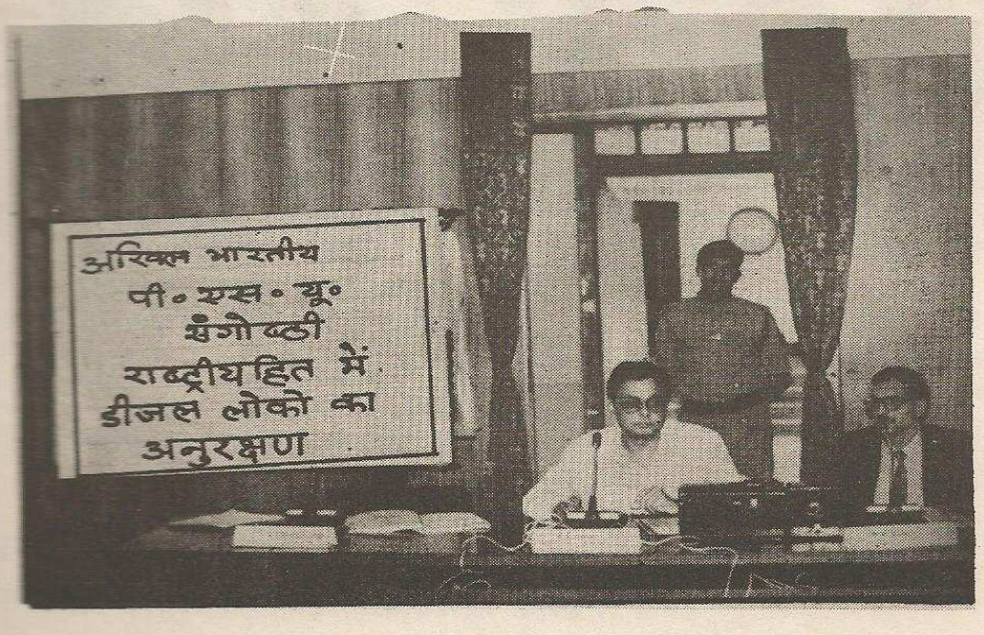

.[मुख्य अतिथि श्री अरुण कुमार तिवारी, मु. का. प्र. , जमालपुर एवं श्री अशोक कुमार जैन, वरि. प्राध्यापक इर्मी संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए]

[विभिन्न शीर्ष सार्वजनिक उपक्रमों के
उपस्थित प्रतिनिधि]

जमालपुर में स्काउट रैली, 1996

[illegible] को प्रेस में जाने के ठीक पहले जमालपुर [illegible] स्काउट्स एण्ड गाइड्स, जिला जमालपुर द्वारा 33 वाँ [illegible] रैली और कैम्पुरी मनाया गया। इस रैली में पू.रे. के सभी [illegible] जिलों से लगभग 1200 से अधिक स्काउट्स गाइड्स, [illegible] और रोवर्स ने भाग लिया।

इन तीन दिनों की रैली के दौरान 11.1.96 से 13.1.96 तक पू.रे. के स्काउट्स एवं गाइड्स ने समाज में फैली बुराइयों को दूर करने के लिए तथा सामाजिक उत्थान के विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस कार्यक्रम के माध्यम से भारत स्काउट्स एवं गाइड्स ने भारतीय संस्कृति में "अनेकता में एकता" का संदेश दिया।

जमालपुर जिला के लिए यह गौरव की बात है कि जमालपुर [illegible] रैली मनाई जा रही है। सच तो यह है कि दो दशकों [illegible] के बाद यह रैली जमालपुर में मनाई गई। पिछले [illegible] के दौरान सामुदायिक विकास एवं सामाजिक उत्थान के लिए जमालपुर जिला ने निश्चित रूप से बहुत ही [illegible] काम किया है।

जमालपुर स्काउट्स एवं गाइड्स के क्रियाकलापों का [illegible] से ज्ञात होता है कि जमालपुर स्काउट्स एण्ड गाइड्स [illegible] स्काउट संचालन के द्वारा बताए गए आदेशों के अनुपालन [illegible] किया। वयस्क निरक्षरता योजना एवं सामाजिक [illegible] को अपनाने के लिए खास कर कुछ गाँवों को [illegible] बलियारपुर, नौवागढ़ी, महमदा, फुलका और धरहरा। [illegible] विभिन्न जगहों में स्काउट्स एण्ड गाइड्स के [illegible] स्काउट संचालन के मदद के लिए जिला ने [illegible] इस प्रकार की जैसे रोवर्स स्पोट्स [illegible] (1964) रोवर्स मनोरंजन क्लब (1970) ओपन ग्रुप [illegible] ग्रुप (1978)

रेल कर्मचारी जब कभी स्काउट्स– कार्यों में लगाये जाते हैं, वे एक पंचांग वर्ष में अधिकतम 15 दिनों के दैनिक भत्ता एवं यात्रा भत्ता पाने के हकदार होते हैं।

रेलवे बोर्ड ने प्रत्येक रेलवे को स्काउट्स एवं गाइड्स नियुक्त करने का आदेश दिया है जिसके तहत वे ग्रुप 'सी' पद के लिए प्रत्येक वर्ष अधिकतम चार को तथा ग्रुप 'डी' पद के लिए प्रत्येक मंडल प्रत्येक वर्ष किन्हीं दो को नियुक्त कर सकते हैं। वे कर्मचारी, जो स्काउटिंग के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करने जाते हैं, उनके सेवा अभिलेख में उपयुक्त प्रविष्टियाँ कर दी जाती हैं।

स्काउट्स एवं गाइड एक गैर राजनैतिक एवं स्वैच्छिक संगठन है। यह आग जनता के लिए शैक्षणिक आन्दोलन है। साथ ही जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय से अलग, बिना किसी भेद-भाव के, यह सबों के लिए है। इस आन्दोलन का उद्देश्य बड़ा ही व्यापक है और इनके क्रिया– कलाप समाज एवं समाज से जुड़े लोगों के लिए हैं। किसी भी नागरिक को स्वावलम्बी बनाने में इसकी अहम् भूमिका है और सामाजिक स्तर पर सामाजिक जीवन से जुड़े लोगों में स्वावलम्बन की भावना पैदा करना ही इस संगठन का मूल उद्देश्य है। समाज के सुख-दुख के साथ-साथ अपने आपको अस्तित्व में रखने में किसी भी नागरिक को सहायता पहुँचाता है।

स्काउट्स एवं गाइड के बीच "चरित्र निर्माण" एवं "अनुशासन की भावना जाग्रत करना" संबंधी विशेषताओं को भारतीय रेल ने भी मान्यता प्रदान की है। यह स्वीकार किया गया है कि ये सारे गुण रेल कर्मचारियों के लिए अनिवार्य हैं, क्योंकि इन्हें (रेल कर्मचारियों को) आम जनता के सम्पर्क में रहना पड़ता है।

□ **अंगराज मोहन**
कारखाना कार्मिक अधिकारी
पूर्व रेलवे, जमालपुर।

उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा।
संपतौ च विपत्तौ च महतामेकरू पता॥

सूर्य उदय के समय लाल होता है और अस्त के समय भी लाल होता है। इसी प्रकार महान पुरुष संपत्ति में और विपत्ति में एक रूप ही रहते हैं।

[स्काउट परेड का निरीक्षण करते हुए श्री ए.पी. मुरुगेशन, महाप्रबंधक पूर्व रेलवे साथ में श्री एन.सी. बिन्दलिश, मुख्य रेल पथ इंजीनियर, पूर्व रेलवे]

[स्काउड परेड की सलामी लेते हुए श्री ए. जी. मुरुगेशन, महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे]

जन-चेतना

आजादी पाने की प्रबल इच्छा एवं लालसा ने समस्त भारतीयों को एक सूत्र में पिरो कर तिरंगा को समर्पित कर दिया। और तिरंगे ने हमें स्वतन्त्र भारत का स्वतन्त्र नागरिक बना भी दिया। लेकिन क्या हम इस स्वराज्य एवं आजादी के वास्तविक अर्थ को कभी समझ पाये, कदापि नहीं। शायद हमने इसे एक खूबसूरत खिलौना समझा तथा उससे जीभर खेलने के बाद फिर उसी पुरानी स्थिति अर्थात् परतन्त्रता की ओर आकर्षित हो उसी राह पर अग्रसर होते जा रहे हैं।

दासकाल आनन्दातिरेक में हम जड़ हो गये हैं तथा दिशाज्ञान के अधीन हम अपने स्वयं के हेतु सुख- सुविधा के जाल में अपनी दुनिया को संकुचित करने लग गये हैं। हमारे "हम" शब्द की शक्ति समाप्त हो गयी और स्वार्थवश "मैं" में परिवर्तित हो गई। परिवार टूटे, समाज बिखरा तथा राष्ट्र विनाश के कगार पर आ गया। इसका एक मूल कारण यह भी है कि पहले हम विदेशियों के अधीन थे, पर अब स्वदेशियों के मुट्ठी भर अभिजात्य स्वदेशियों ने सारे भारत पर अपना आधिपत्य जमा लिया है।

फिर आवश्यकता है एक आजादी की लड़ाई लड़ने की। और इस लड़ाई को जीतने का अमोघ अस्त्र है ज्ञान का प्रकाश। अतः सर्वप्रथम हमें– इस अज्ञानता के अंधकार को चीर कर ज्ञान का प्रकाश आलोकित कर जन-चेतना को सही दिशा देना है।

प्रकृति ने उपहारस्वरूप अपनी सारी अमूल्य निधि एवं सम्पदा "ज्ञान" के रूप में हम पर लूटा दी है। लेकिन भौतिक सुखों की प्राप्ति तथा भोग-विलासिता की वस्तुओं को जुटाने की होड़ में हमने प्रकृति की इस देन को लुप्तप्राय कर दिया है। प्रसिद्ध शायरी ने कहा है कि भोग-विलास में लिप्त व्यक्तियों का अन्त असामयिक एवं दुखद अन्त हुआ है। ऐसा अपने आसपास होते देखकर भी हम अपने मन की आँखों को मूंदे अन्धकार आँखों से स्वप्न की दुनिया में विचरण करते हुए वस्तु आकाश को ही पाने की लालसा करते रहे हैं। अतः आवश्यकता है उस ज्ञान- रूपी सम्पदा को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने की। और यहीं पर एक लोकोक्ति चरितार्थ होती है। "शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।"

शारीरिक स्वस्थता के लिए आवश्यक है स्वच्छ वातावरण, स्वस्थ विचार एवं स्वस्थ आचरण। यों ये हैं तो हमारी सांस्कृतिक धरोहर। पर ये समय की धूल से धूमिल हो गयी हैं। आवश्यकता है इन्हें अपने प्रयासों से चमकाने की तथा अपनी भूलों को सुधारने की। हाँ ! यह हमारी भयंकर भूल ही तो है कि हमने अज्ञानतावश इस धरती पर मानव- रूपी बोझ इतना ज्यादा बढ़ा दिया है कि प्रकृति भी असंतुलित होकर हमसे प्रतिशोध लेने की तैयारी कर बैठा है।

आज इस मन्थन एवं विवेचना की आवश्यकता है कि क्या हम प्रकृति की असीम शक्ति के समक्ष इस युद्ध में टिक पायेंगे ? मैं समझता हूँ ऐसा सोचना भी हमारी बुद्धिता की परिचायक होगी। अतः क्यों न हम प्रकृति से समझौता कर धरती पर मानव- रूपी बोझ को और न बढ़ाने की भीष्म प्रतिज्ञा करें। ऐसा करने से आने वाले समय में शायद प्रकृति हमें नया कर अपनी सम्पदाओं को बटोर हम पर न्योछावर कर हमें कृतार्थ कर दे। और गागर में सागर समा जाय। जी हाँ, ज्ञान- रूपी गागर अपने में अनेक सागरों को समाहित करने की क्षमता रखता है।

इन सारी बातों का यही निष्कर्ष निकलता है कि जन-चेतना का जागरण करना अतिआवश्यक हो गया है। जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाना अति आवश्यक हो गया है। अन्यथा भारतवर्ष की वर्तमान स्थिति निकट भविष्य में ऐसी विस्फोटक अवस्था में पहुंच जाएगी जहाँ पर आजादी बेमानी होगी एवं हमारे गणतन्त्र की आधारशिला का सर्वनाश हो जाएगा। आवश्यकता है उस लोकोक्ति को सार्थक करने की "सुबह का भूला अगर शाम को घर वापस आ गये तो उसे भूला नहीं कहते।" अभी भी वक्त है। हमें हर प्रयास करना चाहिए कि हम इस विस्फोटक बढ़ती आबादी पर शीघ्र विराम लगावें और अपने देश, समाज एवं परिवार को विनाश से बचा लें। अन्यथा गुजरा वक्त फिर वापस पकड़ में नहीं आएगा। और वक्त को पकड़ने के लिए कहीं और जाने की जरूरत नहीं है। शुरूआत हमें ही करनी है। बूंद-बूंद से घड़ा भरता है और हर एक बूंद यानी हर एक जन की अहमियत है। दूसरों की ओर देखेंगे तो फिर वही कहावत चरितार्थ होगी "अकबर के समय में एक मुनादी हुई थी- एक तालाब को दूध से भरने की, शहर के हर एक नागरिक को बस एक-एक लोटा दूध भरना था, परन्तु हर ने सोचा कि बाकी लोग तो दूध भरेंगे ही, मैं एक लोटा पानी भर दूँ तो वह दूध में छुप ही जाएगा। नतीजा अगली सुबह तालाब में बस पानी ही पानी था।"

तो शुरूआत अपने यहाँ से ही करनी है। हर घर में जन-चेतना हो तो राष्ट्र चैतन्य नहीं तो और क्या होगा ?

□ डा. विजय कान्त झा
चिकित्सा अधीक्षक
पूर्व रेलवे, जमालपुर

उलटा चले से औलिया

सुना है, आपने भी नववर्ष धूमधाम से मनाया, खूब बम-पटाखे छोड़े। हमारी ओर से भी आपको नये वर्ष की शुभकामनाएं। आपका नववर्ष मंगलमय हो। आपने देखा ही होगा कि किस तरह पुराना वर्ष कुहासों में अपना मुंह छिपाये आहिस्ते से खिसक गया। मनुष्य जीवन भर जो कुछ करता है, उसका लेखा-जोखा उसकी आत्मा अंत समय में ही करती है, और परिणामस्वरूप वह रोता हुआ मुंह ढंककर इस संसार से चला जाता है। पुराने वर्ष की कुछ ऐसी ही स्थिति थी। खैर ...।

संपादक जी, पता नहीं क्यों, लोग किसी खास वर्ष को, किसी खास युग को, किसी खास सरकार को बदनाम किया करते हैं, उनपर उगलियाँ उठाया करते हैं, जबकि हर युग में, हर काल-खंड में, कुछ न कुछ कांड हुआ ही करते हैं। त्रेता जैसे पवित्र युग को ही देखें, जब राजा दशरथ और राजा राम जैसे लोग थे। उस समय भी बहुत सारे कांड हुए, बहुत सारी घटनाएं घटीं। नारियों पर अत्याचार हुए, साधु– सज्जन सताए गये, खून की होलियाँ खेली गयीं। तुलसीदास जी ने इन कांडों को सिलसिलेवार ढंग से अपनी रामायण में स्थान दिया है, जैसे बाल कांड, अयोध्या कांड, अरण्य कांड आदि। उसी तरह आज भी अनेकानेक कांड हो रहे हैं, जैसे, शेयर कांड, जैन हवाला कांड, टेलीकॉम कांड, बम्बई कांड, पुरुलिया कांड आदि। इन कांडों के लिए आज की सरकार प्रताड़ित की जा रही है, चारो ओर हो- हल्ला और हंगामा का माहौल खड़ा है। लेकिन त्रेतायुग में हुए कांडों के लिए कुछ नहीं कहा गया, उस युग को कुछ नहीं कहा गया। आज इतनी बदनामी-इतनी हाय तौबा, यह कलयुग आज बदनाम है।

कुछ लोगों को गिला-शिकवा करने की आदत होती है, संपादक जी ! आपने देखा था कि शहर की गंदगी के कारण गया हुआ प्लेग फिर से लौट आया था। पर, लोग उस गंदगी की ओर न देखकर चूहे की ओर देखने लगे थे। अच्छे खासे लोग भी मुसहर हो गये थे, मूसा मारने लगे थे, जबकि मनुष्य स्वयं मूसा है। किसी संत ने कहा है-

मुस्कल में अदभुत मूसा,
जबसे संसार बना, तब से है घूसा।

और, इतना ही नहीं, संपादक जी, आप तो जानते हैं कि चूहा गणपति गणेश जी का वाहन है। और, गणेश जी हमारे सारे कार्यों के मुख्य प्रवर्तक हैं। गृह-निर्माण हो, विवाह हो, सत्यनारायण की पूजा हो, शुभारंभ के प्रथम वंदनीय देवता गणेश ही होते हैं। इस तरह, हम गणेश जी को तो मानते हैं, पूजते हैं, लेकिन उनके वाहन मूसा को हम मारते हैं। यह कैसी शराफत है ! चौराहे-चौराहे पर, गली-कूचे में लोग चिल्लाते रहते हैं -

मूसा मारने की दवा लो,
चूहा मारने की दवा लो।

क्या हमारी इन बेहूदी हरकतों का पता गणेश जी को नहीं है ? अगर है, तो फिर इन हरकतों से गणेशजी हम पर कितने मेहरबान होंगे ? इस सवाल पर मुलाहिजा फरमाने की जरूरत हैं, क्योंकि करोड़ों की लागत से बने पुल कुछ ही महीनों में भर-भराने लगते हैं, नई-नई छतें चरमराकर गिरने लगती हैं, वर्षों में बनी सड़कें महीनों में बिखर जाती हैं। यह गणेशजी की नाराजगी नहीं, तो और क्या है ? पर लोग समझते नहीं और ठेकेदारों का दोष देते हैं।

संपादक जी, हमारा सद्ग्रन्थ कहता है-
"मूष्णाति अपहरति कर्मफलानि इति मूषक :"

अर्थात् जो जीवों के बुरे कर्मफल का नाश करता है, वही मूषिक है, चूहा है। हम गणेश जी की पूजा करते हैं, गणेश जी प्रसन्न होते हैं, परिणामस्वरूप उनका वाहन मूसा हमारे बुरे कर्मफल को कुतरकर नष्ट कर देता है। अब, आप ही बताइये संपादक जी, ऐसे उपयोगी जीव को जब हम मारते हैं तो हमारा कल्याण किधर होगा। हम जो आयेदिन घोटाला पर घोटाला किये जाते हैं, उनके कुफल को कौन कुतरेगा ?

इस विचार से चूहा मारना ठीक नहीं है, पर क्या कहा जाय, कुछ लोगों को उलटा चलना अच्छा लगता है। लोग कहते हैं कि चूहा अनाज ही नहीं खाता सामान भी बर्बाद करता है। यह भी कोई बात हुई, संपादक जी ! अरे भाई, चूहे के लिए खाने-पीने का प्रबंध रखो, घर में मर-मिठाई रखो, फिर काहे को वह कपड़ा कुतरेगा, धोती-साड़ी फाड़ेगा। चूहे किनके घर में नहीं है। [मंत्रियों के घर में भी चूहे हैं। पर, उनकी चादर-धोती को किसी चूहे ने काट खाया हो, यह कभी देखने-सुनने को नहीं मिला। ऐसा होगा ही क्यों ? उनके घर में तो लड्डू-मिठाई की आमद-रफ्त रहती है, फिर काहे को वह धोती-साड़ी की ओर निहारेगा। वह तो उसी घर के कपड़ों को कुतरता हैं, जहाँ वह

[illegible] मिलता है। किस घर में चूहा डंड पेलेगा उस घर की [illegible] तो यह कुकोपा ही। [illegible] सरकारी फाइलों को [illegible] बात है, संपादक जी, तो चूहा ऐसे कुकृत्य को तभी [illegible] है, जब वह देखता है कि फाइलों में गरीबों के लिए [illegible] नहीं है।

[illegible] तो मैं गंदगी की चर्चा कर रहा था, संपादक जी, और [illegible] था कि जमालपुर के लोग भी आयेदिन शिकायत किया [illegible] हैं कि जमालपुर शहर भी काफी गंदा है। जगह-जगह [illegible] पड़े रहते हैं। बाजार में सड़ी-गली सब्जियों का अंबार लगा रहता है। मरे हुए जीव-जन्तु सड़कर महकते [illegible] हैं। नालियों में गंदगी भरी रहती है, जहाँ मच्छड़ पलते [illegible] नालियों की गंदगी सड़कों पर चली आती है। [illegible] है, नगरपालिका कॉपर लेकर कहीं जल चढ़ाने [illegible] गई है, आदि-आदि।

[illegible] लोगों को क्या कहा जाय, संपादक जी ! कुछ [illegible] की आदत-सी पड़ जाती है। जमालपुर [illegible] अच्छे लोग हैं जिन्हें देखी जा सकती हैं। काली [illegible] हैं, [illegible] मैदान है, [illegible] हैं, कार्यालय हैं, कॉलेज, कॉलेज...। इन्हें न [illegible] गंदगी की ओर भी ध्यान जाएँ तक ठीक है। [illegible] को ही देखिए, संपादक जी। [illegible] अपना [illegible] है, [illegible] है। इतिहास की बात छोड़िए, [illegible] है। [illegible] इमारतों की [illegible] है, [illegible] आदि का निर्माण कर रहा है। [illegible] हैं। पर, लोग इन चीजों को न [illegible] छूट करते हैं।

[illegible] बात कर रहा हूँ, संपादक जी ! [illegible] गुरु के शिष्य थे। एक दिन गुरु [illegible] ने कहा- "जाओ, किसी भले आदमी को ढूँढकर ले आओ।" युधिष्ठिर निकल पड़े [illegible]। फिर गुरु ने युधिष्ठिर को [illegible] कहा- "जाओ, किसी बुरे आदमी को खोजकर ले आओ।" वह भी निकल पड़े...। शाम को दोनों खाली हाथ गुरु के समक्ष उपस्थित हुए।" दुर्योधन कहने लगा कि बहुत खोजा, पर एक भी आदमी भला नहीं मिला। युधिष्ठिर भी लगे हाथ बोल उठे कि मैंने भी बहुत खोजा, पर एक भी बुरा आदमी नजर नहीं आया। इसलिए, संपादक जी, अगर हम दुर्योधन की नजर से देखेंगे तो अच्छाई में भी बुराई दिख जायेगी।

संपादक जी ! कुछ ऐसे भी सुजान हैं, जो कहते हैं कि जमालपुर के लोग अजीब हैं। जिधर चाहा उधर कूड़ा जमा कर देते हैं। जहां-तहां मल-मूत्र का त्याग कर देते हैं। कारखाने में भी लोग जहां चाहा वहीं पेशाब करने लगते हैं जबकि इसके लिए स्थान नियत है। कुछ लोग ठीक उसी जगह खड़े हो जाते हैं, जहां पेशाब नहीं करने की हिदायत रहती है। अल्ला हो अकबर, सब तो शौचालयों में मल-मूत्र का त्याग करते ही हैं। कुछ लोग इधर-उधर कर देते हैं, तो इसमें हर्ज ही क्या है ? सच मायने में उन्हें ही आजादी का अहसास है। आजादी में यह करो, वह न करो, यहां करो, वहां न करो जैसी रोक-टोक अच्छी नहीं लगती। हम जो करें, जहां करें, सब ठीक है, क्योंकि हम आजाद हैं। और आप भी तो जानते हैं, संपादक जी, कि लीक पर तो सब कोई चलते हैं, जो लीक से हटकर चलते हैं, वही सूरमा है। संसार पूरब जा रहा है, और हम भी पूरब ही चलें, तो इसमें क्या वाह वाही ! कहा भी गया है कि जो संसार करे उससे उलटा हम करें तो हमारी गिनती बड़ों में होगी, साधुओं में होगी। किसी संत ने बड़ा ही अच्छा कहा है-

उलटा चलै सो औलिया,
सुधी गति संसार।

इसलिए, संपादक जी, आपके जमालपुर के कुछ लोग जो उलटा चलते हैं, उल्टा-पुल्टा काम करते हैं, दुर्योधन जैसी दृष्टि रखते हैं-वे सच मायने में औलिया हैं, साधु हैं। उन्हें साधुवाद दिया जाना चाहिए। आशा है, संपादक जी, आप भी मेरे विचार से सवा सोलह आने सहमत होंगे।

आपका,
मूरखानन्द

राजकिशोर मंडल,
राजभाषा सहायक
पूर्व रेलवे, जमालपुर

पुलुकामो हि मर्त्यः।
मनुष्य स्वभाव से ही बहुत कामनाओं वाला होता है।

भूख

रात आ चुकी थी पर मुनियां का पति सीताराम अभी तक नहीं लौटा था। छोटे बच्चे रोटी की रट लगाते-लगाते सो चुके थे,पर लड़की बिन्दी अभी तक जाग रही थी। वह जवान थी, अपने माता-पिता की गरीबी का उसे अहसास था। मुनियां रह-रह कर बाहर जाती थी और निराश हो लौट आती थी।

कुछ देर बाद सीताराम झोपड़ी में दाखिल हुआ। हाथ में दो गठरी झूल रही थी। गठरी रखते हुए उसने मुनियाँ से कहा, देर हो गई, जल्दी से खाना बना लो। मुनियां ने देखा--- एक गठरी में चावल दाल और दूसरी में कुछ कपड़े थे। वह कुछ नहीं बोली। चुपचाप खाना बनाने में लग गयी। बिन्दी माँ के कामों में हाथ बँटाने लगी।

बच्चों को जगाकर खिलाया गया। फिर बड़ों ने भी खाना खाया। सोते समय मुनियाँ ने अपनी जिज्ञासा व्यक्त की।

"गठरी में कपड़े कैसे हैं ?"

"बिन्दी के लिए हैं। सुबह उसे लेकर दूर जाना है। तड़के ही उसे जगाकर तैयार कर देना।"

"आखिर, कहाँ ले जाओगे उसे ?

"दूर, बहुत दूर, इस गरीबी और भुखमरी की दुनिया से काफी दूर।"

मुनियाँ कुछ समझ नहीं सकी। वह मन में सोचती-विचारती रही और इसी बीच सुबह हो आयी। वह बिन्दी को जगाकर नये-नये कपड़े पहनाने लगी, पर उसकी आँखों में आँसू छलक रहे थे।

"माँ, मुझे सजाकर कहाँ भेजा रही हो ?" "बेटी, हर लड़की को एक न एक दिन पिता का घर छोड़ना ही पड़ता है।"

"नहीं माँ, सच-सच कहो, मैं पिताजी के साथ नहीं जाना चाहती। वह मुझे बोझ समझते हैं। पता नहीं वे इस बोझ को कहाँ छोड़ दें।"

इसी बीच सीताराम आया और रोना-धोना देखकर गर्म गया। "रात में ही समझाकर कह दिया, पर अभी तक तैयार न हुई। अगर वे लोग लौट गये तो सारा काम चौपट हो जायेग चलो, जल्दी चलो।"

जल्दी चलो, जल्दी चलो की रट लगाते-लगाते सीता बिन्दी को लेकर चल पड़ा। बिन्दी न चाहते हुए भी लग घिसटते हुए साथ चल पड़ी। क्या करती ? आखिर वह उस बाप जो था। शादी के पहले लड़की बाप की संपत्ति होत और शादी के बाद औरत पति की जागीर। न ! महिलाओं समानता, स्वतंत्रता टी.वी., अखबारों तक ही है या फिर बीडि में चिल्लाने को। वह बेचारी चिल्ला भी तो न पाई। चिल्ल कैसे ? बाप के संग चल के बेटी कहीं चिल्लाती है ? सुबुक रही बेचारी। जी भर रो भी नहीं पाई थी कि एक मंदिर के सा दोनों आ पहुँचे। जंगल के बीचो-बीच बना मंदिर बिन्दी बहुत लुभाता था और आज वही मंदिर बहुत डरावना लग था। सर्वशक्तिमान भगवान भी असहाय से लग रहे थे आदम-रूपी राक्षसों से घिरकर उन चारों को बिन्दी प आई। एक हाथ से उन्होंने कुछ नोट दिये और दो हाथों से बि को खींचकर हाँकते ले गये। बड़े ही कातर दृष्टि से बिन्दी अपनी बाप की ओर देखा, मानो कह रही हो बापू मुझे ब लो। पर यह भी कहाँ हो पाया। आँखें झुका ली थीं, मुँह लिया था सीताराम ने- अब बाप वह थोड़े ही था। सीता की आँखें गड़ गई थी नोटों के बंडल में। धीरे-धीरे सीता बिन्दी के आँखों से ओझल हो गया। पर हाय री ! दुर्भा अन्धघड़ी भी एकबार भी अपने बापू को आँखें भर-भर देख पाई। सीताराम की आँखें तो कैद हो गई थी नए नोटों की च में और उन चारों की आँखें बिन्दी के बदन की चमक में। तरी अलग-अलग था, पर हर कोई अपनी-अपनी भूख मिटा था। एक जींस की भूख थी, एक पेट की भूख। कौन हारा, क जीता, पता नहीं, पर आदमीयत हारती रही, हमेशा की तरह

□ आरुणी सेन गु
का.अ.II, मां.पं.प. अनुभा
जमाल

कील

जिन्दगी के जिस मुहाने पर आज मैं खड़ा हूँ, मेरे संगी-साथी हमउम्र सभी उस मुहाने तक आ गए हैं जहाँ आकर दृष्टि धुंधली हो जाती है, किन्तु उनकी नजरें आज की समस्याओं से परे जाती हैं और मैं अकेले इन समस्याओं को आत्मसात करता आत्मिक दुःख भोगता हूँ मानसिक कष्ट झेलता हूँ। बहुत दिनों की बात नहीं है, जब गाँव छोड़ते वक्त मैंने बटेसरा को कहा था - बटेसर, मत जा दिल्ली। वहाँ कुछ नहीं रखा है। जितना तुम वहाँ जाकर कमाओगे, उससे कहीं ज्यादा यहीं कमा लोगे। चाहे तुम्हारा पेशा पत्थर फोड़वा का हो या फिर खेती का। यहाँ रहोगे तुम अपने बाल–बच्चों के बीच रहोगे। सबका दुःख–सुख एक होगा। सब मिल- बाँट कर जीओगे।

जवाब में उसने कहा था - नहीं सर, अब नहीं। अब गाँव में नहीं रहूँगा - सुकेसरा बो भौजी का ताना अब बर्दास्त नहीं होता। उसकी नजर में मैं अब भी काहिल हूँ मेरे जांगर किसी काम का नहीं है- जबकि बेरा वक्त मैं ही उन सब को सम्भालता हूँ। मेरी लाख मना करने के बावजूद उसने अपने हिस्से के मकान में ताला जड़ दिया था और बच्चों को उनके मामा के घर पहुँचा कर दिल्ली चला गया था। बात आयी गयी, खत्म हो गयी, लगा बटेसरा मेरे मन से बिसरता ही नहीं था।

स्कूल की तरफ से बच्चों को दिल्ली घूमाने का कार्यक्रम बना और काफिला दिल्ली चल पड़ा। बच्चों को कनाट प्लेस, इण्डिया गेट मैदान, लालकिला और कुतुबमीनार दिखाने के बाद जब मैं थकान्त होता, बटेसरा का दिया पता मेरे पाकेट में कुल-बुलाने लगता और मैं उससे मिलने के लिए बेचैन हो जाता। क्रमशः चार दिनों तक हम घूमते रहे, किन्तु बटेसरा से मिलने का समय नहीं निकाल पाया। इच्छा दिल के किसी कोने में दबी रही। कभी सोचता कि मीलों फैले इन झुग्गी झोपड़ियों में उसे कहाँ खोजा जाएगा-कितनी गलीज जिन्दगी जी रहे हैं यहाँ, गाँव के भागे हुए लोग। यमुना पार की जिन्दगी यूँ भी नीलाम हो गयी सी लगती है। उनकी जिन्दगी अपनी नहीं रह गई है। जैसे कठपुतली की तरह उन्हें दूसरें की उंगलियों के इशारे पर नाचना पड़ता है। चाहे दिन हो कि रात, धूप हो कि बरसात। शायद बटेसरा भी इन्हीं में कहीं खो गया होगा।

पाँचवाँ दिन आखिरी दिन था। हम लौटने की तैयारी में थे कि हमारे क्षेत्र के विधायक बच्चों को ग्लास फैक्ट्री देखने के लिए गेट पास की व्यवस्था कर भेज दिए। जब हम ग्लास फैक्ट्री देखने गए तो पाये-आज का मानव कितना यांत्रिक हो गया है। नंगे पाँव, नंगे बदन मजदूर उन काँचों के किरीचों से खिलवाड़ करते देखे जिन्हें चुभ जाने के डर से हम छूते तक नहीं। घंटों घूमते रहे और क्रमवार टूटे शीशों को बुरादा बनते, उनमें केमिकल मिलते और फर्मे में ढ़लकर ग्लास, प्लेट,– ट्रे और वदंन वार बनते देखते रहे। इन्हीं फर्मों को चलाने वाले हाथों के बीच से दो हाथ मेरी तरफ नमस्कार की मुद्रा में जुड़े दिखा और मैं एकटक देखता रह गया - सामने बटेसर खड़ा था। नंग- धड़ंग, कमर में बिष्टी लपेटे, पीठ पर फर्मा लादे। धूप, पानी, गर्मी-सर्दी सहते-सहते उसका शरीर एकदम काला हो गया था, चेहरे पर पसीना चुहचुहा आया था। मेरे मुँह से शब्द नहीं फूटे, किन्तु बच्चे चहक उठे– अरे,ये तो बटेसर चाचा हैं। हमारी बातचीत कुछ और बढ़ती, किन्तु उसी बीच फैक्ट्री का मुंशी आया और उसे गंदी गाली देता हुआ काम पर जाने के लिए कहा। हम अव्यक्त भाव लिए गेट से बाहर निकल आए।

स्टेशन आते वक्त बच्चों के सवालों का जवाब देना मेरे लिए कठिन हो गया था। बटेसर अपनी कक्षा में हमेशा सर्वश्रेष्ठ छात्र माना जाता रहा। प्रथम श्रेणी में इसने प्रवेशिका उत्तीर्ण की थी लगता था, आगे काफी नाम करेगा। किन्तु मेरा सपना, सपना ही रह गया। स्कूली जीवन से ही यह गृहस्थी के घनघोर जंगल में जो फँसने लगा– फँसता ही चला गया।

बच्चे पूछ रहे थे– सर बटेसर चाचा यहाँ क्यों आए? घर पर तो इनके लिए अनेकों काम थे। अपने गाँव में ही बच्चों को साक्षर करते तब भी इनका भला हो जाता।

क्या जवाब देता वैसी स्थिति नहीं थी कि मैं कुछ कहूँ। बटेसर का बचपन और उसकी कुशाग्रता मुझे बेचैन किये रहती थी। फिर भी बच्चों के जिद पर मैंने कहा था—कुछ लोग होते हैं जिन्हें गाँव की जिन्दगी पसंद नहीं आती। शहर आकर, जैसी जिन्दगी तुम लोगों ने देखा, वैसी जिन्दगी जीते हैं— गटर में रहते हैं और शरीर पर उग आए फफोलों की तरह झुग्गी झोपड़ी का निर्माण करते हैं। ऐसे लोगों का होना न होना कोई मायने नहीं रखता। देश के लिए ऐसे ही लोग बोझ होते हैं।

रात्रि की गाड़ी से हमें वापस आना था। समय काफी निकल गया था, इसलिए लौटना भी जरूरी था, किन्तु बटेसर से मिलकर एक बार उसे और समझाने की इच्छा मैं दबा नहीं पाया। अपने ग्रुप के बच्चों को दूसरे शिक्षक के हवाले कर मैं जनकपुरी के लिए बस पकड़ने मद्रासी कॉफी हाउस की तरफ चल पडा।

बस में बैठते ही गुजरे वक्त बिच्छू की तरह डंक मारने लगे। मेरा छोटा भाई भी एक दिन इसी बटेसर की तरह दिल्ली के मोह में फँस गया था और घर– द्वार त्याग कर दिल्ली चला आया था। उस समय उसकी उम्र ग्यारह साल की होगी। नासमझ अपनी जिन्दगी गंवा बैठा। उसे क्या पता था कि इस शहर में कुछ ऐसे दरिन्दे भी बसते हैं जिनमें संवेदना नाम की कोई चीज नहीं होती। घर से भाग कर वह उठाईगिरों के हत्थे चढ़ गया था। वे किस तरह उसके साथ बद-सलूकी किए और किस तरह उसे भीख माँगने वाला बना दिए- सब कुछ मरते वक्त उसने बताया था। उसकी दोनों आँखें फोड़ हाथ में लकड़ी थमा दिए थे, ये दरिन्दे।

आप जनकपुरी जायेंगे– कण्डक्टर ने पूछा तो मेरी तन्द्रा भंग हुई। हाँ, कह कर वहीं उतर गया। शाम का झुटपुटा पसरने लगा था। जिधर नजरें उठाता उधर ही अट्टालिकाएँ दिखतीं। काफी घनी बस्ती है- जनकपुरी की। उसके दिए पते पर यह नहीं लिखा था कि कहाँ उतरना है और कैसे उसके घर तक जाना है। घर एक प्रश्न चिह्न बनकर मेरे सामने खड़ा हो गया! जैसी जिन्दगी वह जी रहा था - वैसे लोगों का घर नहीं होता। लगा जैसे मैं गलत जगह पर आ गया हूँ। सोचते हुए क्रमशः आगे बढ़ने लगा। उसके दिए पते पर किसी नारायण पान भण्डार वाले का नाम लिखा था सो किसी पानवाड़ी से ही पता चल सकता था। अतः एक पान की दूकान पर जाकर पूछा- भाई, नारायण पान भण्डार है कोई यहाँ पर।

वह एकटक से मेरी ओर देखने लगा जैसे कोई अजूबा जानवर उसके सामने जाकर खड़ा हो गया हो। अगल-बगल खड़े कुछ लोग मेरे हाथ से उसके पते वाला चिट लिया -पढ़े- बुदबुदाए - फिर मेरी तरफ वापस बढ़ा दिया। रात घिर आयी थी फिर भी मैं हौसला बनाए रखा। कोलतार से पुती सड़कें एक दूसरे को काटती न्यून लाइट में चमकती पथिकों को उनके गन्तव्य तक पहुँचाने में योगदान कर रही थीं। काफी दूरी पर है यह जनकपुरी– बस से वापस घंटे दो घंटे में हुआ जा सकता था यह मगर बिना उससे मिले जाना मैंने उचित नहीं समझा।

अगले चौराहे पर फिर एक पान की दूकान पर जाकर पूछा तो पता चला कि आगे डावरी मोड़ है, उसके आगे नाला है और नाले के किनारे कुछ झुग्गी झोपड़ियाँ हैं जिनमें बिहारी लोग रहते हैं -वहीं नारायण पान भण्डार है। एक आस लिए नाले की तरफ बढ़ चला। आगे जाने पर नारायण पान भण्डार मिला- और वह घर भी जिसमें बटेसर रहता था।

नीचे नलके के पास लम्बी कतार में खड़ी औरतों में एक औरत शायद मुझे पहचान गयी। भाग कर ऊपर गयी, फिर कई औरतें एक साथ नीचे झाँकने लगीं। मुझे किसी से कुछ पूछना नहीं पड़ा - बटेसर की पत्नी नीचे आयी और मुझे ऊपर लिवा गयी। एक कमरा- जिसमें वे रहते थे- एक तरफ एक तख्त बिछा था। दूसरी तरफ स्टोव और कुछ जरूरी बर्तन रखे थे। एक कोने में फटे– चिंटे कपड़ों का ढ़ेर पड़ा था जिससे बदबू आ रही थी। वहाँ बैठने में मुझे संकोच हो रहा था, क्योंकि एक तो बटेसर नहीं आया था– दूसरे उस दरबानुमा घर में बैठने के लिए कोई ढंग की जगह नहीं बची थी।

आप बैठिए न! एक पीढ़िया देती हुई उसकी पत्नी बोली थोड़ी देर में वे लोग आ जायेंगे।

वे लोग तो आ जायेंगे– मतलब?

बुधना भी अब अपने पापा के साथ काम पर जाने लगा है यहाँ एक की कमाई काफी नहीं है, घर चलाने के लिए।

अरे, उसकी उम्र ही कितनी है कि तुमलोग उसकी पढ़ाई बन्द करा दिए हो और काम पर जोत दिए हो, अभी मेरी मुँह से कुछ और निकलता कि देखा बटेसरा अपने लड़के के साथ सामने आश्चर्यचकित खड़ा था-

सर आप!

हाँ बटेसर मैं, तुम ने तो अधूरा पता लिखा था, किन्तु मेरा मन तुममें ही अटका था। दरअसल किसी शिक्षक के लिए उसका प्रिय छात्र उसके अपने लड़के से बढ़कर होता है, सो तुम को खोज लिया। चलो, लौट चलो अपने गाँव। तुम्हारी स्थिति मुझ से देखी नहीं जाती, फिर सुना कि तुमने अपने बच्चे की पढ़ाई भी बन्द करवा दी है और उस मासूम से काम करवा रहे हो।

सर, अब मेरा गाँव लौटना सम्भव नहीं है, क्योंकि मैंने गाँव का अपना हिस्सा बेच दिया है। रुपये आए तो खर्च भी बढ़ा उस समय संगी– साथी, हितनाते सभी अपने थे, किन्तु उन रुपयों की समाप्ति के साथ सभी दूर होते चले गए। अपना कोई नहीं है। अपना है तो बस दिनभर की मजदूरी, और मिला उससे अन्न। रही बात लड़के की तो वह आज के बी.ए. एम.ए. बाबुओं से बेहतर है, क्योंकि उसने काम करना सीख लिया है। बी.ए. एम.ए. कर लेता तो अपने हाथों से यह काम करने में भी शर्म आती और बी.ए.एम.ए. लायक नौकरी मिलने से रही। एक अनार और सौ बीमार, तो बीमार क्यों हों भला, अपने लिए रोटी का जुगाड़ कर सकता है। हमें हमारे हाल पर छोड़ दीजिए अब यही हमारी नियति है।

उसकी बात सुन लगा एक-एक कील बनके उसके शब्द मेरे अन्तस में धँसते चले गए हों, आगे उसने क्या कहा था – याद नहीं। होश आने पर अपने को लौटती गाड़ी में पाया।

□ अशोक 'अश्क'
वेल्डिंग कार्यशाला (फिटिंग अनुभाग),
रेल कारखाना, जमालपुर

बल्गा खंड - 4

अंक ग्यारह से आगे

पिछले अंक नौ से ग्यारह का सार इस प्रकार है- ---सच्चा प्यार था मनीष और रेणु के बीच में ------ ।

दोनों एक दूसरे को हृदय से चाहते थे। किस्मत और दुर्भाग्य की आँधी ऐसी चली की रेणु किसी और की हो गई। और उजड़ गया आशियाना मनीष के सपनों का। टूट– सा गया वह। पर जिन्दा रहा--- जिन्दा रहने को। अनायास कालचक्र यूँ चला कि एक दूसरी लड़की मनीष के जीवन में आई। कुसुम .....। मनीष की उजड़ी बगिया में प्यार का कुसुम फिर से खिलाने को। अफसोस ऐसा न हो पाया।

मनीष अपने पक्के उसूलों के साथ आगे बढ़ता रहा। पर एक आग जलती रही उसके सीने में------ । पूरी दुनिया के खिलाफ------- । खिलाफत की आग----- ।

अजीब था मनीष भी। इस आग के साथ-साथ रेणु के प्रति समर्पित प्रेमाग्नि में जलता रहा। रेणु भी कहाँ भूल पायी मनीष को । पावन प्रेम को भूला पाना इतना आसान है क्या ? प्रेम स्त्री-पुरुष के मन के सम्बन्ध का प्रतीक है। दो मन मिलने पर निःस्वार्थ भाव से एक दूसरे के मंगल कामना की भावना के साथ प्रेम-यज्ञ की ज्वाला में दग्ध होते रहे, वही प्रेम है।

अजीब बात है। रेणु और कुसुम दोनों मनीष के बस दो मीठे बोल पर, उसके निर्मल भावना पर, अपना सर्वस्व निछावर कर देती है। पर बेचारी कुसुम ठेस खा गई। वह भी तब-- । जब कि मनीष ओछे हृदय का प्रेमी नहीं था। अपितु उसूल और सिद्धांत का अप्रतिम प्रांज्जयल प्रतिमूर्ति था। जो टूट जाय, पर झुकेगा नहीं। ओछे हृदय वाले क्या प्रेम कर सकते हैं ?

इश्क वह राग नहीं जो हर साज पर बजाया जा सके, इसके लिए कुछ खास दिल ही मुतरिब होते हैं।

अचानक मनीष की मुलाकात अपने कॉलेज के मित्र राज से होती है। राज की जिन्दगी थी एक बन्द पिटारा। अब हम ले चलते हैं आपलोगों को कहानी की अगली कड़ी में जो इस प्रकार है—।

राज अवाक्-सा मनीष को निहारता रहा। ओंठ सिले हुए थे। वातावरण निःशब्द और निस्पन्द हृदय की धड़कने प्रखर से प्रखरतर होती रही। सांसों की गति जोरों पर थी। बाहर वायु के संघात से आलोड़ित पत्तों का मर्मर स्वर अबाधता के साथ जारी था। राज सोच रहा था मनीष के अचीते प्रस्ताव पर थप्पड़ मारे अथवा धक्का मार कर कुटिया से बाहर कर दें। मूर्ख मनीष को कैसे समझायें। अंतर्मन से आवाज उभरी क्या निखालिस झूठ का अवलम्ब ले के बहला दें, लेकिन झूठ अपने जिगर के टुकड़े मनीष से कैसे कहें। हृदय मान ही नहीं रहा था। अन्त स्तल में भावनाओं का ज्वार ठाँठे मार रहा था। मस्तिष्क में झूठ और सत्य के बीच कोहराम मचा हुआ था। हाँ और ना के झूले में उसका अन्तर मन हिचखोलें खा रहा था। कुटिया में खा जाने वाली चुप्पी व्याप्त थी। भैया राज ! कहो ना जीवन का कड़वा सत्य।" मनीष के अनुरोध में जिज्ञासा स्नात बच्चों जैसी आतुरता थी।

राज निगूढ़ हँसी हँसता रहा। अपने पर। मनीष के अनुरोध पर। जैसे वह कुछ सुना ही न हो। मनीष ने जोरों से उसके कंधे को झकझोर दिया। अनायास ही हँसी रुक गयी। विस्फारित नयनों से मनीष को निहार उठा। राज मनीष के दोनों कपोलों को अपने दोनों हथेलियों के बीच लेकर निर्विकार भाव से निहारते हुए कहा, क्या सुनाऊं" ?

"सपनों की रानी की कहानी" चिहुलने करते हुए मनीष कहा।

"इस फटीचर का कौन सपनों की रानी बनना पसंद करेगी।" राज निखालिस झूठ का सहारा लेकर टाल देने के लहजे में कहा। बादलों की तरह ऑखें बरस उठी थीं। मनीष उसकी ऑखों में झांका। मर्माहत हो गया। इसलिए अपना चेहरा दूसरी ओर फेर लिया।

"झूठ ! झूठ ! सफेद झूठ ! तू ने कहा है। अपनों से कोई झूठ बोलता है"- मनीष टोह लेने के अंदाज में सांस रोके एक स्वर में कहता जा रहा था- तुम्हारा व्यक्तित्व उस सख्त चट्टान की तरह है जो अपने गर्भ में अपरिमित ज्वालामुखी के साथ शीतल जल का निर्झणी समेट हुए हैं । चित्र लेखा को तू ने नाकारा, वह भी तुम्हारा ही झूठ था। उससे अलग होकर वर्तमान में जी रहे हो, यह भी एक झूठ है। वास्तविकता से ऑखें

चुराने वाले दो प्रकार के लोग होते हैं। एक जो पीछे की ओर देखकर अतीत की रंगीन वादियों में खो जाते हैं और उन्हें अपना वर्त्तमान मानने लगते हैं। दूसरे वे लोग जो आगन्तुक कल्पनाओं को वर्त्तमान मानकर जीने लगते हैं। झूठ में जीने वाले व्यक्ति झूठ ही कहेगा न ! स्कूल में.....। अनायास ही राज की हथेली मनीष के अधर कपाट से चिपक गये और मनीष की आवाज गले में ही घुटकर रह गया। राज स्तब्ध खड़ा रहा। ओंठ सिले हुए थे। जैसे कोई निरीह बकरी रक्षा के लिए याचना भरी निगाहों से कसाई की ओर निहारा करती है, उसी प्रकार राज मनीष को निहार रहा था। अचीती भय उसके अंतस में ज्वार भाटा उठाये हुए था। जिस प्यार की परिमिति को अपने जिगर के खून से सींच-सींचकर परिगुंठित किया है उसे आज मनीष कुरेद कुरेदकर उगलवा लेगा।अपनी जिन्दगी पर परिचिंतन करना तो अब अशोभनीय ही नहीं, गर्हित पाप है। प्यार तो परावर्त्य करने की वस्तु नहीं है और अब तो मिलने का दूरवर्ती आशा ही नहीं है। कहाँ है ? कैसी है ? वर्ष पर वर्ष गुजरते गये। यादें भयानक रात की तरह स्याह और काली पड़ती गयी। दूरियाँ न मिलने वाली नदी-पाट की तरह चौड़ी होती गयीं। प्यार अंतस में परिगुंठित होता रहा। आवारा बादलों की तरह आँखों में उसकी छवि उभरती और बरसकर चली जाती। अपनी अचीती पराजय पर अवाक्-सा रह गया। आज तक मैं अपने को प्रस्तर प्रतिमा समझता रहा। भावना, संवेदन शून्य पाषाण। दुनिया से नाता–रिश्ता तोड़ लिया। जानी–पहचानी दुनिया से विमुख। कमरे में अकेला शान्त पड़ा रहता। मनीष को किसी कीमत पर नाराज नहीं करना चाहता था। बेमानी और बेगानी दुनिया में एक ही तो है अपना। बोझिल मन लिए उनीदीं कदमों से मनीष की ओर जा रहा था। पास पहुँचकर अपने कलेजे से चिपका लिया।

राज के आंसुओं से मनीष की कमीज गीली होती रही। राज की सुबुकियों का जब मनीष को एहसास हुआ तो चौंक पड़ा। जाने-अनजाने राज को कोई कष्ट नहीं देना चाहता था। छोड़ों इन बातों को। धरा ही क्या है इनमें ! खोखली हँसी हँसते हुए मनीष ने कहा– चलो। चाय पी लें और चाय के लिए हांक दी। दो प्याली चाय मेज पर रखकर मधुरिमा निःशब्द अन्दर चली गयी। प्याली से गरम-गरम भाप ऊपर उठकर शून्य में विलीन हो रहा था। प्याली उठाकर एक घूँट ली और मेज पर रखकर कहने लगा- यदि प्रेम कोई महान भावना है, कोई अनोखा जज्बा है तो इसको दौलत, शोहरत और हुकूमत अपने में कैद नहीं कर सकती है। प्रेम की भाषा मौन है। मुहब्बत में यकीनन खुदा बास करती है। प्रेम करना और ईश्वर से अनुराग करना एक ही काम है। प्रेम और ईश्वर एक ही नाम है। प्रेम ईश्वर– भक्ति की प्रथम सीढ़ी है। इसमें महान शक्ति अन्तर निहित है।.....

अनायास ही मनीष की हथेली राज के अधर से सटाकर मुस्कुराते हुए कहा "गुरु"। प्रेम का लेक्चर सुनने नहीं बैठा हूँ। स्कूली जिन्दगी से आज तब प्रेम पर तुम्हारा दर्शन सुनते-सुनते उबकाई-सी होने लगती है। राज कहने लगा——

धरती का जो रिश्ता उसकी हरियाली से है। चांद का जो रिश्ता उसके चाँदनी से है। लहरों का जो रिश्ता उसके किनारों से है। और फूल का जो रिश्ता पराग से है। वैसा ही मेरा रिश्ता चित्रलेखा से है। कोई जाकर पूछे धरती क्यों अपने कलेजे को चीरकर पौधों द्वारा जहाँ को हरियाली देने के लिए अकुलाती रहती है। लहरें किनारे से टकराने के लिए क्यों व्याकुल रहती है ?

मैं पोस्ट ग्रैजुएशन के पश्चात् एम- फिल कर रहा था। लोग कहते थे काफी मेधावी था मैं। प्रारम्भ में मुझे भी ऐसा ही लगता था। अतः लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमेशा अध्ययनरत रहता। पर लोक सेवा आयोग एवं अन्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में न आ पाने के कारण अपनी मेधावनी होने में शंका के बीज अंतस में अंकुरित होने लगे। फिर भी एम- फिल का कोर्स कठिन मेहनत एवं लगन से कर रहा था। पाठ्यक्रम एवं इससे जुड़ी पुस्तकें ही मेरी दुनिया थी।

दुनिया से अलग–थलग किताबों में खोया रहता। अनायास ही चित्रलेखा से मुलाकात हुई। नजर की गुफ्तगू ने दिल के जज्बे को बयाँ कर दिया। मुझे ऐसा लगा कि वर्षों की तफतीश के बाद यौवन की ऐसी अनुपम सुन्दरी चित्रलेखा को देखा। जवानी को मदमस्त कर देनेवाली मधुलिका का नशा उसमें व्याप्त था। समान विषय। समान पाठ्यक्रम। हम दोनों के बीच में बहुत हद तक समानता था– रूप में। गुण में। चिन्तन में।

मसलन हम दोनों एम- फिल कर रहे थे। समान विषय। समान चिंतन। सबसे बड़ी समरूपता यह था कि हम दोनों अकेले थे। बिल्कुल निरापद। जब दो अकेला मिलते हैं तो उनकी दुनिया अकेले बसने लगती है। भावनाओं के स्वप्निल दुनिया में आकाश कुसुम को तोड़कर अपनी दुनिया सजाने लगते हैं। वर्षों से अंतस दबी कोमल भावनाएँ जब एकाएक उमड़ पड़ती है तो भावनाओं का प्रवेग सारे पुराने बंधन को तोड़ कर एक नये बंधन का सृजन करने लगते हैं। सृजित नये बंधन को प्रेम-बंधन कहते है। अनन्त सीमाओं में बंधी यह आकस्मिक घटित मन की साकारात्मक, रागात्मक अनुभूति है। इस नई दुनिया में सिर्फ दो ही जानें होती हैं प्रेम बहाव में बहते

चले गये । एक दुसरे से बंधते चले गये । ऐसा महसूस हो रहा था कि दुनिया की सारी खुशियाँ, सिमटकर हम दोनों के अरमानों में कैद हो गई हो । सिमटी हुई दुनिया थी । सिमटे हुए हमलोग और अपने अरमानों के घरौंदे को धरती पर उतार लेने की प्रबल इच्छा ।

अनायास ही एक हादसा हुआ । पिताजी असमय ही काल के ग्रास हो गये । तार पाते ही दौड़ता भागता गाँव पहुँचा । लौटकर आया तो पाया कि चित्रलेखा आँखों में शबनमी दाने लिए प्रेम-कुटिया में पधारने के लिए पथरायी आँखों से मनुहार कर रही थी । मेरे अपुष्ट कंधों पर जिम्मेदारियों के बोझ थे । कदम उठा नहीं पा रहा था । क्या कहूँ ? क्या न कहूँ ? मेरे कहने से पहले प्रतीक्षा रत चित्रलेखा बिफर कर रो पड़ी और रोते स्वर में बोलने लगी – "पिताजी ने मेरे लिए एक लड़का ढँढ लिया है । प्रथम श्रेणी का अफसर है । लड़के वाले मात्र फोटो देखकर सगाई करने आ पहुँचे थे । पर किसी तरह बात आगे टल गई ।"

..... राज सारी शक्ति को कानों में संजोकर सुनता रहा वातावरण स्तब्ध और खामोश !

कुछ देर उपरान्त चित्रलेखा कही- "चलो राज । कहीं भाग चलते है । संग रहे तो दो सूखी रोटी के सहारे भी जिन्दगी अच्छी तरह कट जायेगी ।"

" ..... " राज स्तब्ध और खामोश खड़ा था ।

सोचता जा रहा था राज !

राज का दिमाग दो रोटियों का गणित सुलझाने में उलझा था । एक मन कहता । इस गणित को अनसुलझा छोड़ इस हिसाब को खारिज कर अपनी प्रेयसी, चित्रलेखा की बात मान लूँ और दौड़ चलूँ एक अन्धी दौड़ । अन्जाम और परिणाम को विसरा कर । मंजिल विहीन पथ पर । बेरूठ और मस्तमौला । पर दूसरे ही पल निःस्वार्थ प्रेम-भावना की अग्नि में स्वार्थ की सारी सूखी लकड़ियाँ जल कर स्वाहा होती गई, न जाने कहाँ से उसके प्रति निर्मल प्रेम-भावना उमड़ आई । यह घड़ी मेरे लिए प्रेम परीक्षा की घड़ी थी । प्रेम को आदर्श एवं सहनीय बनाने का अवसर था, कर्त्तव्य और प्रेम में एक जंग छिड़ा था ।

कर्त्तव्य को महान मान कर मैंने अपने को मार दिया । जाने क्यों मेरा मैं कहीं मर गया । मेरी आँखों के सामने सिर्फ चित्रलेखा का अलम से जर्द चेहरा था । मुझे ऐसा आभास हुआ कि प्रेम में शरीर प्राप्ति की चाहत के लिए अपनी प्राण-प्रिया चित्रलेखा का अहित करना उचित है क्या ? प्रेम को स्वार्थ की कसौटी पर नहीं तौला जा सकता है । प्रेम तो त्याग का प्रतीक है जो आत्मा को परिमार्जित करता है । पुनर्जन्म की आस आत्मा को शुद्ध करती है । स्वार्थी लोग प्रेम कर ही नहीं सकते । चित्रलेखा का अहित कर मैं क्या पाऊँगा उसे ? जिसका खुद कोई ठिकाना नहीं । जिसका अवलम्ब टूटा हो, वह दूसरे को सहारा क्या दे सकता है । स्वार्थ से ऊपर उठकर सोचा तो चित्रलेखा को खुश पाया । बेहतर पाया हर हालत में । उसकी खुशी मेरी खुशी थी । मेरा गम मेरे मन का बसेरा था । और यही गम अपना था ।

चित्रलेखा को अपने गम में समाहित करना अथवा उसपर जबरन थोपना कोई जरूरी तो नहीं । अचानक मौन को बेधती हुई चित्रलेखा की आवाज गूंजी –

राज एक बात बताओ ।

"क्या ?" राज ने कहा ।

"भुला पाओगे मुझे" चित्रलेखा पूछी ।

"नही ।" राज ने रूआँसे गलेसे कहा ।–

गीले स्वर में राज कहता जा रहा था –

मैं जीवन के दो राहे पर खड़ा हूँ । प्रेम और कर्त्तव्य के बीच मेरे अन्तःपुर में जंग छिड़ा है । रास्ता तलाश नहीं पा रहा हूँ । मेरे जीवन में एक धुन्ध सा छा गया है वेवसी के धुन्ध में रास्ता तलाश पाना मुश्किल हो रहा है । अगर मैं जिन्दगी में रास्ता का तलाश करूँगा तो मेरी हर तलाश तुम पर ही आकर खत्म होगी । यही है मजबूरी मेरी । मैं मजबूरी और बेबसी के भंवर से अपने को निकाल नहीं पा रहा हूँ । मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन केले बेर की तरह हो गया है । जिस प्रकार केले अपने पत्तों को बेर के काँटों से छिद्रित होने से नहीं बचा पाता है, उसी प्रकार मैं तुमसे, तुम्हारे बेपनाह प्यार से अपने को बचा नहीं पाऊँगा । जितना ही मैं तुम्हें भूलने का प्रयास करूँगा उतना ही तुम्हारी यादों के काँटें टीस देती रहेगी । जानता हूँ मैं टूटूगाँ अवश्य । पर जिस तरह घोड़े को उसकी लगाम जबरन पथ पर चलाती जाती है, वैसे ही शरीर का लगाम, मेरी प्राण- वल्गा इस टूटे हुए राज को जिन्दा रखेगा ।आसू कण अनयास ही नयन-कटोरे से छलक कर कपोलों पर छिटक आये

चित्रलेखा के चेहरे पर वेदना की स्याह परछांई जो परिलक्षित हुई थी, उसे राज देख न पाया । दोनों के बीच अव्यक्त वेदना की गहरी चुप्पी व्याप्त थी । दोनों की आँखे बरस रही थी । मानो सावन का घन उन दोनों के आँखों में उतर आया हो । दोनों जानते थे कि दोनों सही थे । कुछ हद तक गलत भी ।

चुराने वाले दो प्रकार के लोग होते हैं। एक जो पीछे की ओर देखकर अतीत की रंगीन वादियों में खो जाते हैं और उन्हें अपना वर्त्तमान मानने लगते हैं। दूसरे वे लोग जो आगन्तुक कल्पनाओं को वर्त्तमान मानकर जीने लगते हैं। झूठ में जीने वाले व्यक्ति झूठ ही कहेगा न ! स्कूल में.....। अनायास ही राज की हथेली मनीष के अधर कपाट से चिपक गये और मनीष की आवाज गले में ही घुटकर रह गया। राज स्तब्ध खड़ा रहा। ओंठ सिले हुए थे। जैसे कोई निरीह बकरी रक्षा के लिए याचना भरी निगाहों से कसाई की ओर निहारा करती है, उसी प्रकार राज मनीष को निहार रहा था। अचीती भय उसके अंतस में ज्वार भाटा उठाये हुए था। जिस प्यार की परिमिति को अपने जिगर के खून से सींच-सींचकर परिगुंठित किया है उसे आज मनीष कुरेद कुरेदकर उगलवा लेगा।अपनी जिन्दगी पर परिचिंतन करना तो अब अशोभनीय ही नहीं, गर्हित पाप है। प्यार तो परावर्त्य करने की वस्तु नहीं है और अब तो मिलने का दूरवर्ती आशा ही नहीं है। कहाँ है ? कैसी है ? वर्ष पर वर्ष गुजरते गये। यादें भयानक रात की तरह स्याह और काली पड़ती गयी। दूरियाँ न मिलने वाली नदी-पाट की तरह चौड़ी होती गयीं। प्यार अंतस में परिगुंठित होता रहा। आवारा बादलों की तरह आँखों में उसकी छवि उभरती और बरसकर चली जाती। अपनी अचीती पराजय पर अवाक्-सा रह गया। आज तक मैं अपने को प्रस्तर प्रतिमा समझता रहा। भावना, संवेदन शून्य पाषाण। दुनिया से नाता–रिश्ता तोड़ लिया। जानी–पहचानी दुनिया से विमुख। कमरे में अकेला शान्त पड़ा रहता। मनीष को किसी कीमत पर नाराज नहीं करना चाहता था। बेमानी और बेगानी दुनिया में एक ही तो है अपना। बोझिल मन लिए उनीदीं कदमों से मनीष की ओर जा रहा था। पास पहुँचकर अपने कलेजे से चिपका लिया।

राज के आंसुओं से मनीष की कमीज गीली होती रही। राज की सुबुकियों का जब मनीष को एहसास हुआ तो चौंक पड़ा। जाने-अनजाने राज को कोई कष्ट नहीं देना चाहता था। छोड़ों इन बातों को। धरा ही क्या है इनमें ! खोखली हँसी हँसते हुए मनीष ने कहा– चलो। चाय पी लें और चाय के लिए हांक दी। दो प्याली चाय मेज पर रखकर मधुरिमा निःशब्द अन्दर चली गयी। प्याली से गरम-गरम भाप ऊपर उठकर शून्य में विलीन हो रहा था। प्याली उठाकर एक घूँट ली और मेज पर रखकर कहने लगा- यदि प्रेम कोई महान भावना है, कोई अनोखा जज्बा है तो इसको दौलत, शोहरत और हुकूमत अपने में कैद नहीं कर सकती है। प्रेम की भाषा मौन है। मुहब्बत में यकीनन खुदा बास करती है। प्रेम करना और ईश्वर से अनुराग करना एक ही काम है। प्रेम और ईश्वर एक ही नाम है। प्रेम ईश्वर– भक्ति की प्रथम सीढ़ी है। इसमें महान शक्ति अन्तर निहित है।—

अनायास ही मनीष की हथेली राज के अधर से सटाकर मुस्कुराते हुए कहा "गुरु"। प्रेम का लेक्चर सुनने नहीं बैठा हूँ। स्कूली जिन्दगी से आज तब प्रेम पर तुम्हारा दर्शन सुनते-सुनते उबकाई सी होने लगती है। राज कहने लगा——

धरती का जो रिश्ता उसकी हरियाली से है। चांद का जो रिश्ता उसके चाँदनी से है। लहरों का जो रिश्ता उसके किनारों से है। और फूल का जो रिश्ता पराग से है।वैसा ही मेरा रिश्ता चित्रलेखा से है। कोई जाकर पूछे धरती क्यों अपने कलेजे को चीरकर पौधों द्वारा जहाँ को हरियाली देने के लिए अकुलाती रहती है। लहरें किनारे से टकराने के लिए क्यों व्याकुल रहती है ?

मैं पोस्ट ग्रैजुएशन के पश्चात् एम- फिल कर रहा था। लोग कहते थे काफी मेधावी था मैं। प्रारम्भ में मुझे भी ऐसा ही लगता था। अतः लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमेशा अध्ययनरत रहता। पर लोक सेवा आयोग एवं अन्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में न आ पाने के कारण अपनी मेधावनी होने में शंका के बीज अंतस में अंकुरित होने लगे। फिर भी एम- फिल का कोर्स कठिन मेहनत एवं लगन से कर रहा था। पाठ्यक्रम एवं इससे जुड़ी पुस्तकें ही मेरी दुनिया थी।

दुनिया से अलग–थलग किताबों में खोया रहता। अनायास ही चित्रलेखा से मुलाकात हुई। नजर की गुफ्तगू ने दिल के जज्बे को बयाँ कर दिया। मुझे ऐसा लगा कि वर्षों की तफतीश के बाद यौवन की ऐसी अनुपम सुन्दरी चित्रलेखा को देखा। जवानी को मदमस्त कर देनेवाली मधुलिका का नशा उसमें व्याप्त था। समान विषय। समान पाठ्यक्रम। हम दोनों के बीच में बहुत हद तक समानता था– रूप में। गुण में। चिन्तन में।

मसलन हम दोनों एम- फिल कर रहे थे। समान विषय। समान चिंतन। सबसे बड़ी समरूपता यह था कि हम दोनों अकेले थे। बिल्कुल निरापद। जब दो अकेला मिलते हैं तो उनकी दुनिया अकेले बसने लगती है। भावनाओं के स्वप्निल दुनिया में आकाश कुसुम को तोड़कर अपनी दुनिया सजाने लगते हैं। वर्षों से अंतस दबी कोमल भावनाएँ जब एकाएक उमड़ पड़ती है तो भावनाओं का प्रवेग सारे पुराने बंधन को तोड़ कर एक नये बंधन का सृजन करने लगते हैं। सृजित नये बंधन को प्रेम-बंधन कहते है। अनन्त सीमाओं में बंधी यह आकस्मिक घटित मन की साकारात्मक, रागात्मक अनुभूति है। इस नई दुनिया में सिर्फ दो ही जानें होती हैं प्रेम बहाव में बहते

चले गये । एक दुसरे से बंधते चले गये । ऐसा महसूस हो रहा था कि दुनिया की सारी खुशियाँ, सिमटकर हम दोनों के अरमानों में कैद हो गई हो । सिमटी हुई दुनिया थी । सिमटे हुए हमलोग और अपने अरमानों के घरौंदे को धरती पर उतार लेने की प्रबल इच्छा ।

अनायास ही एक हादसा हुआ । पिताजी असमय ही काल के ग्रास हो गये । तार पाते ही दौड़ता भागता गाँव पहुँचा । लौटकर आया तो पाया कि चित्रलेखा आँखों में शबनमी दाने लिए प्रेम-कुटिया में पधारने के लिए पथरायी आँखों से मनुहार कर रही थी । मेरे अपुष्ट कंधों पर जिम्मेदारियों के बोझ थे । कदम उठा नहीं पा रहा था । क्या कहूँ ? क्या न कहूँ ? मेरे कहने से पहले प्रतीक्षा रत चित्रलेखा बिफर कर रो पड़ी और रोते स्वर में बोलने लगी – "पिताजी ने मेरे लिए एक लड़का ढँढ लिया है । प्रथम श्रेणी का अफसर है । लड़के वाले मात्र फोटो देखकर सगाई करने आ पहुँचे थे । पर किसी तरह बात आगे टल गई ।"

..... राज सारी शक्ति को कानों में संजोकर सुनता रहा वातावरण स्तब्ध और खामोश !

कुछ देर उपरान्त चित्रलेखा कही- "चलो राज । कहीं भाग चलते है । संग रहे तो दो सूखी रोटी के सहारे भी जिन्दगी अच्छी तरह कट जायेगी ।"

"....." राज स्तब्ध और खामोश खड़ा था ।

सोचता जा रहा था राज !

राज का दिमाग दो रोटियों का गणित सुलझाने में उलझा था । एक मन कहता । इस गणित को अनसुलझा छोड़ इस हिसाब को खारिज कर अपनी प्रेयसी, चित्रलेखा की बात मान लूँ और दौड़ चलूँ एक अन्धी दौड़ । अन्जाम और परिणाम को विसरा कर । मंजिल विहीन पथ पर । बेरूठ और मस्तमौला । पर दूसरे ही पल निःस्वार्थ प्रेम-भावना की अग्नि में स्वार्थ की सारी सूखी लकड़ियाँ जल कर स्वाहा होती गई, न जाने कहाँ से उसके प्रति निर्मल प्रेम-भावना उमड़ आई । यह घड़ी मेरे लिए प्रेम परीक्षा की घड़ी थी । प्रेम को आदर्श एवं सहनीय बनाने का अवसर था, कर्त्तव्य और प्रेम में एक जंग छिड़ा था ।

कर्त्तव्य को महान मान कर मैंने अपने को मार दिया । जाने क्यों मेरा मैं कहीं मर गया । मेरी आँखों के सामने सिर्फ चित्रलेखा का अलम से जर्द चेहरा था । मुझे ऐसा आभास हुआ कि प्रेम में शरीर प्राप्ति की चाहत के लिए अपनी प्राण-प्रिया चित्रलेखा का अहित करना उचित है क्या ? प्रेम को स्वार्थ की कसौटी पर नहीं तौला जा सकता है । प्रेम तो त्याग का प्रतीक है जो आत्मा को परिमार्जित करता है । पुनर्जन्म की आस आत्मा को शुद्ध करती है । स्वार्थी लोग प्रेम कर ही नहीं सकते । चित्रलेखा का अहित कर मैं क्या पाऊँगा उसे ? जिसका खुद कोई ठिकाना नहीं । जिसका अवलम्ब टूटा हो, वह दूसरे को सहारा क्या दे सकता है । स्वार्थ से ऊपर उठकर सोचा तो चित्रलेखा को खुश पाया । बेहतर पाया हर हालत में । उसकी खुशी मेरी खुशी थी । मेरा गम मेरे मन का बसेरा था । और यही गम अपना था ।

चित्रलेखा को अपने गम में समाहित करना अथवा उसपर जबरन थोपना कोई जरूरी तो नहीं । अचानक मौन को बेधती हुई चित्रलेखा की आवाज गूंजी –

राज एक बात बताओ ।

"क्या ?" राज ने कहा ।

"भुला पाओगे मुझे" चित्रलेखा पूछी ।

"नही ।" राज ने रूआँसे गलेसे कहा ।–

गीले स्वर में राज कहता जा रहा था –

मैं जीवन के दो राहे पर खड़ा हूँ । प्रेम और कर्त्तव्य के बीच मेरे अन्तःपुर में जंग छिड़ा है । रास्ता तलाश नहीं पा रहा हूँ । मेरे जीवन में एक धुन्ध सा छा गया है वेवसी के धुन्ध में रास्ता तलाश पाना मुश्किल हो रहा है । अगर मैं जिन्दगी में रास्ता का तलाश करूँगा तो मेरी हर तलाश तुम पर ही आकर खत्म होगी । यही है मजबूरी मेरी । मैं मजबूरी और बेबसी के भंवर से अपने को निकाल नहीं पा रहा हूँ । मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन केले बेर की तरह हो गया है । जिस प्रकार केले अपने पत्तों को बेर के काँटों से छिद्रित होने से नहीं बचा पाता है, उसी प्रकार मैं तुमसे, तुम्हारे बेपनाह प्यार से अपने को बचा नहीं पाऊँगा । जितना ही मैं तुम्हें भूलने का प्रयास करूँगा उतना ही तुम्हारी यादों के काँटें टीस देती रहेगी । जानता हूँ मैं टूटूगाँ अवश्य । पर जिस तरह घोड़े को उसकी लगाम जबरन पथ पर चलाती जाती है, वैसे ही शरीर का लगाम, मेरी प्राण- वल्गा इस टूटे हुए राज को जिन्दा रखेगा ।आसू कणं अनयास ही नयन-कटोरे से छलक कर कपोलों पर छिटक आये

चित्रलेखा के चेहरे पर वेदना की स्याह परछांई जो परिलक्षित हुई थी, उसे राज देख न पाया । दोनों के बीच अव्यक्त वेदना की गहरी चुप्पी व्याप्त थी । दोनों की आँखे बरस रही थी । मानो सावन का घन उन दोनों के आँखों में उतर आया हो । दोनों जानते थे कि दोनों सही थे । कुछ हद तक गलत भी ।

अचानक मनीष के झकझोरने से राज की तन्द्रा टूटी । देख पूरी कमीज आँसुओं से तर– सा लगा,दिल पर पड़ा एक बड़ा– सा जदल हटा और पुनः कहने लगा- मनीष ! अब भी सोचता हूँ तो दुःख होता है । बस इस कारण कि चित्रलेखा से अलग होने का कारण मेरी मन की कायरता थी । मेरा दब्बूपन था । समाज के प्रति खिलाफत न करने की आवाज – सम्पूर्ण रूप से मैं ही दोषी था । दोष का अहसास मुझे आज भी बैचेन किये हुए है । चित्रलेखा अब भी दोष विहीन है । दुग्ध जैसी धुली और पवित्र । प्रांजजल दिव्य मूर्ति !उसे अब भी प्यार करता हूँ । पर जाने वह क्या सोचती होगी मेरे बारे में- एक कायर जो केवल त्याग करना जानता है । जो सिर्फ प्यार का घरौंदा बना सकता है । पर मूर्त रूप देने की क्षमता नहीं । जो टूटा, पर जिन्दा रहा, महज प्राण वल्गा के कारण । बोलो मनीष महज !जीने के लिए जिया जाता है । अथवा त्याग और बलिदान के लिए भी ।

❑ **पृथ्वीराज मण्डल,**
राज भाषा सहायक

प्रेम :

कुछ कहा था इन्होंने भी

प्रेम कभी दावा नहीं करता, वह हमेशा देता है । प्रेम हमेशा कष्ट सहता है । न कभी झुंझलाता है, न बदला लेता है । — **महात्मा गाँधी**

खूब किया मैनें दुनिया से प्रेम और दुनिया ने मुझसे । तभी तो मेरी सब मुस्कुराहटें उनके होठों पर थी और उनके सब आँसू मेरी आंखो में — **खलील जिब्रान**

प्रेम के लक्षण हैं, पहले बाहरी संसार को भूल जाना, दूसरा, अपने आप को भी भूल जाना — **रामकृष्ण परमहंस**

प्यार में बुद्धिमान रहना देवताओं के लिए भी दुश्वर है — **लैबेरियस**

प्रेम सब कुछ जीत लेता है — **वर्जिल**

प्रेम में हम सब समान रुप से मूर्ख हैं — **गेटे**

रमेश नीलकमल की चार कविताएँ

मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार से पुरस्कृत भूतपूर्व रेलकर्मी कवि श्री रमेश प्रसाद 'नीलकमल' की चार कविताएँ

1

न,
यहाँ से दूर नहीं है दिल्ली
रोज बातें होती हैं लेखक मित्रों से
जैसे रह रहे हों
नेक्स्ट डोर नेवर की तरह।
न,
बेटा गाँव छोड़ दिल्ली गया नहीं है
यहीं तो है
कल शाम को बातें हुईं उससे
कहता था—
पापा ! रोज-रोज बातें करते
ऊबते नहीं आप।
न,
पत्नी दिल्ली में रहने की बात
करती नहीं याद,
कभी योजना बनी थी वहीं बस जाने की
अब तो लगता है
गाँव भी दिल्ली ही है।

लेकिन यह सच नहीं है—
विगत नवम्बर में दिल्ली गया था
बहुत दूर-दूर लगी दिल्ली
लेखक से लेखक तक की दूरी
कवि से कवि तक की दूरी
तो और भी दूर
दूर रहकर दिल्ली जितनी निकट थी
दिल्ली में रहकर
दिल्ली बहुत दूर लगी मुझे।

2

मैंने कविता लिखना बन्द कर दिया है
बकौल धूमिल
उसने मेरी पीठ ठोक दी है
और मैंने महसूसा है कि
मेरी रीढ़ की हड्डी गायब हो गई है
और मैं
हाथों और पाँवों के बल चलकर
उसका पाँव चूमने लगा हूँ।
किन्तु मेरी आँखें अब भी लाल हैं
तनाव से मुक्ति पाने के लिए
मैं शब्दों से उलझना चाहता हूँ
उलझना चाहता हूं उनके अर्थों से भी
ताकि
पीठ छूकर रीढ़ की हड्डी
गायब कर देने के जादू से
मुक्ति पा सकूँ।

3

पृथ्वी जब डूब जाएगी

यह पृथ्वी डूब रही है
अब समय नहीं है कि
चुन-चुनकर
बच्चों को/लड़कियों को
फूलों को/तितलियों को
बचाने का उपक्रम करें
आओ ! दौड़ो कि हम गली में
कंचे खेलते/नाक सुड़कते/बच्चों को
और मिट्टी की फर्श पर गोटी-गोटी
खेलती लड़कियों को/बचा लें
बचा लें उन अनसंवरे फूलों को
जो अनचाहे गलियों में/उग आते हैं
क्योंकि
पृथ्वी जब डूब जायेगी
तब हमें इन्हें लेकर ही
एक नई पृथ्वी बसानी पड़ेगी
जहाँ बच्चों-बच्चों में/न होगा कोई भेद
लड़कियाँ सब एक जैसी रहेंगी
छत पर या घाट पर या गली में
सड़क पर या विद्यालय में
सब एक ही भाषा बोलेंगी
सृष्टि की आदि-भाषा
करुणा की
संवेदना की।

4

हे भगवान !

अभी सन्नाटा है
कारखाने की सड़कों पर
सुबह के साढ़े सात बजे हैं
कारखाने का हृदय धक-धक कर रहा है
कहीं कोई उसे बेकार बैठे देख न ले

अभी कोई नहीं है नजरों के सामने
सामने है केवल जोर-जोर से
चिघाड़ती मशीनें
ठक-ठक...कट-पिट की आवाजें
लेकिन नहीं है कोई आदम स्वर फिजा में
लोग सब काम पर जुटे हैं/बिना आवाज।
बाहर जाने वाले गेट का संतरी ऊँघ रहा है
अभी चार नहीं बजा है।
बाहर चाय-पान की दूकानें सो रही हैं
कोयला धधक रहा है
चाय नहीं बन रही है।
सामने से मैनेजर आ रहा है
उसे अब तक कोई डाँटने को नहीं मिला
वह उदास है / पर वह अपने काम पर जुटा है
श्रमिक गाड़ियों से आने वाले मजदूर
श्रमिक संगठनों को चलानेवाले श्रमिक
अफसर/कर्मचारी/चपरासी/स्त्री या पुरुष
सभी काम पर लगे हैं
फुर्सत नहीं है उन्हें कि काम छोड़कर
अन्य कोई काम करें।

हे भगवान !
पता नहीं,
यह दिन कब आयेगा ?
कब आयेगा यह दिन ??

युग की मांग

□जय प्रकाश शर्मा

मनुष्य धरती को
सींचता है / संवारता है
बदले में पाता है—
अन्न / फल / फूल
जरूरत बढ़ती है
अपनी सीमा लांघती है
प्रेमिका के माँग की तरह
माँ का कलेजा माँगती है
वह
खोदता है / काटता है / पाता है—
माँ का कलेजा
यानी
सोना / चाँदी
वगैरह-वगैरह।
जरूरत रूप बदलती है
वह / ज्ञान की ऊँचाई चढ़ता है
पाता है / विज्ञान
बढ़ाता है शक्ति
जीवन की / संवरण की
और तब / जरूरत नकारा हो उठती है
उस प्रेमिका की तरह
माँ का कलेजा देख
विफरती है / कोसती है / दुत्कारती है
आज मनुष्य के विज्ञान को—
उसकी आत्मा
धिक्कारती है / चिल्लाती है / चाहती है—
शांति ! शांति !!
केवल शांति
इसलिए माँगती है
धरित्री का वही स्वरूप
जो / उसने
हमेशा के लिए
खो दिया है।

●

सहायक कार्यशाला अधीक्षक,
डीजल शॉप

तख्तियां

□ अनिल विभाकर

ये तख्तियां/ये बैनर/ये झंडे
किसी काम के नहीं रहे
इसलिए/कि हमारा बोलना और करना
सब बेमानी हो गया है।

हम क्यों नहीं सोचते
कि हमसे कहीं ज्यादा
अब तख्तियां बोलती हैं

तख्तियों पर/कुछ भी लिख दें
तख्तियां वही बोलती हैं/जो सच होता है।
हम लिखते हैं/तख्तियों पर
शांति और सद्भावना के संदेश
अहिंसा के उपदेश
मगर तख्तियां सिर्फ मुस्कुराती हैं
और इनके अर्थ उलट जाते हैं।

हम क्यों नहीं सोचते/कि ऐसा होता है
हम क्यों नहीं सोचते/कि ऐसा क्यों होता है
दरअसल/तख्तियों को हम पर
भरोसा नहीं रहा

तख्तियां न चांद बनना चाहती हैं/न सूरज
न गीता/न कुरान
वे सिर्फ इंसान बनना चाहती हैं।

●

आदिरूप

□ प्रेम रंजन अनिमेष

इतनी उदासीनता नहीं
कि चेहरे पर उगने दे काँटे
ऐसी बेपरवाही नहीं
कि बसने दे झंखाड़
"दाढ़ी बना लेता हूँ"
कहता है वह हँसकर
साबुन...ब्रश...रेजर...।
पूछता हूँ
नहीं बस
आइना
और पानी
लेता है वह
उँगलियां भिगोकर
फेरकर चेहरे पर
जेब से निकालता है
एक पत्ती
और बनाने लगता है दाढ़ी
मुँह ताकता हूँ मैं
"अपनों की बनती ऐसे ही"
कहता देखकर
आइना और पत्ती भी नहीं
कल को शायद
पानी में देखकर
अपने नाखूनों से ही बना लेगा।
किस तरह
और पहले किस आदिम मनुष्य ने
साफ निकाला होगा अपना चेहरा
जैसे आदिम अंधेरी गुफा से निकला सूर्य
इसी तरह
और कब
जब साफ की होगी
खेती के लिए पहली जमीन।

●

(पूर्व रेलवे, केन्द्रीय संस्थान में आयोजित काव्य गोष्ठी के आयोजकों से साभार)

शून्य

☐ सुषमा सिन्हा

कभी कभी सोचती हूँ
शून्य होना ही बेहतर है
—गिनती की प्रतियोगिता से दूर
न गिना जाना ही बेहतर है

बड़े छोटे के अहसास से दूर
कुछ न होना ही बेहतर है
जिन्दगी की जोड़ घटावों से दूर
तटस्थ होना ही बेहतर है
अस्तित्व रक्षा के संघर्ष से दूर
अस्तित्व विहीन होना ही बेहतर है

कभी कभी सोचती हूँ
शून्य होना ही बेहतर है

●

गजल

☐ डॉ० मधुर नज्मी

घाव दिल का हरा हो गया
दर्द का आइना हो गया।

एक मुजरिम है मुन्सिफनुमा
छोड़िए, फैसला हो गया।

जब दरख्तों में फल आ गए
पत्थरों का भला हो गया।

अर्थ के बिम्ब धुँधला गए
मौत भाषा को क्या हो गया।

आज के दौर में आदमी
एक हँसी हादसा हो गया।

सब्ज दिखता यकीनन मगर
यह तना खोखला हो गया।

●

बीती रात

☐ आशुतोष दुबे

बीती रात
हलचलें काफी रहीं
कुछ डाके पड़े
कुछ फाके हुए
कुछ घटनाएँ समाचार बनीं
कुछ रातरानी की तरह
शोर होते ही गन्धहीन हो गईं

बीती रात
हवा पर कुछ बेचैन आवाजें हावी रहीं
उन्हें ठीक-ठीक दर्ज करने के
इन्तजार में रुके रहे अखबार.

कुछ अलाव जले
खुरदरे हाथों को आँच देते हुए
ठिठुरन के खिलाफ
अपने-अपने हथियार
कुछ दिये बुझे
हवा तेज थी और धारदार—

गश्त मुस्तैद थी
पहरा मुकम्मल
पर चोर इनाम के लिये नहीं
जान बचाने के लिये भाग रहे थे
आदमखोर कुत्तों और पुलिस को
पीछे छोड़ते हुए

सुबह को जायकेदार बनाने में
खटती रही रात भर
बीती रात.

गजल

☐ अनिरुद्ध सिन्हा

साथ भी चलता नहीं मातम उठाकर क्या करें
हम अकेले भीड़ का परचम उठाकर क्या करें।

इस सियासी धुँध में कुछ भी नजर आता नहीं
लाहरों में दर्द का मरहम उठाकर क्या करें।

पांव के नीचे पड़ी है गांव की खामोशियां
हर गली हर मोड़ का आलम उठाकर क्या करें।

लोभ ऐसे भी मिले चेहरे दिखाकर छुप गए
बेबसों की आँख का मौसम उठाकर क्या करें।

बंद शीशों में सलह की बात करती है जुबां
सुन नहीं पाता जो सुनकर गम उठाकर क्या करें।

●

(पूर्व रेलवे, केन्द्रीय संस्थान में आयोजित काव्य गोष्ठी के आयोजकों से साभार)

प्यारी हिन्दी

□ निमाई सिन्हा
बंगला भाषी

कितनी सुन्दर, कितनी प्यारी,
हिन्दी हर भाषा से न्यारी।
क्यों हम अंग्रेजी अपनायें ?
गैरों को क्यों शीश नवायें ?
अपनी हिन्दी न्यारी-न्यारी,
असंख्य शब्दों की फुलवारी।
हिन्दी सीखें, हिन्दी बोलें,
हिन्दी को हर दिल में घोलें।
अपनी भाषा वैभवशाली,
सरल, सुबोध, सुरम्य निराली।
फिर क्यों कर हम बनें भिखारी,
हिन्दी हर भाषा से न्यारी।

●

भूखा बच्चा

□ रानी गुप्ता

रेलवे प्लेटफार्म पे/
अक्सर मिल जाता है
कोई न कोई—भूखा बच्चा !
सूखे होंठ/उदास दृष्टि/में होते हैं
किसी अमीर बच्चा के मुँह में
दबा हुआ केक का टुकड़ा
या कहीं कोने में पड़ी जूठन
पिघलता है आसमान/उसके बदन में
उनकी ऊँगलियों में होती है कम्पन
देख उन्हें कुत्ते भी/मजाक उड़ाते हैं
पर ये मनु पुत्र/कुत्ते से भी कहाँ लड़पाते हैं
ऐसी ऊहा-पोह में बीत जाता है सारा दिन
प्लेटफार्म के किसी कोने में/गए रात
पैर को पेट से लगाये/सो जाते हैं
इत्मीनान से ?/ये भूखे बच्चे/कि
आँखों को भरमाने को/नहीं होता है
कोई अमीर बच्चा !

●

बुझा दीप का धुआँ

□ ममता सिन्हा

चलते-चलते क्या पता
कब सांस थक जाय/रुक जाए
इसके थक कर/रुकने के पहले
जिन्दगी के जितने लम्हें/गुजारे जा सकते हैं
उन्हें यों ही मत गुजर जाने दो
शायद यूँ बेकार गुजर गए लम्हें
कभी खुद की बाबत तुमसे
कोई सवाल पूछ बैठे/और तुम
असमर्थ हो जाओ/लम्हों के सक्षम रखे
प्रश्न चिह्न को/दूर हटाने में
यूँ तो हादसों का ही नाम है—जिन्दगी
मगर—इन हादसों में भी/कई खुशनुमा मौके
जीने का संबल बन उठ खड़े होते हैं
रिक्त दिल में धड़कनों की आवाज
प्रतिध्वनित होती है/ठीक उसी तरह
जैसे खाली हॉल में/कोई आवाज
दीवारों से टकरा गूंजती चली जाती है
इस खाली दिल को यूँ ही
दम तोड़ने न दो
न सही खुशियाँ/गम ही सही
दिल के खाली दीवारों पर
गमों की कुछ तस्वीर ही टांग दो
कम से कम दिल खाली तो नहीं रहेगा
न बुझा दीप का धुँआ सालेगा।

शहीद

□ राजेन्द्र कुमार सिंह 'राजेन्द्र'

शहीद तुम प्रेरणा हो, सच्ची चेतना हो
शहीद तुम मरे नहीं, शहीद तुम गले नहीं,
शहीद तुम सपूत हो, क्रांति के अग्रदूत हो,
तुम शहीद अमर हो, शांति के सुस्वर हो ।।

हम भविष्य हैं, दो शक्तिपुंज सूर्य की,
करेंगे ऊँचा तिरंगा, मिटायेंगे कुरीतिया,
देश के लिए कदम बढ़े, न फिर रुके कदम,
देश के शहीद को शत नमन ! शत नमन ।।

लिपिक—वेतनविपत्र

●

'लोग'

□ अरविन्द कुमार सिंह

व्यतिक्रम को अपनाते लोग ।
हाँ-हाँ इस बस्ती के लोग ।।
अघट छाया मनमानी का,
निराशा भरी कहानी का ।
मगरूर ध्वजा अभिमानी का,
मत पूछो यार शैतानी का ।
घड़ियाली आँसू बहाते लोग ।
व्यर्थ व्यस्त है चौकीदार,
चोर यहाँ पर है कोतवाल ।
षड्यंत्रों का बना शिकार,
मूर्खों का जमघट चौपाल ।
फुस-फुस कर बतियाते लोग ।
शोला, नम, खुशी और गम,
अपने ही दम, लड़ाई लड़े हम ।
माँगी रहम तो मिली न रहम,
भगवान कसम, अल्लाह कसम ।
यहाँ काला धंधा गोरे लोग ।
कमजोरों को धक्का देकर,
बलवानों का मुक्का सहकर ।
बदमाशों को कक्का कहकर,
धनवानों का हुक्का भरकर ।
अपनी बात बनाते लोग ।
हाँ-हाँ इस बस्ती के लोग ।।

उ० कुशल कारीगर, फिटिंग कार्यशाला

एक अच्छी कविता

□ कलाधर

एक सुन्दर दुनिया/
एक अच्छी कविता है,
एक अच्छी कविता/
एक सुन्दर दुनिया है
इसीलिए/
एक सुन्दर दुनिया बनाने के पूर्व/
एक अच्छी कविता लिखो ।

●

एक प्रश्न

□ दीपक कुमार कौशिक

आज के विद्यार्थी
और पढ़ाई का महौल
देखता हूँ तो/विचार आते हैं
एहसास होता है/आभास होता है
समय की विडम्बना में
बार-बार यह प्रश्न करता है
मेरा अन्तःमन
कि आज के बर्तमान को/भंग करके
कितने बन पाएंगे/कल के भविष्य
सफल नहीं हो पाता हूँ/निर्णय लेने में
कि आज के विद्यार्थी ही
देश की नींव हैं/या फिर
शिक्षक एक जरिया/जो होते हैं
एक राजमिस्त्री

●

दोहा

□ राम एकबाली शर्मा

दो बातन को भूल मत यदि चाहो कल्याण ।
नारायण एक मौत को दूजे श्री भगवान ।।
सुख सपना दुःख बुदबुदा दोनों है मेहमान ।
सबका आदर कीजिए जो भेजें भगवान ।।
प्रभु कर धनु-शर देखि के, तुलसी बढ़्यो उछाह ।
टेढ़े सूधे सबन को, है हरि-हाथ निबाह ।।
मन को हारे हार है मन को जीते जीत ।
मनहि मिलावे राम को मन ही करे फजीत ।।

कार्यालय अधीक्षक
डीजल कार्यालय

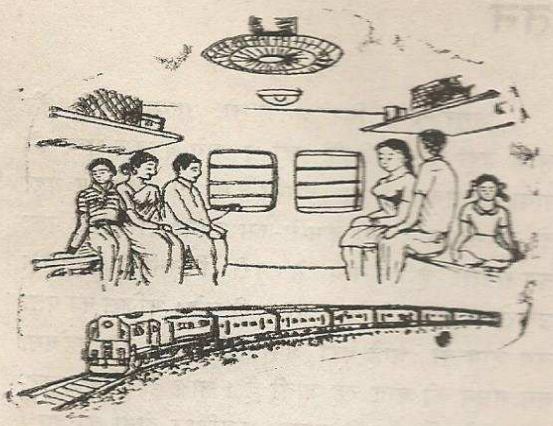

कविता

रेल

□ विजय कुमार गुप्ता

चल पड़ती है रेल
जैसे निकल पड़ते हैं कोई महात्मा
एकता, शांति व सद्भावना-मिशन पर.

गुजरती हुई गांवों, शहरों, खेतों,
बगीचों, पुलों, सुरंगों से
लौट आती है यथास्थान,
जैसे गुजरता है धागा
भिन्न फूलों-पत्तियों से होकर, और
बन जाती है एक खूबसूरत माला.

न ऊँच-नीच का भेद-भाव
न जाति-मजहब की दीवारें
पनाह देती है, पहुँचाती है मन्तव्य तक सबों को
बच्चों की तरह पोसती है
वेंडर भाइयों को
सचमुच रेल का हृदय हिन्दुस्तान होता है.

एक अनुशासित लीडर की तरह इंजन
लिये चलता है अपने साथ
उन डिब्बों-बोगियों का पकड़कर हाथ
नहीं होती जिन्हें खुद चलने की क्षमता
पर होता है जिनका एक खास अस्तित्व.

जहां से भी गुजरती है रेल
धड़कता है उस जगह का सीना
मानों वहां कुछ जीवित है, प्रवाहित है.

जब मनवानी होती है मांगें, जाने क्यूं
सबसे पहले उखाड़ी जाती है पटरियां
रोकी जाती हैं रेलें, जाने क्यूं
'अपनी संपत्ति' की लूट
समझी जाती है अपनी शान !

स्थापना (कार्मिक शाखा)
पूर्व रेलवे, जमालपुर

जमालपुर कारखाना

□ शाह मोहम्मद सिद्दीकी

यह कारखाना हकीकत में अन्नदाता है,
हमारी भूख और तृष्णा को यह मिटाता है।
है वर्तमान भी यह और भविष्य भी अपना,
हमारे सुखमयी जीवन का है यह इक सपना।
पसीना, खून, बहाते हैं इस के प्रांगण में,
श्रम के फूल खिलाते हैं इस के उपवन में।
इसे बचाना है, हर हाल में बचाना है,
बहुत किया है, बहुत और कर दिखाना है।

'आयुष्मान' भवः कर्मवीरों के मन्दिर।
रहे यह दीप-शिखा तेरी यों ही प्रज्वलित।
तेरी मशीनों की संगीत और लहरायें,
तेरी यह भट्ठियां लोहों को और पिघलायें।
जमालपुर की शोहरत बढ़े जमाने में,
कभी-कभी न हो मजदूर के खजाने में।
हे कर्मवीरों ! है तुम पर बड़ी जवाबदेही,
हो कामयाब तुम, बस 'शाह' की दुआ है यही।

पू० प्रधान सम्पादक, 'कर्मवीर'
पू० प्रगति अधीक्षक, जमालपुर

सत्य चिंतन

सत्य की खोज युगों से चली आ रही है। जाने कब उसे खोज लिया जाएगा। हालाँकि दावे तो काफी किये जा चुके हैं।

सत्य निरपेक्ष है या सापेक्ष, यह भी अपने आपमें बहस का मुद्दा है। वैसे लोगों को अजीब लगेगा इस नये मुद्दे को जानकर, क्योंकि बहुसंख्यक विद्वान आज-कल यह मानकर चलने लगे हैं कि सत्य सापेक्ष है। वहीं से बहस या खोज शुरू होती है। आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धान्त के प्रतिपादन के बाद पूरी दुनिया के मानो सारे सिद्धान्त सापेक्षिक हो गये हैं।

गरीबी शायद हर देश में सापेक्षिक पैमाने पर मापी जाती है (गरीबी रेखा ही पैमाना है न ?) पर सूरज का पूरब से उगना निरपेक्ष सत्य है। वैसे अक्षों की परिभाषा बदलकर सूरज पश्चिम से भी उदय कराया जा सकता है। पर तब केवल पश्चिम से। रोजमर्रा की जिन्दगी में जो चर स्थिर रहते हैं, उन्हें कृत्रिम तौर पर बदलकर सापेक्षता का जामा तो पहनाया जा सकता है, पर उससे सत्य का स्वरूप बदला तो नहीं जा सकता है।

तो अगर शुरू से ही चलें—सत्य को निरपेक्षता और सापेक्षता के कसौटी पर कसें तो बड़े दिलचस्प तथ्य सामने आते हैं।

अगर सत्य निरपेक्ष है तो, सत्यान्वेषियों की खोज जहाँ खत्म हुई हो, वहाँ से आगे बढ़कर सत्य को पाया जा सकता है या कम-से-कम उस दिशा में बढ़ा तो जा सकता है या कम-से-कम इतना तो जरूर पता लग सकता है कि सत्य से पूरी कितनी है। ताकि उत्तरोत्तर समय के साथ यह दूरी घटे। मंजिल का पता लग जाय तो चाहे दूरी अपार हो, वहाँ तक पहुँचना बस समय की बात रह जाती है। साथ ही हरेक उत्तर-काल पूर्ववर्ती काल से ज्यादा सत्यनिष्ठ होना चाहिए। यानी कलियुग, द्वापर से ज्यादा सत्यनिष्ठ, द्वापर त्रेता से ज्यादा, त्रेता सतयुग से ज्यादा और निष्कर्षतः तार्किक तौर पर कलियुग सतयुग से भी बहुत-बहुत ज्यादा सत्यनिष्ठ होना चाहिए। पर हकीकत यही है क्या ?

और अगर सत्य सापेक्ष है तो ? हर अन्वेषी के साथ, हर काल, हर स्थान के साथ सत्य की परिभाषा भी बदल जाएगी। फिर किसकी खोज करेंगे हम। अपना-अपना सच ! सत्य की खोज का फिर कोई एक रूप मतलब नहीं रह जाता है। एक शराबी जब तक शराब के घोर नशे में रहे तो शायद उन चन्द लम्हों के लिए वह सत्य को पा चुका होगा। अपनी-अपनी खोज फिर जारी रहेगी और खत्म भी होती रहेगी।

●

किसी का दोनों पहलुओं को देखना सच्ची मित्रता है—(सैलस्ट)

महान् कार्यों को करने की इच्छा मात्र ही रखना काफी मायने रखती है।

(प्रोपर्टीयस—II)

कभी-कभी बेवकूफ भी पते की बात कह जाते हैं—(लातिनी कहावत)

अति कुशाग्रता और कुछ नहीं बस संयम की अभिरुचि मात्र है—(बुफोन)

भविष्य के लिए कार्य-भार की योजना

(क) डीजल पी०ओ०एच० में आधुनिकीकरण सहित गुणात्मक सुधार ताकि चक्रीय पी०ओ०एच० समय में कमी- 40 कार्य दिवस से 30 कार्य दिवस हो और इस प्रकार पी०एस०यू० की माँग की पूर्ति के लिए क्षमता में वृद्धि ।

(ख) 140 टन बी० डी० क्रेन का निर्माण

(ग) मेडियम फॉस्फोरस ब्रेक ब्लॉक का निर्माण

(घ) प्रथम क्रम में टी०एम० एवं टी०जी०-12 ट्रैक्शन मोटर और 1 ट्रैक्शन जेनरेटर का पुनर्निर्माण एवं पुनर्कल्पन योजना लागत–33 करोड़ ।

(च) गोट वाल्ड 140 टन पी०डी० क्रेन का पी०ओ० एच०

(छ) कावन्स वॉयड्स 140 टन पी०डी० क्रेन का पी०ओ०एच०

महत्त्वपूर्ण कार्य

I वृहत कार्य

(क) डब्लू०डी०एस०-4बी, डब्लू०डी०एम०-2 का पी०ओ०एच० और रेलवे इंजल (6 लोको प्रति माह) तथा पब्लिक सेक्टर यूनिट इंजन (लोको प्रतिमाह) की विशेष मरम्मत ।

(ख) बॉक्स वैगन (60 प्रति माह) और आई०एस०ओ० कनटेनर फ्लैट कनबरतन (30 प्रति माह) का पुनर्निर्माण ।

(ग) 140 टन डीजल हाइड्रोलिक ब्रेक डाउन क्रेन (गोट वाल्ड) और 20 टन बी०डी० क्रेन ।

(घ) टावर कार मार्क-III और 15 टन/25 टन जमालपुर जैक (विद्युत उपरिलाइन के मरम्मत हेतु)

II निर्माण कार्य

(क) सवारी डब्बा, माल डब्बा और इंजन के लिए ब्रेक ब्लॉक

(ख) यू० आई० सी० बोगी

(ग) जेसप, आई०सी०एफ०, बी०एम०ई०एल०, ई०म०यू० के लिए व्हील सेट

(घ) डीजल लोको स्पेयरस जैसे ससपेन्शन वियरिंग, गीयर केसेस इत्यादि ।

III मरम्मत-सम्बन्धी कार्य

(क) टी० एम० मैगनेट फ्रेम

(ख) केसनब बोगी का साइड फ्रेम

(ग) बॉक्स-एन-वैगन का बोल्सटर

(घ) विभिन्न शेड/मंडल के मशीन एवं संयंत्र तथा बॉक्स स्प्रींग की मरम्मत ।

डीजल पी० ओ० एच० की प्रगति (रेलवे तथा पी० एस० यू० लोको)

क्रम संख्या	वर्ष	पी० ओ० एच०			तृवर्षीय मरम्मत			वर्षीय/द्विवर्षीय मरम्मत		कुल	कुल पी०ओ०एच० इकाई	मरम्मत के लिए दी गई कुल संख्या
		डीजल विद्युत्	डीजल हाइड्रो-लिक	कुल	डीजल विद्युत्	डीजल हाइड्रो-लिक	कुल	इंजन की संख्या	पी०ओ०एच० इकाई			
1.	1995-96	37	08	45	6=450	—	6=450	41	—	49.50	5.5	92
2.	1994-95	65	09	74	4=3	7=5.25	11=8.25	26 डी०जी०सेट	—	82.25	5.87	111+1 डी०जी०सेट
3.	1993-94	54	15	69	3=2.25	5=3.75	8=6.00	11	—	75	6.25	88
4.	1992-93	42	21	63	6=5.50	2=1.50	8=7.00	15	12.00	70+(12)	5.83+1.8	86
5.	1991-92	41	23	64	11=9.75	—	11=9.75	09	8.00	73.75+(8)	6.15+0.65	84
6.	1990-91	38	24	62	9=7.75	—	9=7.75	06	7.75	69.75(7.75)	5.85+0.6	77

पी० ओ० एच०/त्रिवर्षीय मरम्मत को छोड़कर कोई भी अतिरिक्त मरम्मत का पी० ओ० एच० क्रेडिट यूनिट वर्ष 1993-94 एवं 94-95 के दरम्यान नहीं लिया गया है।

उपर्युक्त आँकड़ा वर्ष 1995-96 (दिसम्बर '95) तक का है।

जमालपुर कारखाने की उपलब्धियों का तुलनात्मक आँकड़ा

क्र० सं०	कार्य की मदों	वर्ष 1994-95 के दौरान उपलब्धि	वर्ष 1995-96 के लिए लक्ष्य	8 महीनों के लिए समानुपाती लक्ष्य	वर्ष 1995-96 (नवम्बर '95 तक) के दौरान उपलब्धि
1.	डीजल लोको पी० ओ० एच०	66	60	40	34
2.	विशेष मरम्मत/वार्षिक (डीजल लोको)	36	48	32	38
2.1	कुल रेल डीजल इंजनों की मरम्मत	102	108	72	72
3.	पी० एस० यू० इंजन	9	12	8	07
4.	बॉक्स वैगन का पूर्ण निर्माण	595	660	440	
5.	कनटेनर फ्लैट का परिवर्तन	247	360	240	216
6.	एलीपर वैगन का परिवर्तन	10	90	60	81
7.	टावर कार का निर्माण	18	24	16	16
8.	जमालपुर जैक	84	60	40	38
9.	ब्रेक ब्लॉक का निर्माण (प्रति एक लाख की संख्या में)	9.55	1000	6.6	5.18
10.	इ०एम०यू० चक्का सेट एसेम्बली	75	144	96	99
11.	इ०एम०यू० चक्का डिस्क एसेम्बली	182	600	400	343
12.	रद्दी निष्पादन (मैट्रिक टन में)	7556	10000	6666.6	6499

वर्ग पहेली

बायें से दायें

क्रम सं०	संकेत	शब्दों की संख्या
1.	दक्षिण रेलवे मुख्यालय	(3)
(3), (10)	फिरोजाबाद के निकट हुई दुर्घटना में यही गाड़ियाँ थीं	(4), (3)
(7)	धरातल के नीचे रेल भारत में केवल यहीं चलती हैं	(4)
(8)	चर्च गेट·····का मुख्यालय है	(1, 1)
(9)	आजादी के पूर्व, पूर्व रेल इस नाम से जानी जाती थी	(1, 2, 2)
(10)	देखिए (3) एक्रॉस	(3)
(11)	विद्युत इंजन के ऊपर यह रहता है	(5)
(14)	'समझौता' कर रेल चली अमृतसर से·····को	(3)
(15)	जमालपुर का विशिष्ट वर्गीय छात्रावास	(4)
(16)	अंग्रेजों ने पटरी बिछवाई रंगून तक, जो आज इस देश में है	(5)
(18)	यहीं कारखाने में बनती है यह कार	(3)
(19)	जमालपुर में स्टील फाउंडरी में बने	(2, 4, 3,)
(20)	हावड़ा से शिमला पटरी बनी सबसे पहले·····किनारे	(2)
(21)	ब्रिटेन की रानी के नाम से इस स्टेशन का नाम	(3, 1, 1)
(24)	वातानुकूल	(1, 1)
(25)	8 फरवरी, 1862 को यहाँ स्थापित हुआ कारखाना	(5)

DOWN ऊपर से नीचे

(2), (5)	भा० रे० हम·····को·····सूत्र में बाँधे	(2), (2)
(4)	जमालपुर का ढलाई घर	(1, 2, 2)
(5)	कृपया (2) देखें	(2)
(6)	है यह बात सौ प्रतिशत सही, हमारी सबसे तेज गाड़ी है यही	(4)
(8)	डीजल कल-पुर्जा कारखाना है यहीं	(4)
(11)	कोच बनें इधर	(5)
(12)	आरक्षण काउन्टर में भीड़·····लीजिए	(4)
(13)	कश्मीर को कन्याकुमारी से मिलाये	(5)
(17)	जमालपुर वाली 140 टन क्रेन	(5)
(18)	मैट्रो रेल का आखिरी स्टेशन	(5)
(19)	भारत की पहली रेलगाड़ी इस स्टेशन से छूटी	(2, 3)
(22)	यह भी क्रेन है, ऊपर वाली	(1, 1, 1)
(23)	युद्धकाल में ये रेल चलाते हैं	(1, 1)

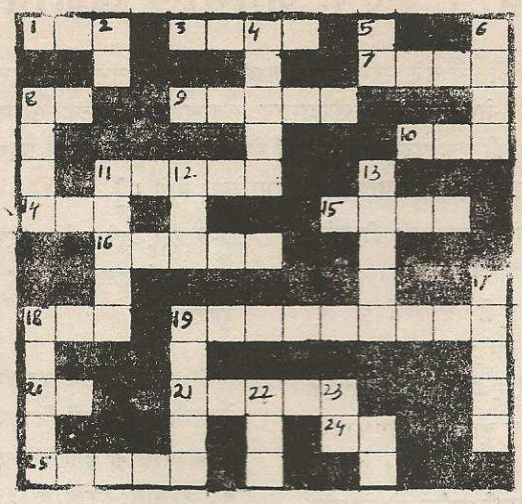

सामान्य अनुदेश—(1) प्रविष्टि राजभाषा विभाग, पू० रे० जमालपुर, मुंगेर, बिहार-811 214 को 30 जून, 1996 तक निश्चित रूप से भेज दिये जायँ। इसके बाद ये स्वीकार्य नहीं होगा।

(2) इस वर्ग पहेली में राजभाषा विभाग एवं सम्पादक मंडल के कर्मचारी एवं उनके रिश्तेदार भाग लेने के पात्र नहीं रहेंगे।

(3) एक से अधिक पुरस्कार विजेताओं के बीच पुरस्कार की राशि बराबर बाँट दी जाएगी।

(4) इस प्रतियोगिता में रेलवे कर्मचारी/इनके आश्रित (जो रेल पास नियम के अन्तर्गत आते हैं) ही भाग ले सकेंगे।

□ दीपक सप्रा
जमालपुर, जिमखाना
जमालपुर–811 214

कुछ क्षण हँस लें

"यार, तुम्हारा अहसान मैं जिन्दगी भर चुका नहीं सकता। तुमने मेरी पत्नी की जान बचा ली।" "यह तो मेरा फर्ज था, मेरे भाई। मेरा ब्लड ग्रुप मैच कर गया—शुक्र है।"

"वो तो ठीक है, पर डरता हूँ यार। बुरा न मानना, तुम तो मेरे दोस्त हो, तुमने मुझ पर अहसान किया है। पर यार, तुम तो रोज पीते हो बिना बिस्की के सो नहीं सकते। अगर सुलोचना ने, खून के असर से, वही आदत पकड़ी—तो मैं गया काम से। भाई, बुरा न मानना, बस शंका है।

□ करतार सिंह

"योग"–एक अनमोल खजाना

["कर्मवीर" पत्रिका के गत अंकों में मैंने परमपूज्य स्वामी सत्यानन्द सरस्वती परमहंस जी द्वारा बतलाए गए हठयोग की कुछ प्रमुख क्रियाओं—नेति, धौति, शंखप्रक्षालन, कपालभाति, त्राटक, भ्रामरी प्राणायाम आदि का उल्लेख किया था। इस स्तम्भ में योग की एक परम शक्तिशाली क्रिया **"नाड़ी शोधन प्राणायाम"** के बारे में परिचय कराने जा रहा हूँ। आशा है आप इसका अभ्यास कर लाभान्वित होंगे।]

शरीर को शुद्ध एवं मन को शान्त करने की दृष्टि से "नाड़ी शोधन" सर्वोत्तम प्राणायाम है। इसके अभ्यास से प्राणमय कोश की सभी रुकावटें दूर हो जाती हैं। इड़ा एवं पिंगला नाड़ियों के प्राण-प्रवाह में सन्तुलन आ जाता है। शरीर में पहुँचे अतिरिक्त ऑक्सीजन द्वारा शरीर का पोषण होता है और कार्बन-डाई-ऑक्साइड का निष्कासन हो जाता है। फलतः रक्त स्वच्छ हो जाता है और सम्पूर्ण शरीर को स्वास्थ्य लाभ मिलता है। मस्तिष्क के सभी केन्द्र अधिकतम क्षमता से कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं। उच्च-ध्यानाभ्यास के लिए "नाड़ी शोधन प्राणायाम" का अभ्यास अनिवार्य है।

विधि—वज्रासन को छोड़कर ध्यान के किसी भी अन्य आसन, जैसे—पद्मासन, सुखासन, सिद्धासन आदि में बैठिये। हाथों को घुटनों पर रख मेरुदण्ड एवं सिर को सीधा कीजिए। शरीर शिथिल एवं नेत्रों को बन्द कर कुछ देर तक अपने स्थिर शरीर तथा श्वाँस पर अपनी चेतना को ले जाइये। अब अभ्यास प्रारम्भ कीजिए।

प्रथम अवस्था—(क) बायें हाथ को घुटने पर रखते हुए दाहिने हाथ की प्रथम एवं द्वितीय अँगुलियों (तर्जनी एवं मध्यमा) को भ्रू मध्य (जहाँ टीका लगाया जाता है) पर स्थिर रखिये। अंगूठे को दाहिने नासिका छिद्र तथा तीसरी अँगुली (अनामिका) को बायें नाक के छिद्र के पास रखिये ताकि आवश्यकतानुसार नासिका छिद्र में श्वाँस को नियन्त्रित किया जा सके।

अब अंगूठे से दाहिने नासिका छिद्र को बन्द कर बायें से श्वाँस लीजिए फिर उसी से छोड़िये। इसी क्रिया को बायें नाक को बन्द कर दाहिने से कीजिए। 5-5 बार प्रत्येक से पूरक-रेचक कीजिए। श्वाँस लेना पूरक एवं छोड़ना रेचक कहलाता है। ऐसा 25 बार दुहराइये।

(ख) इसके बाद एक नाक से पूरक तो दूसरे से रेचक। पहले बायें फिर दाहिने से 5-5 बार। 15 दिनों के अभ्यास के बाद इस अवस्था को छोड़ दूसरी अवस्था का अभ्यास करना है।

द्वितीय अवस्था—बायें नाक से पूरक तो दाहिने से रेचक। फिर दाहिने से पूरक और बायें से रेचक। पूरक और रेचक की अवधि समान रहे। इस अभ्यास को भी 15 दिनों तक प्रतिदिन करना चाहिए। इसके बाद तृतीय अवस्था का अभ्यास कीजिए।

तृतीय अवस्था—(केवल अन्तरंग कुम्भक के साथ, श्वाँस को अन्दर रोकना अन्तरंग कुम्भक तथा बाहर रोकना बहिरंग कुम्भक कहलाता है।) बायें नाक

से पूरा श्वाँस लेकर अन्दर रोकिए। फिर दाहिने से छोड़िये। इसी क्रिया को दूसरे नाक से भी दुहराइये। यह एक आवृति हुई। ऐसा 25 आवृति कीजिए। पूरक, कुम्भक तथा रेचक का अनुपात 1 : 2 : 2 रहेगा। कुछ हफ्तों के अभ्यास के बाद इसे बढ़ाइये। यानी 1 : 4 : 2, 1 : 6 : 4 इत्यादि।

चतुर्थ अवस्था—(अन्तरंग एवं बहिरंग कुम्भक के साथ)

बायें नाक से पूरक। अन्दर श्वाँस रोकिए। दाहिने से रेचक। श्वाँस को बाहर रोकिए। फिर दाहिने से पूरक। अन्तरंग कुम्भक। बायें से रेचक। बहिरंग कुम्भक। यह एक आवृति हुई। 15 आवृति तक अभ्यास कीजिए। पूरक, अन्तरंग कुम्भक, रेचक एवं बहिरंग कुम्भक का अनुपात प्रारम्भ में 1 : 4 : 2 : 2 रहेगा। धीरे-धीरे रेचक और कुम्भक की अवधि उसी अनुपात में बढ़ाइये।

उदाहरणार्थ—2 : 8 : 4 : 4, 4 : 16 : 8 : 8 इत्यादि।

उच्च अभ्यासी अन्तरंग एवं बहिरंग कुम्भक के साथ जालन्धर या मूलबन्ध का भी अभ्यास कर सकते हैं।

सावधानी—हवादार स्वच्छ स्थान पर ही प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। अपनी क्षमता के अनुसार कुम्भक लगाइए और धीरे-धीरे पूर्णता प्राप्ति के बाद इसे बढ़ाइये। अभ्यास सुखपूर्वक किया जाय। किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव होते ही इसके अनुपात को घटा दिया जाय अथवा बन्द कर दिया जाय। दिल तथा फेफड़े के मरीजों को योग्य शिक्षक के मार्गदर्शन में ही इसका अभ्यास करना चाहिए।

☐ **भोला प्रसाद भगत**
(शाखा मंत्री, केन्द्रीय सचिवालय
हिन्दी परिषद्, पू० रे० जमालपुर

हिन्दी की जीत

कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष तथा गाँधीवादी नेता पट्टाभि सीतारमैया अपने भेजे गये सभी पत्रों पर हिन्दी में पता लिखते थे। दक्षिण में डाकखाने वालों को इससे परेशानी होती थी। उन्होंने कहा कि आप अंग्रेजी में पत्र लिखा करें, जिससे डाक बाँटने में परेशानी न हो। डा० सीतारमैया को यह मंजूर नहीं था, उन्होंने कहा हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है और मैं इसी का प्रयोग करूँगा। सब डाकघर वालों ने उनके लिए धमकी भरा पत्र लिखा कि आपने अंग्रेजी में पता नहीं लिखा तो उन्हें डेड लेटर भेज दिया जायेगा।

डा० सीतारमैया अपनी बात पर अड़ गये और हिन्दी पत्राचार जारी रखा। काफी दिनों के शीतयुद्ध के बाद डाकघर वालों को झुकना पड़ा। इस तरह जीत हिन्दी की हुई।

(नवभारत टाइम्स से साभार)